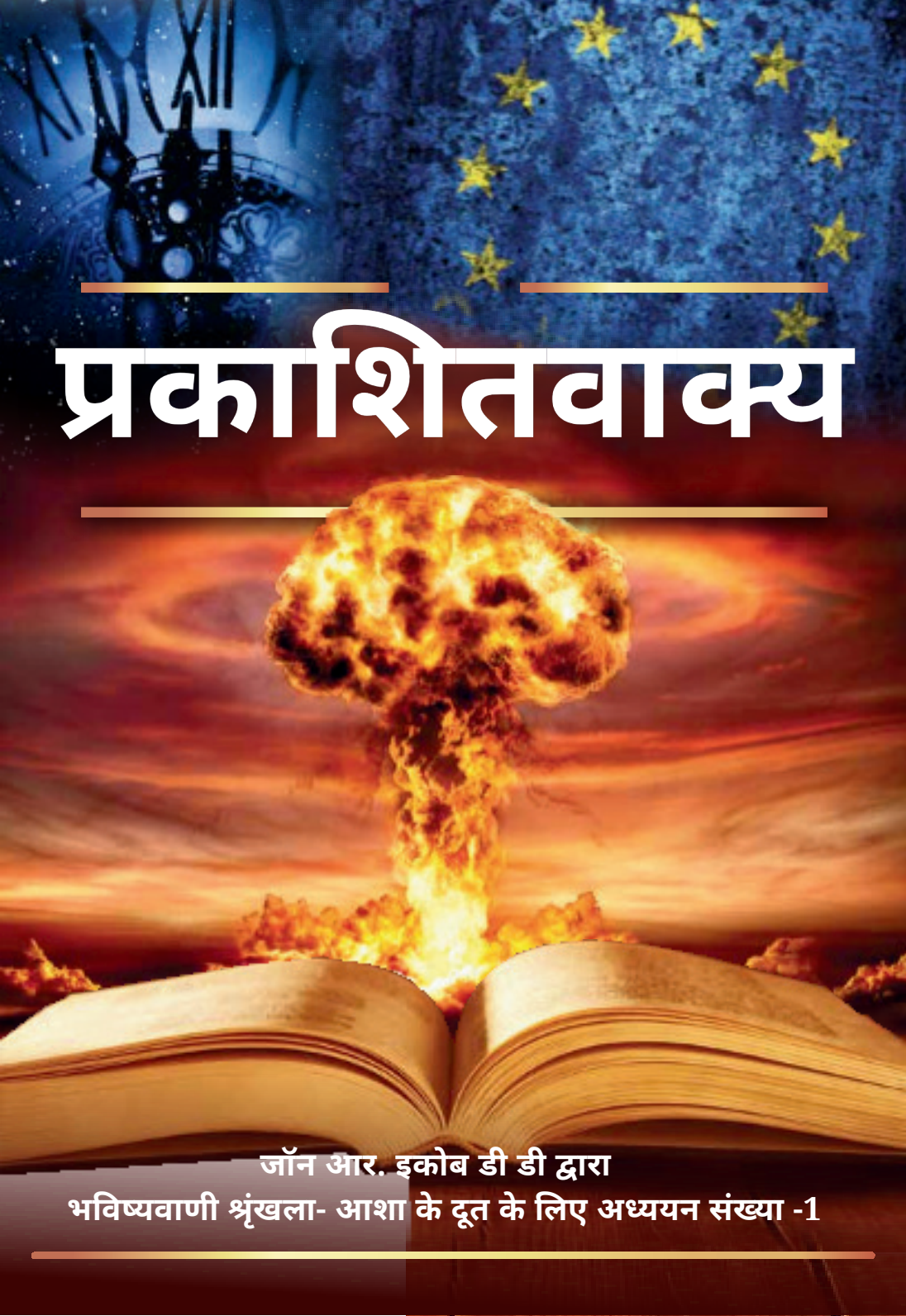

प्रकाशितवाक्य

जॉन आर. इकोब डी डी द्वारा

भविष्यवाणी श्रृंखला- आशा के दूत के लिए अध्ययन संख्या -1

पुरस्कार के लिए मसीह की बीमा सीट पर कलीसिया

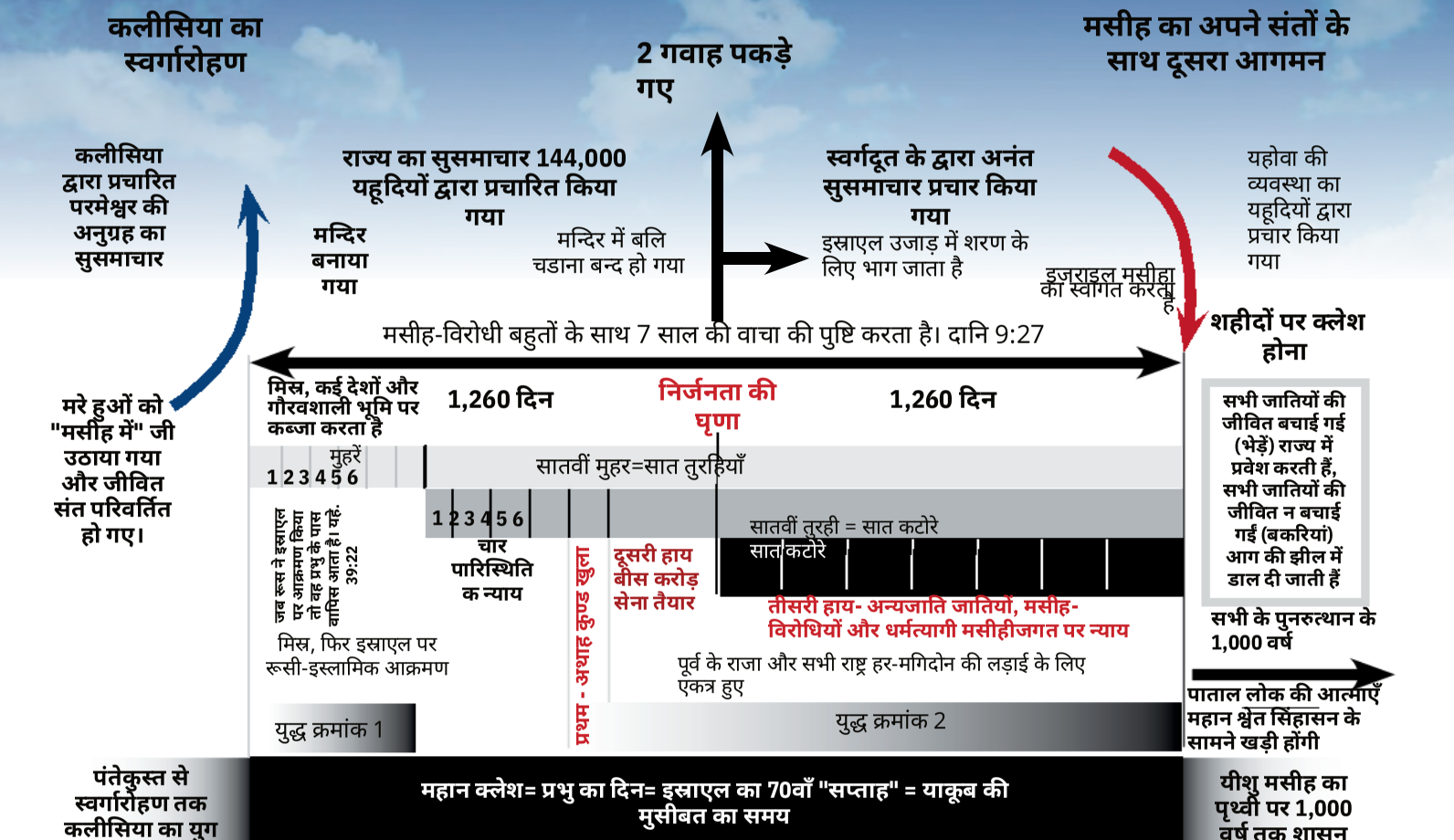

यीशु मसीह के प्रकाशितवाक्य की पुस्तक

जॉन आर. इकोब डी.डी. द्वारा लिखित

जो आशा की पुकार के सम्पादक हैं

Email: editor@heraldofhope.org.au

आशा की पुकार पत्रिका

की सम्पादकीय समिति द्वारा प्रकाशित

PO Box 4216, Marayong, NSW 2148 Australia

www.heraldofhope.org.au

Hindi Edition Published By:

The Light of Hope Mercy Home
Cheppad, Alappuzha District,
Kerala, India. 690 507
Ph:- 0479 2412459 , 9447976381
hopemsn@hopemsn.org

कलीसिया युग से अनंत काल तक

विषयसूची

प्रस्तावना.....4

प्रकाशितवाक्य और यशायाह की पुस्तकें.....6

प्रकाशितवाक्य और दानिय्येल की पुस्तकें.....7

प्रकाशितवाक्य, यहेजकेल और योएल की पुस्तकें.....9

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक का सारांश.....12

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक की कुंजी.....15

जो बातें तूने देखी हैं: 1 अध्याय.....16

मसीही जगत के सात चरण: 2 और 3 अध्याय.....17

स्वर्गारोहण - स्वर्ग में एक द्वार खुला हुआ है: 4 और 5 अध्याय 25

क्लेश का पहला अर्धभाग: 6 से 9 अध्याय.....28

पहले 1,260 दिनों के अंत के संसार की समीक्षा.....36

क्लेश के पहले अर्धभाग में होने वाली घटनाओं के लिये आवश्यक समय.....37

क्लेश का मध्य-बिंदु: 10-14 अध्याय.....39

क्लेश का दूसरा अर्धभाग: 15 से 18 अध्याय.....45

दूसरा आगमन और सहस्राब्दी राज्य: 19 और 20 अध्याय.....50

पुनरुत्थान से लेकर न्याय किये जाने तक: प्रकाशितवाक्य 20:11-15.....59

अनन्तकाल में नया आकाश और पृथ्वी: 21 और 22 अध्याय.....60

अंतिम विनती.....63

समय की घड़ी.....64

प्रस्तावना

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक पुराने और नये नियम की सब भविष्यद्वाणियों को एक साथ लाकर उन्हें कालानुक्रमिक क्रम में रखती है। यह परमेश्वर की प्रेरणा के द्वारा यूहन्ना को दिया गया अंतिम अभिलेख है जब वह एजियन सागर में पतमुस नामक टापू पर रोम का बंदी था। अंतिम भविष्यद्वक्ता यूहन्ना था और प्रकाशितवाक्य की पुस्तक परमेश्वर का अंतिम वचन है। यदि कोई इसमें कुछ जोड़ेगा, तो वह अपने ऊपर बड़ा दंड लाएगा (प्रका. 22:18-19)।

आइरेनियस (130-202 ईसवी) के अनुसार, सम्राट डोमिशियन (96 ईसवी) के शासनकाल के अंत में यूहन्ना ने प्रकाशितवाक्य की पुस्तक को लिखा था। आइरेनियस उस पॉलीकार्प का शिष्य था, जो कि प्रेरित यूहन्ना का शिष्य था, इसलिये उसकी गवाही पर भरोसा किया जा सकता है।

पिता के द्वारा यीशु मसीह का प्रकाशितवाक्य प्रभु यीशु को उसके सेवकों पर **"वे बातें**, जिनका शीघ्र (जल्दी ही) होना अवश्य है" प्रकट करने के लिये दिया गया था। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक का संदेश मुख्य रूप से मसीह के व्यक्तित्व को नहीं, बल्कि **घटनाओं** को प्रकट करना है; अर्थात् वह बातें जिनका घटित होना अवश्य है। ईश्वरत्व के भीतर वह पिता ही है जो "समयों या कालों" को निर्धारित करता है (प्रेरितों 1:7) और प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में उसने उन **घटनाओं के अनुक्रम** को प्रकट किया है जो कलीसिया के युग और उसके बाद अनंतकाल तक पृथ्वी पर घटित होंगे।

चूँकि पवित्रशास्त्र में अन्य स्थानों में भविष्यद्वाणी की गई घटनाओं को प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में शामिल किया गया है, इसलिये हमें इस बात से अवगत होने की आवश्यकता है कि **सब भविष्यद्वक्ताओं** ने अंत के समय के बारे में क्या कहा है। क्लेश के आधे रास्ते में परमेश्वर ने यूहन्ना पर अंतिम दृश्य प्रकट किए जब "परमेश्वर का वह रहस्य पूरा हो जाएगा, जिसका सुसमाचार उसने **अपने दास भविष्यद्वक्ताओं को** दिया था" (प्रका. 10:7)।

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक की व्याख्या करना आरम्भ करने से पहले हमें यह जानना होगा कि **सब भविष्यद्वक्ताओं** ने क्या कहा है। ऐसा नहीं किया तो हम बाइबल के शेष भाग के साथ टकराव में पड़ जाएँगे। पतरस हमें बताता है कि स्मरण रखने वाली सबसे पहली बात यह है कि पवित्रशास्त्र की किसी भी भविष्यद्वाणी का अध्ययन अलग से नहीं किया जा सकता है:

> "पर पहले यह जान लो कि पवित्रशास्त्र की **कोई भी भविष्यद्वाणी किसी की** अपनी ही विचारधारा के आधार पर पूर्ण नहीं होती। क्योंकि कोई भी भविष्यद्वाणी मनुष्य की इच्छा से कभी नहीं हुई पर भक्त जन पवित्र आत्मा के द्वारा उभारे जाकर परमेश्वर की ओर से बोलते थे" (2 पतरस 1:20-21)।

यदि हम यह नहीं जानते कि वे घटनाएँ कौन सी हैं तो हम अंतिम दिनों की घटनाओं को उनके कालानुक्रमिक क्रम में कैसे बैठा सकते हैं? हमारे उद्धारकर्ता के चेलों ने यही गलती की। उन्होंने केवल मसीह के दूसरे आगमन और पृथ्वी पर परमेश्वर के गौरवशाली भविष्य के राज्य की उस समय की कुछ भविष्यद्वाणियों पर ध्यान केंद्रित किया जब सब देशों का प्रमुख इस्राएल होगा, परन्तु वे उन भविष्यद्वाणियों को समझने में विफल रहे कि मसीह को पहले दुःख उठाना होगा।

"तब उसने उनसे कहा, "हे निर्बुद्धियों, और **भविष्यद्वक्ताओं की सब बातों पर** *विश्वास करने में मन्दमतियों! क्या अवश्य न था, कि मसीह ये दुःख उठाकर अपनी महिमा में प्रवेश करे?"* **तब उसने मूसा से और सब भविष्यद्वक्ताओं से आरम्भ करके** *सारे पवित्रशास्त्रों में से, अपने विषय में की बातों का अर्थ, उन्हें समझा दिया" (लूका 24:25-27)।*

बाइबल की भविष्यद्वाणियों के बहुत से प्रचारकों ये यह गलती केवल इसलिये हुए है क्योंकि उन्होंने भविष्यद्वाणी वाले पवित्रशास्त्र की व्याख्या अलग-अलग की है; उन्होंने "भविष्यद्वक्ताओं की सब बातों पर" अपने ज्ञान की कमी का प्रदर्शन किया है।

पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं को परमेश्वर की भविष्य की योजना के अवयव प्रदान किए गए थे और (दानि. 12:8 में) दानिय्येल की तरह जो उन्होंने लिखा था उसके कई पहलुओं को नहीं समझा। वे कलीसिया के उस भेद के बारे में कुछ नहीं जानते थे, "जो अन्य समयों में मनुष्यों की सन्तानों को ऐसा **नहीं बताया** गया था, जैसा कि आत्मा के द्वारा अब उसके पवित्र प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं **पर प्रगट किया** गया है" (इफि. 3:5)। इसलिये वे इस्राएल के इतिहास में पाए जाने वाले कलीसियाई-युग के अंतर को नहीं समझ पाए।

हालाँकि, 96 ई.पू. में यूहन्ना के द्वारा लिखे जाने के बाद कलीसिया प्रकट होकर वास्तविकता बन गई। इसलिये प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के 2 और 3 अध्याय में यूहन्ना इसे कालानुक्रमिक क्रम में रख पाने में सक्षम हुआ।

पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं ने जब भविष्यद्वाणी की तो जिस युग में वे जी रहे थे उन्होंने उसके संदर्भ में बात की और उनकी कई भविष्यद्वाणियाँ उनके समय से या निकट भविष्य में होने वाली घटनाओं से सम्बन्धित थीं। इस प्रकार, यशायाह के पास अश्शूरियों, शोमरोन के उत्तरी साम्राज्य और यहूदिया के आसपास के गैर-यहूदी राष्ट्रों के बारे में कहने के लिये बहुत कुछ था जहाँ वह रहता था। परन्तु यशायाह को मसीह के कष्टों, इस्राएल की अंतिम बहाली, मसीह के दूसरे आगमन और उसके राज्य की बहुत सी भविष्यद्वाणियाँ भी दी गई थीं। इसी कारण से निम्नलिखित पृष्ठों में यशायाह, दानिय्येल और यहेजकेल की संक्षेप में समीक्षा की गई है ताकि उन प्रमुख घटनाओं पर प्रकाश डाला जा सके जिनका अंतिम दिनों में घटित होना अवश्य है और जिन्हें यूहन्ना को दिए गए अंतिम दिनों की घटनाओं के अंतिम अविच्छिन्न दृश्य में अपना स्थान मिलना चाहिए।

प्रकाशितवाक्य और यशायाह की पुस्तकें

यशायाह की बहुत सी भविष्यद्वाणियाँ पूरी हो चुकी थीं और जब यूहन्ना ने प्रकाशितवाक्य की पुस्तक लिखी तो वे इतिहास बन चुकी थीं। अपनी भविष्यद्वाणी के 2 अध्याय में उसने "अन्त के दिनों" के बारे में लिखा जब यरूशलेम वैश्विक प्रचार का केंद्र बन जाएगा और राष्ट्रों के बीच वैश्विक शांति कायम होगी:

> *"अन्त के दिनों में ऐसा होगा कि... बहुत से देशों के लोग आएँगे, और आपस में कहेंगे: "आओ, हम यहोवा के पर्वत पर ... जाएँ; तब वह हमको अपने मार्ग सिखाएगा, और हम उसके पथों पर चलेंगे।" क्योंकि यहोवा की व्यवस्था सिय्योन से, और उसका वचन यरूशलेम से निकलेगा... तब एक जाति दूसरी जाति के विरुद्ध फिर तलवार न चलाएगी, न लोग भविष्य में युद्ध की विद्या सीखेंगे" (यशा. 2:2-4)।*

यशायाह ने मसीह की वापसी से पहले (24 से लेकर 26 अध्याय तक) भारी क्लेश के समय के बारे में भी लिखा था - जब इस्राएल को बहुत पीड़ा होगी, राष्ट्रों का न्याय किया जाएगा, और मसीह सिय्योन से शासन करेगा।

> *"सुनो, यहोवा पृथ्वी को निर्जन और सुनसान करने पर है... क्योंकि पृथ्वी पर देश-देश के लोगों में ऐसा होगा जैसा कि जैतून के झाड़ने के समय, या दाख तोड़ने के बाद कोई-कोई फल रह जाते हैं। इस कारण पूर्व में यहोवा की महिमा करो, और समुद्र के द्वीपों में इस्राएल के परमेश्वर यहोवा के नाम का गुणानुवाद करो... उस समय ऐसा होगा कि यहोवा ... पृथ्वी के राजाओं को पृथ्वी ही पर दण्ड देगा... तब चन्द्रमा संकुचित हो जाएगा और सूर्य लज्जित होगा; क्योंकि सेनाओं का यहोवा सिय्योन पर्वत पर ... राज्य करेगा" (यशा. 24:1-23)।*

यशायाह ने मसीह के पहले और दूसरे आगमन के बारे में लिखा। अध्याय 53 यीशु मसीह के कष्टों का गहन विवरण प्रदान करता है। अध्याय 60 से लेकर 66 तक में "सिय्योन में एक छुड़ानेवाला आएगा" (यशा. 59:20) के बाद यहूदियों की वापसी का बहुत विवरण दिया गया है और संकेत दिया गया है कि "तर्शीश के जहाज़" छुड़ाए गए राष्ट्र को देश में वापस लाने वाले सबसे पहले साधन होंगे। उसी समय, अन्यजाति राष्ट्र "तेरे (इस्राएल के) प्रकाश के लिये और राजा तेरे आरोहण के प्रताप की ओर आएँगे" (यशा. 60:3); वे इस्राएल के नगरों का फिर से निर्माण करेंगे।

यशायाह के द्वारा प्रभु के दूसरे आगमन का वर्णन कई बार किया गया है (अध्याय 24:21-23; 26:21; 59:20; 63:1 और 66:15-16)। भारी क्लेश के दौरान इस्राएल को "प्रसव-पीड़ा होगी" और वह नये जन्म का अनुभव करेगा।

> *"उसकी प्रसव-पीड़ा उठने से पहले ही उसने जन्मा दिया; उसको पीड़ाएँ होने से पहले ही उससे बेटा जन्मा। ऐसी बात किसने कभी सुनी? किसने कभी ऐसी बातें देखी? क्या देश एक ही दिन में उत्पन्न हो सकता है?* **क्या एक जाति क्षण मात्र में ही उत्पन्न हो सकती है?** *क्योंकि सिय्योन की प्रसव-पीड़ा उठी ही थीं कि उससे सन्तान उत्पन्न हो गए।" (यशा. 66:7-8)।*

प्रकाशितवाक्य और दानिय्येल की पुस्तकें

"पवित्रशास्त्र की कोई भी भविष्यद्वाणी किसी की अपने ही विचारधारा के आधार पर पूर्ण नहीं होती" (2 पत. 1:19-20)।

यूहन्ना के प्रकाशितवाक्य की पुस्तक दानिय्येल की भविष्यद्वाणियों से मेल खाती है: दानिय्येल ने "अन्यजातियों के समय" के बारे में लिखा, जो बेबीलोन साम्राज्य से आरम्भ होने के बाद फारस, यूनान और अंत में रोम आया। अंतिम **रोमी** शासक वही निंदनीय "छोटा सींग" है जो मसीह के लौट आने से पहले अंतिम साढ़े तीन काल तक ("एक समय में, डेढ़ काल") तक शासन करेगा, जो कि "परमप्रधान के पवित्र लोगों" के रूप में छुड़ाए हुए इस्राएल के द्वारा शासित अपने चिरस्थायी राज्य की स्थापना करेगा (दानि. 7:15-28)।

- दानिय्येल ने भविष्यद्वाणी की कि इस देश को छुड़ाने से पहले यहूदियों और यरूशलेम पर 490 वर्ष निर्धारित किए गए थे। यीशु मसीह का प्रथम आगमन 483 वर्षों के बाद होना था, फिर एक लंबे अंतराल के बाद, अंतिम सात वर्षों को 1,260 दिनों की दो अवधियों में विभाजित किया जाएगा। इस दूसरे 1,260 दिन (अर्थात् साढ़े तीन काल) के समय के दौरान जन्तु (अर्थात् एक **रोमी** हाकिम) शासन करेगा।
- प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के अध्याय 6 से लेकर 18 तक को कलीसिया के स्वर्गारोहण (अध्याय 4) के बाद 1,260 दिनों के दो कालों में विभाजित करते हुए यूहन्ना इसे सात वर्षों की समान अवधि के लिये समर्पित करता है और इसे "भारी क्लेश" कहता है (अध्याय 7:14) जिसके बाद मसीह शासन करने के लिये वापस आएगा। इन दोनों पुस्तकों को एक साथ पढ़ा जाना चाहिए।

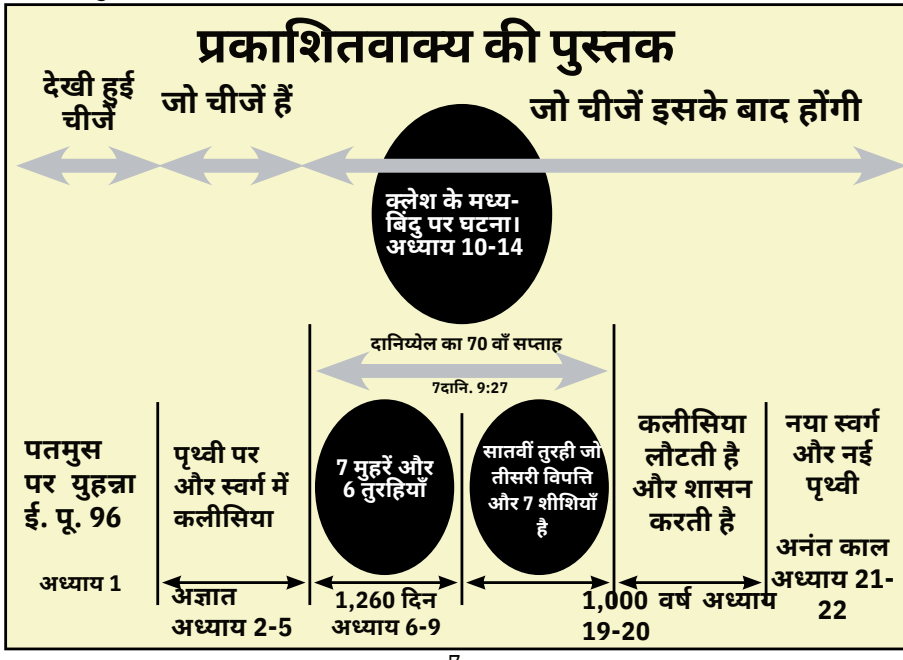

दानिय्येल की किताब

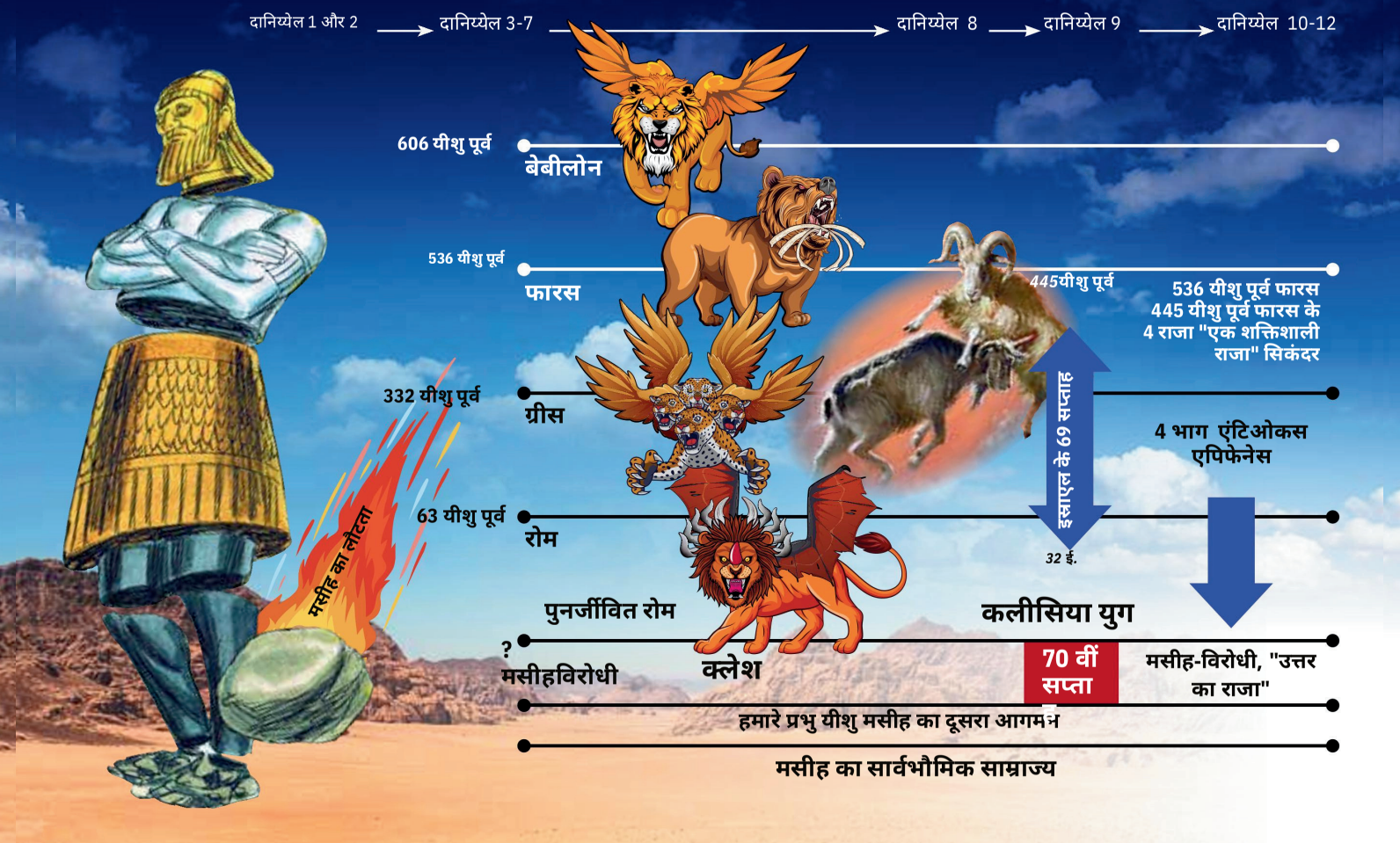
दानिय्येल 1 और 2
दानिय्येल 3-7
दानिय्येल 8
दानिय्येल 9
दानिय्येल 10-12
606 यीशु पूर्व
बेबीलोन
536 यीशु पूर्व
फारस
445यीशु पूर्व
536 यीशु पूर्व फारस
445 यीशु पूर्व फारस के
4 राजा "एक शक्तिशाली
राजा" सिकंदर
332 यीशु पूर्व
ग्रीस
4 भाग एंटिओकस
एपिफेनेस
63 यीशु पूर्व
रोम
इस्राएल के 69 सप्ताह
32 ई.
मसीह का लौटना
पुनर्जीवित रोम
कलीसिया युग
?
मसीहविरोधी
क्लेश
70 वीं
सप्ता
मसीह-विरोधी, "उत्तर
का राजा"
हमारे प्रभु यीशु मसीह का दूसरा आगमन
मसीह का सार्वभौमिक साम्राज्य

प्रकाशितवाक्य, यहेजकेल और योएल की पुस्तकें

जबकि दानिय्येल की पुस्तक "अन्यजातियों के समय" से सम्बन्धित है, तो वहीं यहेजकेल की भविष्यद्वाणी का केन्द्र-बिन्दु **इस्राएल राष्ट्र** पर है और यह 586 ईसा पूर्व में (यहेज. 9 से लेकर 11 अध्याय तक) पहले मंदिर से परमेश्वर की महिमा के प्रस्थान और दाऊद के सिंहासन को "पलट देने" का वर्णन करती है (यहेज. 21:25 से 27 अध्याय तक) जब तक कि शासन करने के लिये मसीह का आगमन नहीं होता। आखिरकार यहेजकेल परमेश्वर की महिमा को भविष्य के सहस्राब्दी मंदिर में लौटता हुआ देखता है जिसका वर्णन 40 से लेकर 43 अध्याय में किया गया है।

इससे पहले कि परमेश्वर की महिमा उस सहस्राब्दी मंदिर में लौटे, इस्राएल राष्ट्र को यीशु मसीह की अस्वीकृति पर पश्चाताप करना होगा। यहेजकेल की भविष्यद्वाणी के 34 से लेकर 39 अध्याय में इस्राएल देश और प्रभु के लिये अंतिम दिनों की बहाली का वर्णन मिलता है। इस्राएल को पश्चाताप की ओर लाने के लिये परमेश्वर मागोग (रूस), फारस (ईरान), तोगरमाह (तुर्की), लीबिया और इथियोपिया (सूडान) की भूमि से इस्राएल में एक "उत्तरी सेना" भेजेगा। इससे देश के दो-तिहाई यहूदी नष्ट हो जाएँगे **परन्तु वह देश प्रभु यीशु मसीह की खोज करते हुए उद्धार पाएगा** (जक. 13:8-9)। यिर्मयाह ने इस समय को "याकूब के संकट का समय" कहा, परन्तु वह कहता है कि "वह उससे भी छुड़ाया जाएगा" (यिर्म. 30:7)। यहेजकेल एक **वैश्विक भूकंप और ओले** (उल्कापिंड) का वर्णन करता है जो हमलावर सेनाओं को नष्ट कर देगा और यह क्लेश के पहले भाग में छठी मुहर के न्याय (प्रका. 6:12-13) के वर्णन से मेल खाता है।

योएल की पुस्तक का 2 अध्याय उस क्लेश के **पहले अर्धभाग** में इस्राएल के अंतिम दिनों के रूपांतरण को बताता है जब देश पर "उत्तरी सेना" (योएल 2:20) द्वारा आक्रमण किया जाता है, परन्तु उस क्लेश का **दूसरा अर्धभाग** हर-मगिदोन की अंतिम लड़ाई में घटित होगा जब "सभी राष्ट्र" यरूशलेम के खिलाफ आते हैं जैसा कि योएल की पुस्तक के 3 अध्याय में देखा गया है।

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक भी उस क्लेश के पहले अर्धभाग में इस्राएल के रूपांतरण को बताती है। दो यहूदी भविष्यद्वक्ताओं को **पहले 1,260 दिनों** तक यरूशलेम में भविष्यद्वाणी करनी होगी और, चूँकि वे उस क्लेश के मध्य-बिंदु पर मर जाते हैं, इसलिये मसीह में उनका रूपांतरण स्वर्गारोहण के तुरन्त बाद होना चाहिए।

1,44,000 यहूदी प्रचारक जो उस क्लेश के पहले अर्धभाग में "सारे जगत में... सब जातियों पर गवाही हो" (मत्ती 24:14) इसके लिये राज्य के सुसमाचार का प्रचार करते हैं (प्रका. 11:3), वे इस क्लेश के मध्य बिंदु पर मसीह-विरोधी के मंदिर में प्रवेश करने से **पहले** ऐसा करते हैं (मत्ती 24:15)। **सात वर्षों के आधे समय में** ये "हमारे परमेश्वर के सेवक" शहीदों का मुकुट प्राप्त करने के लिये स्वर्ग में सिंहासन के चारों ओर प्रकट होते हैं (प्रका. 14:1-5)। उन्हें भी उन सात वर्षों में बहुत पहले ही बचा लिया जाना चाहिए क्योंकि उन्हें पहली चार तुरहियों के न्याय से पहले सुरक्षा के लिये मुहरबंद कर दिया गया है (प्रका. 7:3)। इस्राएल का रूपांतरण एक सबसे उल्लेखनीय घटना इसलिये होगी क्योंकि पौलुस (रोमि. 11:25) और यिर्मयाह के संकेत के अनुसार विश्वभर का **पूरा राष्ट्र** मसीह की ओर मुड़ जाएगा; "छोटे से लेकर बड़े तक, सबके सब" (यिर्म. 31:34)। यहेजकेल उस दिन के बारे में बताते हैं:

"**उस दिन से आगे** इस्राएल का घराना **जान लेगा कि यहोवा हमारा परमेश्वर है**" (यहेज. 39:22)।

उस क्लेश के मध्य-बिंदु पर इस्राएल को उन लोगों के रूप में वर्णित किया गया है जो "परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते, और यीशु की गवाही देने पर स्थिर हैं" (प्रका. 12:17), जिसका अर्थ है कि इस्राएल को उन सात वर्षों के **मध्य-बिंदु** से पहले परिवर्तित किया जाना चाहिए, और चूँकि इस्राएल का रूपांतरण रूसी आक्रमण के समय हुआ था, इसलिये रूसी/इस्लामिक आक्रमण भी **उस क्लेश के पहले अर्धभाग में** होना चाहिए।

इसलिये रूसी/इस्लामिक आक्रमण हर-मगिदोन के उस आक्रमण से अलग है जो उन "सात **अंतिम** विपत्तियों" (प्रका. 15:1) के दौरान क्लेश के ठीक **अंत में** होता है। उदाहरण के लिये जो न्याय का छठा कटोरा है (प्रका. 16:12-16)।

इसलिये जब हम प्रकाशितवाक्य की पुस्तक पढ़ते हैं तो हमें इस्राएल देश में **दो प्रमुख** संघर्ष देखने की अपेक्षा करनी चाहिए;)

1. पहला रूसी/इस्लामिक आक्रमण ऐसा पहला आक्रमण है जो इस्राएल को पश्चाताप की ओर ले जाता है और रूस की भूमि को जला हुआ देखता है (यहेज. 39:6)। इससे इस्लाम के टुकड़े-टुकड़े हो जाएँगे; "हर एक की तलवार उसके भाई के विरुद्ध उठेगी" (यहेज. 38:21) और सात वर्षों के पहले अर्धभाग में (योएल 2:20) उनकी सेना का केवल छठवाँ हिस्सा ही बचेगा (यहेज. 39:2)।

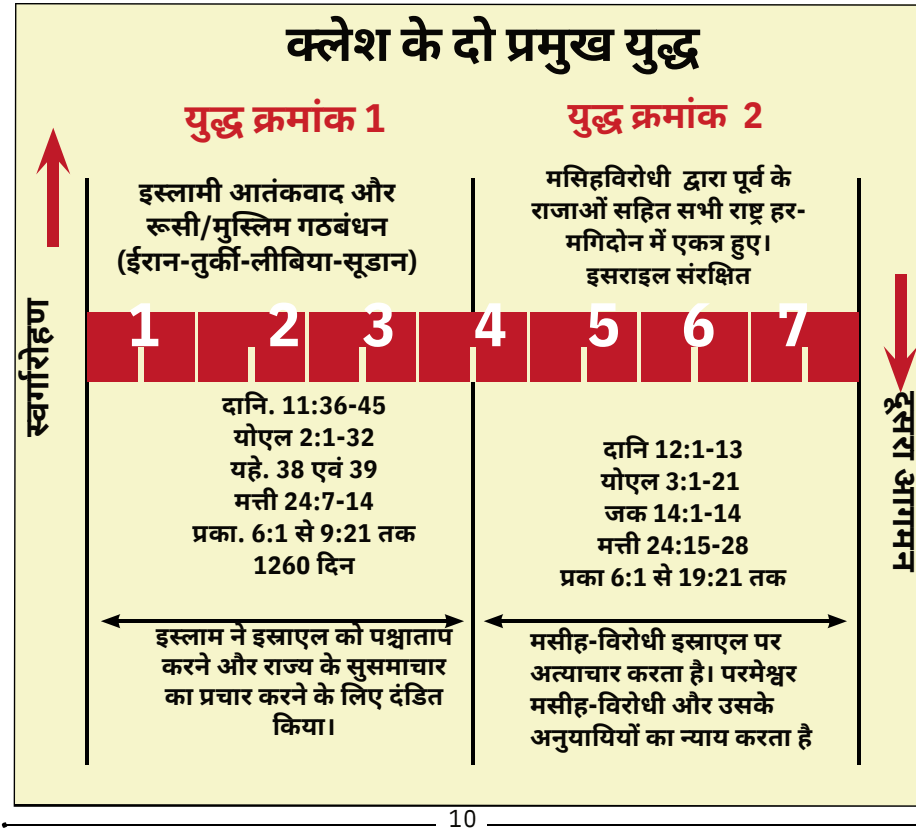

2. दूसरे युद्ध में इस्राएल के विरुद्ध **सभी राष्ट्र** इसलिये शामिल हैं क्योंकि मसीह-विरोधी परमेश्वर के लोगों को पूरी तरह से नष्ट करना चाहता है, अर्थात् वे लोग जिनकी सुरक्षा परमेश्वर करता है और जो एक शक्तिशाली राष्ट्र द्वारा समर्थित हैं जिन्हें "बड़े उकाब के दो पंख" के रूप में वर्णित किया गया है (प्रका. 12:14); जो कि संभवतः "तर्शीश और उसके जवान सिंह" *(यहेज. 38:13)* अर्थात् यू.एस.ए. और यू.के. हैं। इस संघर्ष का वर्णन योएल 3 अध्याय और दानिय्येल 12 अध्याय में किया गया है।

इसलिये उस क्लेश के पहले अर्धभाग में रूसी/इस्लामी आक्रमण छठी मुहर के न्याय के समय होना चाहिए जब **वैश्विक भूकंप हो** (यहेज. 38:20; प्रका. 6:12)। यह स्वर्गारोहण से पहले नहीं हो सकता जैसा कि कुछ लोगों ने सुझाव दिया है, अन्यथा समूचे इस्राएल को कलीसिया के एक हिस्से के रूप में स्वर्गारोहित किया जाएगा और "याकूब (इस्राएल) के संकट के समय" में इस्राएल की भविष्यद्वाणियाँ अर्थहीन होंगी (यिर्म. 30:7)।

पुराने नियम में पाया जाने वाला यूसुप, यीशु मसीह का एक 'प्रकार' है। उसके पिता ने उससे प्रेम किया, उसके भाइयों ने उसे धोखा दिया और अन्यजातियों को बेच दिया। यूसुफ को कालकोठरी में भेज दिया गया, परन्तु उसे उठाकर सिंहासन पर बैठाया गया। समूचे संसार में सात वर्षों का अकाल पड़ा और दो वर्ष के अकाल के बाद यूसुफ का उसके पश्चाताप करने वाले भाइयों, अर्थात् इस्राएल के साथ मेल करवा दिया गया।

प्रभु यीशु को उसके पिता ने प्रेम किया, उसके भाइयों ने उसे तुच्छ जानकर अस्वीकार कर दिया, उसे क्रूस पर चढ़ाया गया और कब्र में गाड़ दिया गया ताकि वह स्वर्ग के सिंहासन पर चढ़ सके।

सात वर्षों का वह क्लेश इस्राएल की संतानों को उनके संकट में मसीह की ओर मुड़ने के लिये प्रेरित करेगा, और यदि यह 'प्रकार' पर खरा उतरता है, तो सात वर्षों के उस क्लेश के **दो वर्ष बाद छठी मुहर के न्याय के समय** उनका समाधान हो जाएगा।

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक का सारांश

कुंजी: “इसलिये जो बातें तूने देखीं हैं और जो बातें हो रही हैं; और जो इसके बाद होनेवाली हैं, उन सब को लिख ले” (प्रका. 1:19)।

कलीसिया का युग

अध्याय 1

“जो बातें तूने देखीं हैं।” – पतमुस नामक टापू पर यीशु मसीह का दर्शन।

अध्याय 2 और 3

“जो बातें हो रही हैं” - सात कलीसियाओं को लिखी गई ये पत्रियाँ इस वर्तमान युग में मसीही जगत के सात चरणों की भविष्यद्वाणी करती हैं। “फिर से जन्मे” विश्वासियों को और कलीसिया के इतिहास के प्रत्येक चरण में बचे हुए लोगों को “जयवंत” कहा गया है।

स्वर्गारोहण

अध्याय 4 से लेकर 22

“जो इसके बाद होनेवाली हैं” अर्थात् इस वर्तमान कलीसियाई युग के बाद।

अध्याय 4 और 5

यूहन्ना स्वर्ग के खुले दरवाजे के माध्यम से अपने स्वयं के स्वर्गारोहण की भविष्यद्वाणी करता है। कलीसिया का स्वर्गारोहण क्लेश आरम्भ होने से पहले होता है। 24 प्राचीनों की अगुवाई में पुराने नियम के पवित्र लोग पहले से ही सिंहासन पर विराजमान हैं। कलीसिया के स्वर्ग में स्थित होने के बाद सात मुहर वाले न्याय खोले जाते हैं।

7-वर्षीय क्लेश का पहला अर्धभाग

अध्याय 6:2

इस्राएल का 70वाँ “सप्ताह” तब आरम्भ होता है जब एक रोमी प्रधान (अर्थात् मसीह विरोधी) “लाभ के लिये देश” को विभाजित करता है (दानि. 9:26-27; 11:39)। जब स्वर्गारोहण घटित होता है तो दो यहूदी व्यक्ति बचाए जाते हैं और वे 1,260 दिनों की भविष्यद्वाणी करते हैं। इसके अलावा, 1,44,000 यहूदी एकल पुरुषों के हृदय परिवर्तित हो गए हैं और सम्पूर्ण संसार में प्रचार करते हैं।

अध्याय 6:3-11

इस्लामी वैश्विक आतंक “पृथ्वी से शांति” छीन लेता है जिससे अकाल पड़ता है और एक चौथाई लोग नष्ट हो जाते हैं। क्लेश के पवित्र लोगों को सताया जाता है और कई शहीद कर दिए जाते हैं। आतंकवाद का आरम्भ हो चुका है।

अध्याय 6:12-17

इस्राएल पर रूसी/इस्लामिक आक्रमण ने देश के दो-तिहाई यहूदियों को मार डाला, परन्तु बचे हुए लोगों ने परमेश्वर की ओर रुख किया और अपने उद्धारकर्ता के रूप में मसीह पर भरोसा किया। हमलावर सेना एक वैश्विक भूकंप, ओलावृष्टि, अकाल से नष्ट हो गई है, और “हर एक की तलवार उसके भाई के विरुद्ध उठेगी” (यहेज. 38:19-20; योएल 2; दानि. 11:44)। सब देश जब इस्राएल का हृदय परिवर्तन होते देखते हैं (यहेज. 39:22-23) तो

वे प्रभु का भय मानते हैं और इस बात को पहचानते हैं कि "प्रभु का दिन" आ गया है । **मृतकों को गाड़ने में इस्राएल को सात महीने लगेंगे। उनके शत्रुओं में से केवल एक का छठवाँ हिस्सा साइबेरिया भाग जाता है; रूस (मागोग) और "अन्यजातियों के द्वीपों" को जला दिया जाएगा (यहेज. 39:6)।**

अध्याय 7

1,44,000 बचाए गए यहूदी युवकों को आने वाले प्राकृतिक न्यायों से सुरक्षा के लियेमुहरबंद कर दिया गया है और क्लेश के पहले 1,260 दिनों के लिये"राज्य का यह सुसमाचार सारे जगत में" (मत्ती 24:14) प्रचार किया गया है। कई अन्यजाति लोग उनकी गवाही पर विश्वास करते हैं और शहीद हो जाते हैं (प्रका. 7:9-17)।

अध्याय 8

चार प्राकृतिक तुरही वाले न्यायों ने समुद्र के एक तिहाई हिस्से को नष्ट कर दिया और एक **तिहाई पेड़ों** और घास को जला दिया गया, इससे पहले कि तीन संकट अथाह कुण्डसे दानवोंकी रिहाई के साथ आरम्भहोते हैं जो मसीह विरोधी का अनुसरण करने वाले लोगों को पीड़ा देते हैं (प्रका. 9:1-11)।

अध्याय 9:12-21

आसिया में 20 करोड़ हथियारबंद लोगों से जुड़े युद्ध में एक तिहाई मानवजाति नष्ट हो जाएगी।

क्लेश के मध्य की घटनाएँ

अध्याय 10

"परमेश्वर का रहस्य" सब लोगों को यह बताते हुए समाप्त हो गया है कि अंतिम संघर्ष सात वर्षों के अंतिम भाग के दौरान यीशु मसीह के विरुद्ध मसीह विरोधी (पशु) के साथ होगा। दानिय्येल **12** अध्याय में मुहरबंद किए गए न्याय अब"सात अंतिम विपत्तियों" अर्थात् सात शीशी के न्यायों में पूरी तरह से प्रकट किए जाएँगे।

अध्याय 11

उस पशु ने मंदिर पर कब्जा कर लिया और दो यहूदी भविष्यद्वक्ताओं को मार डाला, परन्तु साढ़े तीन दिनों के बाद उन्हें यरूशलेम में उठाया गया और स्वर्ग में उठा लिया गया – आने वाले राज्य की घोषणा की गई।

अध्याय 12

शैतान को स्वर्ग से पृथ्वी पर फेंक दिया गया है और अथाह कुण्ड से एक दानव ने मसीह विरोधी को अपने कब्जे में ले लिया है और उसे "पशु" बना दिया है। शैतान छुड़ाए गए इस्राएल को नष्ट करना चाहता है जो अब क्लेश के दूसरे भाग में दो पंखों वाले एक बड़े उकाब द्वारा संरक्षित हैं; जो कि सम्भवतः अमेरिका और ब्रिटेन हैं।

अध्याय 13

रोमी साम्राज्य (यूरोपीय संघ) के दस राजाओं ने उस पशु को पूरी राजनीतिक और धार्मिक शक्ति दी और लोगों को उस पशु की उपासना करने का आदेश दिया गया।

अध्याय 14

1,44,000 यहूदी पुरुष स्वर्ग में देखे जाते हैं; पृथ्वी की फसल काटी जाने वाली है और उसे परमेश्वर के प्रकोप की मदिरा के कटोरे में डाला जाने वाला है।

7 वर्ष का दूसरा भाग क्लेश

अध्याय 15

सात "अंतिम विपत्तियाँ" (7वीं तुरही = तीसरी विपत्ति = 7 शीशियाँ) की घोषणा की गई है।

अध्याय 16 से 18

रोम में धर्मत्यागी मसीही जगत को जलाने में सात शीशियों के न्याय डाले गए। छुड़ाया गया इस्राएल उस पशु की सेनाओं के विरुद्ध बड़ी जीत के साथ लड़ रहा होगा (जक. 12:1-9)।

यीशु मसीह का दूसरा आगमन

अध्याय 19

विवाह के बाद मसीह कलीसिया के साथ लौट आया (लूका 12:36); दूसरा बड़ा वैश्विक भूकंप (प्रका. 16:18); मसीह विरोधी को मार डाला गया और आग की झील में डाल दिया गया (योएल 3; जक. 14; मत्ती 24 अध्याय)।

मसीह का सहस्राब्दीराज्य स्थापित

अध्याय 20

शैतान 1,000 वर्षों से अथाह कुण्ड में बंधा हुआ है; क्लेश के शहीदों को मसीह के साथ 1,000 वर्षों तक शासन करने के लिये जिलाया गया है। शेष मृतकों को 1,000 वर्षों के अंत तक जीवित नहीं किया गया।

1,000 वर्षों के बाद शैतान को राष्ट्रों का परीक्षण करने के लिये अथाह कुण्ड से छोड़ा गया है। शैतान द्वारा बहुत से लोगों को धोखा दिया गया है और उन्होंने यरूशलेम को घेर लिया है, परन्तु इन राष्ट्रों को नष्ट करने के लिये आग स्वर्ग से नीचे आती है। शैतान को आग की झील में डाल दिया गया है, जिन मृतकों को बचाया नहीं गया, उन्हें अधोलोक में "नरकदण्ड के लिये पुनरुत्थान" में जिलाया गया है और शरीर में किए गए कार्यों के लिये बड़े श्वेत सिंहासन पर से न्याय किया गया है।

"जिस किसी का नाम जीवन की पुस्तक में लिखा हुआ न मिला, वह आग की झील में डाला गया" (प्रका. 20:15)।

नये आकाशऔर नयी पृथ्वी पर मसीह का अनन्त राज्य स्थापित हुआ

अध्याय 21 और 22

पृथ्वी जला दी जाएगी और नया यरूशलेम परमेश्वर के पास से स्वर्ग से पृथ्वी पर उतरेगा। परमेश्वर पृथ्वी पर मनुष्यों के साथ निवास करेगा। परमेश्वर और मेम्ने का सिंहासन नये यरूशलेम में होगा।

कलीसिया (मसीह की दुल्हन) नये यरूशलेम पर कब्जा कर लेगी, इस्राएल नगर के चारों ओर बस जाएगा, और सहस्राब्दी राज्यमें बचाए गए अन्यजाति लोग, नयी पृथ्वी पर कब्जा कर लेंगे। मसीह अंत में उस राज्य को पिता को सौंप देगा जो उसने अपने छुटकारे के कार्य से जीता है।

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक की कुंजी

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक बाइबल में पाई जाने वाली एकमात्र ऐसी पुस्तक है जो इसे पढ़ने, सुनने और इसका पालन करने वालों के लिये विशेष आशीष की प्रतिज्ञा करती है। इसलिये जो लोग जानबूझकर इस पुस्तक का अध्ययन करने से इनकार करते हैं, वे धोखा खा रहे हैं।

व्याख्या की विधि

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक भक्तिपूर्ण नहीं है, बल्कि यह भविष्यसूचक पुस्तक है। इसकी **शाब्दिक** व्याख्या बाइबल की किसी भी अन्य भविष्यद्वाणी पुस्तक की तरह ही की जानी चाहिए। जहाँ प्रतीकों का उपयोग किया गया है वहाँ परमेश्वर हमें उनका अर्थ प्रदान करता है। जहाँ परमेश्वर हमें प्रतीक का अर्थ नहीं बताता,वहाँ हमें उसकी शाब्दिक व्याख्या करनी होती है।

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक कालानुक्रमिक है

अध्याय 5 में प्रभु सात मुहरों से बंद एक पुस्तक को खोलता है। जैसे ही प्रत्येक मुहर खुलती है, एक न्याय प्रकट होता है। सातवीं मुहर सात तुरही वाले न्याय (प्रका. 8:1) है और सातवीं तुरही वाला न्याय सात शीशी (कटोरे) वाला न्याय है जिन्हें “सात अंतिम विपत्तियाँ” (प्रका. 15:1) कहा जाता है। यूहन्ना ने भविष्य की घटनाएँ देखीं। 34 मौकों पर यूहन्ना ने कहा “मैंने देखा” - यह दर्शाता है कि उसके पास भविष्य की घटनाओं का बिल्कुल वैसा ही विहंगम दृश्य था जैसा कि कालानुक्रमिक क्रम में घटित होगा। ये न्याय क्लेश से सम्बन्धित हैं।

समय के तीन काल

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक की व्याख्या करने की कुंजी अध्याय 1 के 19 पद में दी गई है:
इस पुस्तक में **समय के तीन काल** पाए जाते हैं:

1) जो बातें यूहन्ना ने पतमुस नामक टापू पर **देखी थीं** (1 अध्याय) – भूत **काल**।

2) जो बातें इस वर्तमान कलीसियाई युग में हैं (2 और 3 अध्याय) - वर्तमान काल।

3) जो बातें जो इस कलीसियाई युग “के बाद” घटित होंगी (4 से लेकर 22 अध्याय) - भविष्य काल। “के बाद” शब्द अध्याय 4:1 और अध्याय 9:12 में आता है।

जो बातें तूने देखी हैं - 1 अध्याय

यूहन्ना को प्रभु को देखे हुए चौंतीस वर्ष बीत चुके थे और अब उसे संसार के लिये अंतिम प्रकाशन प्राप्त होना था; अर्थात् भविष्यद्वक्ताओं ने जो कुछ भी कहा था वह उसका सारांश था। यूहन्ना ने प्रभु को रूपान्तरण के पर्वत पर उसके राज्य में आते हुए देखा था (मत्ती 16:28;17:1-5), और अब उसने उसे पुनर्जीवित, महिमामयी, मनुष्य के पुत्र के रूप में देखा जो सोने के उन सात दीवटों के बीच चल रहा था जो आसिया की सात कलीसियाओं को दर्शाते थे। प्रभु को कलीसियाओं के लिये एक संदेश दिया गया था जिसमें उसने समय के अंत में होने वाली घटनाओं के क्रम का संकेत दिया था।

सोने के वे सात दीवट आसिया की इन सात कलीसियाओं को दर्शाते थे: जो कि इफिसुस, स्मुरना, पिरगमुन, थुआतीरा, सरदीस, फिलदिलफिया और लौदीकिया हैं, परन्तु इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि उसने भविष्यद्वाणी के रूप में पिन्तेकुस्त से लेकर स्वर्गारोहण तक मसीही जगत के सात चरणों को दर्शाया है। सोने के दीवट गवाही के प्रकाश की बात करते हैं। पुराने नियम में दीवटों पर दीये हमेशा जलते रहते थे और कभी बुझते नहीं थे। वैसे ही परमेश्वर भी अपनी गवाही को कभी नष्ट नहीं होने देगा। जब एक गवाही समाप्त हो जाती है तो दूसरी आरम्भ हो जाती है। इस्राएल विफल हो गया तो उसे किनारे कर दिया गया था। वह मशाल कलीसिया को सौंप दी गई थी जो अब अलौकिक गवाही के लिये जिम्मेदार है।

प्रभु स्वयं को प्रत्येक कलीसिया के लिये उस तरीके से प्रस्तुत करता है जो उस कलीसिया की आत्मिक स्थिति के लिये उपयुक्त है, परन्तु सबसे पहले प्रभु यीशु की पहचान *"मरे हुओं में से जी उठनेवालों में पहलौठा", "पृथ्वी के राजाओं के अधिपति" के रूप में, और "अल्फा और ओमेगा, आदि और अंत" के रूप में की जाती है, वही अनन्तकाल तक रहने वाला है "जो है, और जो था, और जो आनेवाला है;* ***जो सर्वशक्तिमान*** *है" (प्रका. 1:5-8)। जब यूहन्ना ने उसे देखा तो वह "उसके पैरों पर मुर्दा सा गिर पड़ा" और प्रभु ने उस पर अपना हाथ रखकर यह कहा, "मत डर; मैं प्रथम और अन्तिम हूँ, और जीवित भी मैं हूँ, मैं मर गया था, और अब देख मैं युगानुयुग जीविता हूँ; और मृत्यु और अधोलोक की कुंजियाँ मेरे ही पास हैं।" (प्रका. 1:17-18)*

इस बात में कोई संदेह नहीं हो सकता कि यीशु मसीह कौन है: वह पूर्ण मनुष्य और पूर्ण परमेश्वर है, जो सारी महिमा के योग्य है क्योंकि वह"हम से प्रेम रखता है, और उसने अपने लहू के द्वारा हमें पापों से छुड़ाया है" (प्रका. 1:5-7) ।

इसलिये प्रकाशितवाक्य की पुस्तक का संदेश परमेश्वरत्व, अर्थात् पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा का पूर्ण अधिकार रखता है।

मसीही जगत के सात चरण - 2 और 3 अध्याय

कलीसिया के **सिद्धांतों** को स्थापित करने के लिये पौलुस ने सात कलीसियाओं को पत्रियाँ लिखीं, और यूहन्ना ने भी इसके **युगांत धर्म-विज्ञान** को स्थापित करने के लिये सात कलीसियाओं को पत्रियाँ लिखीं। यद्यपि स्वर्गारोहण के समय कलीसिया को उठा लिये जाने के बाद, 6 से लेकर 18 अध्याय में इस्राएल पृथ्वी पर प्रकट होता है, परन्तु प्रकाशितवाक्य की पुस्तक इस्राएल के लिये नहीं लिखी गई थी। क्योंकि स्वर्गारोहण के बाद कलीसिया स्वर्ग में है, इसलिये पृथ्वी पर होने वाली घटनाओं को स्वर्गीय दृष्टिकोण से देखा जाता है। प्रकाशितवाक्य के अध्याय 4:1 के बाद पृथ्वी पर कलीसिया का एक भी उल्लेख नहीं मिलता, जब तक कि कलीसिया को क्लेश के अंत में प्रभु के साथ आने वाली मसीह की दुल्हन के रूप में नहीं देखा जाता है।

कलीसियाई युग जो है वह मसीह की दुल्हन का युग है जिसमें प्रत्येक बचाई गई आत्मा की स्वर्गीय दूल्हे अर्थात् मसीह के साथ *"सगाई" (मंगनी)* हो गई है *(2 कुरि. 11:2; यूह. 3:29)*। यह विवाह स्वर्ग में सात वर्ष तक होगा, उसके बाद यीशु "विवाह से लौट आएगा" *(लूका 12:36)*।

पश्चाताप करने वाला इस्राएल, **"बुद्धिमान कुँवारियों"** के रूप में पश्चाताप करेगा, और मेम्ने के विवाह भोज में भाग लेगा। सम्पूर्ण इतिहास मेम्ने के विवाह भोज के लिये **अपनी दुल्हन के साथ** महिमा में मसीह की वापसी के भव्य समापन की ओर बढ़ रहा है। स्वर्ग यह कहते हुए हालेलूय्याह के जयकारों से गूँज उठेगा,

"आओ, हम आनन्दित और मगन हों, और उसकी स्तुति करें, क्योंकि मेम्ने का विवाह आ पहुँचा है, और उसकी दुल्हन ने अपने आपको तैयार कर लिया है। उसको शुद्ध और चमकदार महीन मलमल पहनने को दिया गया," क्योंकि उस महीन मलमल का अर्थ पवित्र लोगों के धार्मिक काम है— तब स्वर्गदूत ने मुझसे कहा, "यह लिख, कि धन्य वे हैं, जो मेम्ने के विवाह के भोज में बुलाए गए हैं" (प्रका. 19:7-9)।

ये सात पत्रियाँ आसिया के सात कलीसियाओं को लिखी गई हैं। ये कलीसियाएँ यूहन्ना के समय में तो तुर्की (आसिया) में मौजूद थीं परन्तु अब मौजूद नहीं हैं। हालाँकि, जब प्रभु अपने कलीसिया के लिये लौटता है तो उस समय पर अंतिम चार मौजूद थीं। इसलिये कलीसियाओं हेतु यह संदेश कलीसिया के इतिहास में सात चरणों की भविष्यद्वाणी है और अंतिम चार चरण स्वर्गारोहण तक जारी हैं।

परमेश्वर स्वयं को अपने चरित्र के एक विशेष पहलू में प्रकट करता है जो उनकी समस्याओं के अनुरूप है। वह प्रत्येक कलीसिया की सराहना तो करता है परन्तु फिर कमियों को उजागर करते हुए उन्हें डांटता भी है।

प्रत्येक कलीसिया में पाए जाने वाले कुछ लोगों से जिनका वर्णन "जय पाने वालों" के रूप में किया गया है एक विशेष प्रतिज्ञा की गई है। इन प्रतिज्ञाओं की प्रकृति इस बात की ओर संकेत करती है कि ये जयवंत लोग कोई आत्मिक अभिजात वर्ग नहीं है, परन्तु वे **कलीसिया के इतिहास के प्रत्येक चरण में**, पिन्तेकुस्त से लेकर कलीसिया के स्वर्गारोहण तक, **बचाए गए लोगों के अवशेष** हैं, जिसका वर्णन 4 अध्याय में किया गया है।

यीशुईजगत के सात चरण

जैसा कि सात कलीसियाओं को लिखे गए सात पत्रों में भविष्यद्वाणी की गई है (प्रका 2 और 3)

नीरो से डायोक्लेशियन तक *10* अन्यजाती द्वारा किए गए उत्पीड़न *54* ईस्वी से *305*

Luther's Moravian Azusa St Mission, ProtestRevivalLos Angeles

"यहाँ ऊपर आ जा!" (प्रका *4:1*)

कलीसिया का स्वर्गारोहण

यीशु मसीह का दूसरा आगमन

32 ईस्वी — **इफिसुस** — "वांछित" पुरधान चर्च

300 ईस्वी — **Sस्मुरना** — "लोहबान" सफ़रिंग चर्च

600 ईस्वी — **पिरगमुन** — "विवाहित" " स्टेट चर्च

1517ईस्वी — **थुआतीरा** — निरंतर बलिदान" रोमन कैथोलिक चर्च

1700ईस्वी — **सरदीस** — "कुछ बचे हुए" रिफॉर्मेशन कलीसिया

1906ईस्वी — **फ़िलाडेल्फ़िया** — "भाईचारे का प्यार" मिशनरी कलीसिया

लौदीकिया — "लोग शासन करते हैं" करिश्माई उभरता हुआ कलीसिया

7 साल क्लेश — यहोवा का दिन, याकूब की मुसीबत का समय और दानिय्येल का 70वाँ "सप्ताह"

ये कलीसियाएँ अब अस्तित्व में नहीं हैं, फिर भी यीशु ने उनसे कहा, "पर हाँ, जो तुम्हारे पास है उस को मेरे आने तक थामे रहो" (प्रका *2:25*)
इसलिए वे स्वर्गारोहण तक कलीसिया के भविष्यद्वक्ता हैं।

यरूशलेम में दाऊद के सिंहासन से यीशु मसीह का 1,000 वर्ष का शासनकाल

ध्यान दें: प्रत्येक चरण में "विजेता" मसीहीजगत में बचाए गए अवशेष हैं। उन्हें जीवन की पुस्तक से "मिटा" नहीं दिया जाएगा और उन्हें "परीक्षा के उस समय से जो पृथ्वी पर रहनेवालों के परखने के लिये सारे संसार पर आनेवाला है..." रखा जाएगा (प्रका 3:10)

यूहन्ना भी अपनी पत्रियों में "जो जय पाए" शब्द का उपयोग करता है और इसे उन लोगों पर जो "फिर से जन्मे हुए हैं" (1 यूह. 5:4-5 और प्रका. 21:7 में) लागू करता है। यद्यपि, बचाया गया प्रत्येक व्यक्ति वास्तव में सिद्ध नहीं है, फिर भी वह जय पाता है।

इफिसुस - "वांछित"

इफिसुस की कलीसिया प्रारम्भिक प्रेरिताई की कलीसिया के युग का प्रतिनिधित्व करती है और उसके जुनून और पवित्रता के लिये तथा उसने धर्म-त्यागियों का न्याय किया, इस बात के लिये उसकी सराहना की गई है । इफिसुस नाम का अर्थ "वांछित" होता है और प्रभु इस कलीसिया पर ऐसे प्रकट होता है "जो सातों तारे अपने दाहिने हाथ में लिये हुए है, और सोने की सातों दीवटों के बीच में फिरता है।"

प्रभु उनके बीच में फिर रहा था परन्तु उनका "पहला वाला प्रेम" कम हो रहा था और वह कलीसिया अपनी गवाही खोने के खतरे में थी। आरम्भिक कलीसिया "सारे जगत" तक पहुँची (कुलु. 1:6) और सुसमाचार को दूर-दूर तक ब्रिटेन तक ले गई; सम्भवतः उन्होंने तर्शीश के जहाजों पर यात्रा की होगी। "जय पाने वालों" को "परमेश्वर के स्वर्गलोक" में स्थान देने की प्रतिज्ञा की गई है जो केवल बचाए गए लोगों पर ही लागू हो सकती है।

स्मुरना - " लोबान"

मसीह को इस कलीसिया पर "जो प्रथम और अन्तिम है; जो मर गया था और अब जीवित हो गया है" के रूप में प्रकट किया गया है। यूनानी भाषा के शब्द "स्मुरना" का अर्थ "लोबान" होता है जिसका उपयोग गाड़ने में किया जाता था और यह एक पीड़ित कलीसिया का प्रतीक है। इस कलीसिया को "दस दिन तक क्लेश उठाना होगा" (प्रका. 2:10)।

पहली शताब्दी के प्रेरिताई की कलीसिया के बाद मूर्तिपूजकों के उत्पीड़न का युग आया, जिसे इतिहास में 10 सम्राटों के अंतर्गत् "10 मूर्तिपूजकों के उत्पीड़न" के रूप में जाना जाता है:

1) नीरो (ई.प.54-68)
2) डोमिशियन (ई.प.81-96)
3) ट्रोजन (ई.प.98-117)
4) मार्कस ऑरेलियस (ई.प.161-180)
5) सेवेरस (ई.प.193-211)
6) मैक्सीनियम (ई.प.235-238)
7) डेसियस (ई.प.240-251)
8) वेलेरियन (ई.प.253-260)
9) ऑरेलियन (ई.प.D270-275)
10) डायोक्लेटियन (ई.प.285-305)

इस कलीसिया को "प्राण देने तक विश्वासयोग्य" रहने और "जीवन का मुकुट" प्राप्त करने के लिये प्रोत्साहित किया जाता है (2:10)। फ़ॉक्स की शहीदों की पुस्तक में कई शहीदों की मृत्यु दर्ज है। "शहीदों का लहू ही कलीसिया का बीज है।"

"जय पाने वालों" से प्रतिज्ञा की गई है कि उनको "दूसरी मृत्यु से हानि नहीं पहुँचेगी", जो कि आग की झील है। यह प्रतिज्ञा केवल नया जन्म लेने वाले विश्वासियों पर ही लागू हो सकती है।

पिरगमुन - "विवाहित"

मसीह इस कलीसिया पर "दोधारी तलवार" के साथ प्रकट होता है। पिरगमुन का अर्थ "विवाहित" होता है और यह सम्राट कॉन्सटेंटाइन के अधीन कलीसिया का वर्णन करता है, जिसने कलीसिया और राज्य को एक अपवित्र सम्बन्ध में जोड़ दिया था। जब कॉन्स्टेंटाइन ने अन्य दावेदारों के साथ सम्राट पद के लिये चुनाव लड़ा तो उसने अपनी ढाल

पर क्रूस के चिन्ह को अपना लिया जब उसने स्वप्न में आकाश में एक क्रूस को इन शब्दों के साथ देखा कि, "इसके द्वारा विजय पाओ।" ई.प.313 में उसने मसीहियों के उत्पीड़न को समाप्त करने का आदेश जारी किया। मूर्तिपूजक मंदिर मसीही कलीसियाएँ बन गए और बड़े गिरजाघर बनाए गए। नियसिया की परिषद (ई.प.325) एरियन विधर्म का समाधान करने के लिये आयोजित की गई थी जिसने यीशु मसीह के ईश्वरत्व को चुनौती दी थी और एथेनासियस नामक एक 18 वर्षीय डीकन ने यीशु मसीह के ईश्वरत्व के पक्ष में निर्णय लिया, जबकि एरियस को निर्वासित कर दिया गया था। एक समय पर, कॉन्स्टेंटाइन ने कहा, "एथेनासियस, क्या तुम्हें एहसास नहीं है कि समूचा संसार तुम्हारे खिलाफ है?" जिस पर उसने उत्तर दिया, "तो फिर मैं समूचे संसार के खिलाफ हूँ!"

पिरगमुन के कलीसिया ने संसार के साथ मित्रता के "बिलाम के सिद्धांत" को अपनाया (2 पत. 2:15; 1 यूह. 4:4)। जब बिलाम इस्राएल को श्राप नहीं दे सका तो उसने मोआब के राजा बालाक को यह सलाह दी कि वह अपनी दासियों को भेजकर इस्राएल से व्यभिचार कराए, और इस प्रकार परमेश्वर का क्रोध इस्राएल पर आया और 24,000 लोग मारे गए (गिनती 22 से लेकर 25 अध्याय)।

इरेनायस (दूसरी शताब्दी) के अनुसार, "निकुलइयों की शिक्षा" "अनियंत्रित भोगविलास का जीवन व्यतीत करना" था। यह पादरी वर्ग के उत्तराधिकार के उदय का भी उल्लेख कर सकता है क्योंकि नाम का अर्थ है, "सामान्य जन पर जय पाना।"

पिरगमुन में "जय पाए हुओं" को "गुप्त मन्ना" और "एक नया नाम" लिखा हुआ एक "सफेद पत्थर" दिया गया है। बचाए गए लोगों का घनिष्ठ सम्बन्ध केवल प्रभु और हम ही जानते हैं। "सफेद पत्थर" किसी बंदी को दोषी ठहराए जाने का संकेत देने के लिये एक बक्से में एक सफेद पत्थर फेंकने की प्रथा का संदर्भ हो सकता है। एथेनासियस जैसे परमेश्वर के विश्वासयोग्य लोग थे जो सच्चाई के लिये दृढ़ता से खड़े थे।

थुआतीरा - "निरंतर बलिदान चढ़ाना"

थुआतीरा की कलीसिया पर प्रभु एक ऐसे व्यक्ति के रूप में प्रकट होता है जिसकी आँखें "आग की ज्वाला के समान, और जिसके पाँव उत्तम पीतल के समान हैं" और थुआतीरा की कलीसिया रोम में केंद्रित कैथोलिक कलीसिया का वर्णन ग्रेगरी महान (ई.प.590-604) से आरम्भ करती है। ग्रेगरी से पहले, राज्य ने कलीसिया पर शासन किया था, परन्तु उसके अधीन कलीसिया ने धर्मनिरपेक्ष शक्तियाँ ग्रहण करके राज्यों पर शासन किया था।

ईज़ेबेल नाम की एक दुष्ट भविष्यद्वक्तिनी ने लोगों को व्यभिचार करने और मूर्तियों के आगे बलि की हुई वस्तुएँ खाने के लिये उकसाया। थुआतीरा का अर्थ "निरंतर बलिदान चढ़ाना" होता है जो कि मास के मूर्तिपूजक बलिदान का वर्णन करता है और इज़ेबेल का व्यभिचार कैथोलिक पादरी के यौन अपराधों की पहचान करता है।

आग की ज्वाला जैसी आँखों के साथ परमेश्वर के पुत्र के रूप में प्रभु इसलिये प्रकट होता है क्योंकि ईज़ेबेल को "भारी क्लेश" में डाल दिया जाएगा और उसके बच्चों को मार डाला जाएगा। नि:संदेह यह "भेद बड़ा बेबीलोन पृथ्वी की वेश्याओं और घृणित वस्तुओं की माता" है (प्रका. 17 और 18 अध्याय)। "पशु" और उसके 10 राजा पलटेंगे और उसे आग में जला देंगे।

"जय पाए हुओं" (अर्थात् बचाए हुओं) में से बचे हुओं के लिये संदेश यह है कि मसीह उन्हें "भोर का तारा" देगा जो सूर्य से पहले उगता है। मसीह ही "भोर का चमकता हुआ तारा" (प्रका. 22:16) और "धार्मिकता का सूर्य" (मला. 4:2) है। मसीह स्वर्गारोहण के समय "भोर के तारे" और दूसरे आगमन पर "धार्मिकता के सूर्य" के रूप में प्रकट होता है।

जय पाए हुओं (अर्थात् बचाए हुओं) को "जाति-जाति के लोगों पर अधिकार" दिया जाएगा (प्रका. 2:26) और वे मसीह के साथ शासन करेंगे। रोम राजनीतिक शक्ति चाहता है परन्तु केवल बचाए गए ("जय पाए हुए") लोग ही मसीह के साथ राज्य में शासन करेंगे। कैथोलिक कलीसिया के बचे हुए लोग जो "शैतान की गहरी बातों को नहीं जानते" उन्हें "मेरे आने तक मजबूती से थामे रहना है।"

सरदीस - "कुछ बचकर निकल गए"

सरदीस का अर्थ "कुछ लोग बचकर निकल गए" होता है और यह उस धर्म-सुधार युग की भविष्यद्वाणी करता है, जिसका आरम्भ सन् 1517 में विटेनबर्ग गिरजाघर में लूथर के विरोध से हुआ था जब कुछ लोग रोम के बंधुआई से बच गए थे। इस धर्म-सुधार ने लोगों के लिये बाइबल उपलब्ध करवाई और सरदीस पर प्रभु "जिसके पास परमेश्वर की सात आत्माएँ और सात तारे हैं" के रूप में प्रकट हुई। यह धर्म-सुधार रोम से नाता तोड़ने के लिये परमेश्वर के आत्मा का एक आंदोलन था।

हालाँकि, परमेश्वर कहता है कि "मैंने तेरे किसी काम को परमेश्वर के निकट पूरा नहीं पाया।" यह धर्म-सुधार अभी भी रोम की कलीसिया के कई पहलुओं से जुड़ा हुआ है, उदाहरण के लिये नामकरण और पुष्टिकरण, एक पुरोहित लिपिक पद्धति, कलीसिया और राज्य का मिलन, धार्मिक अनुष्ठान, एक सामान्य पुनरुत्थान, और सहस्राब्दीवाद।

प्रोटेस्टेंटवाद "जीवित तो कहलाता है, पर है मरा हुआ" (प्रका. 3:1); प्रभु उस पर "चोर की तरह" आएगा और वह प्रभु की वापसी की अपेक्षा नहीं करेगी। यह धर्म-सुधार वाली कलीसिया प्रभु की वापसी की प्रतीक्षा नहीं कर रही है क्योंकि वह एक सहस्राब्दी है।

सरदीस में "जय पाए हुए" (अर्थात् बचाए हुए) लोगों का नाम जीवन की पुस्तक से नहीं काटा जाएगा। धर्म-सुधार का धर्म-विज्ञान इस बात की शिक्षा देता है कि इस संसार की स्थापना से पहले केवल चुने हुए लोगों का नाम ही जीवन की पुस्तक में लिखा गया है और उनका नाम काटा नहीं जा सकता है। सच बात तो यह है कि परमेश्वर ने जीवन की पुस्तक में सब लोगों के नाम लिखे हैं और केवल उन लोगों के नाम ही लोग काटे गए हैं जो परमेश्वर की दया को ठुकरा करते हैं। "जय पाए हुए" (अर्थात् बचाए हुए) लोग शाश्वत रूप से सुरक्षित हैं।

फिलदिलफिया - "भाईचारे का प्रेम"

मसीह फिलदिलफिया की कलीसिया पर "दाऊद की कुंजी" धारण किए हुए व्यक्ति के रूप में प्रकट होता है। वह "जिसके खोले हुए को कोई बन्द नहीं कर सकता" उसने इस कलीसिया के सामने "एक द्वार खोल रखा है, जिसे कोई बन्द नहीं कर सकता।" यह "दाऊद की कुंजी" अंत के दिनों में इस्राएल की भूमिका और दाऊद के सिंहासन से मसीह के शासन के साथ आने वाले राज्य को खोलने का सुझाव देती है। इसकी पहचान स्पष्ट रूप से मसीह के साथ होती है और यह यशायाह 22:22 का एक उद्धरण है। इस कलीसिया ने **"मेरे धीरज** के वचन को थामा है" अर्थात् यह "मसीह की **प्रतीक्षा में धीरज धरा"** का संदेश है (2 थिस्स. 3:5; याकूब 5:7-8); जो कि दूसरा आगमन है।

फिलदिलफिया का अर्थ "भाईचारे का प्रेम" होता है और यह कलीसिया के इतिहास के महान मिशनरी युग का वर्णन करता है, जो लगभग सन् 1700 में मोरावियन पुनरुद्धार के साथ आरम्भ होकर लगभग इस युग के दौरान दूसरे आगमन के संदेश को पुनर्जीवित किया गया था। काउंट ज़िनज़ेंडॉर्फ के द्वारा मोरावियन बंधुओं को उत्पीड़न से बचाया गया और अन्यजातियों के पास मिशनरियों को भेजा गया। जॉन वेस्ली एक ऐसे व्यक्ति थे जिनका हृदय परिवर्तन होने से मेथोडिस्ट

कलीसिया का आरम्भ हुआ था। जनरल बूथ ने सेल्वेशन आर्मी को आरम्भ किया और बैपटिस्ट तथा ब्रदरन फले-फूले। "विश्वास के मिशनों" ने समूचे संसार में सुसमाचार का प्रचार किया - अकेले चीन में ही हडसन टेलर के 1,500 मिशनरी थे, विलियम कैरी, सी.टी. स्टड, बर्मा का जुडसन, ओरिएंटल मिशनरी सोसाइटी, अनइवेंजेलाइज्ड फील्ड्स मिशन, इजिप्ट जनरल मिशन, वर्ल्ड-वाइड इवेंजेलाइजेशन क्रूसेड (डब्ल्यू.ई.सी.), न्यू ट्राइब्स मिशन और कई अन्य। ब्रिटिश साम्राज्य के द्वारा समूचे संसार में एक महान द्वार खोला गया। टोरंटो में डॉ. ओसवाल्ड स्मिथ के चर्च ऑफ द ओपन डोर ने 1,000 मिशनरियों की सहायता की; रॉबर्ट ले टुर्न्यू भी इसके एक सदस्य थे।

मसीह ने फिलदिलफिया में "जय पाए हुए" लोगों को "परीक्षा के **उस समय...** जो पृथ्वी पर रहनेवालों के परखने के लिये सारे संसार पर आनेवाला है" से बचाए रखने की प्रतिज्ञा की थी (प्रका. 3:10)। उन्हें भारी क्लेश के समय से सुरक्षित रखा जाएगा जो इस बात की ओर संकेत करता है कि उस क्लेश से पहले स्वर्गारोहण घटित होना है।

बचाए गए (जय पाए हुए) लोगों से यह प्रतिज्ञा भी की गई है कि उन्हें उस "नये यरूशलेम में जगह मिलेगी जो स्वर्ग से परमेश्वर के पास से नीचे उतरा है।" (प्रका. 21:9-14 देखें जहाँ मसीह की दुल्हन की पहचान नये यरूशलेम से की गई है।)

लौदीकिया - "लोग शासन करते हैं"

लौदीकिया का अर्थ "लोग शासन करते हैं," होता है और स्वर्गारोहण एवं क्लेश से पहले मसीही जगत के अंतिम चरण का वर्णन करता है। इसका आरम्भ सन् 1900 के आसपास हुआ था। इस उदारवादी कलीसिया पर जो सृष्टि किए जाने के वास्तविक सात दिनों को "आमीन, और विश्वासयोग्य, और सच्चा गवाह है, और परमेश्वर की सृष्टि का मूल कारण (शिरोमणि)" के रूप में नकारती है, प्रभु प्रकट होता है।

सन् 1900 में करिश्माई "अनन्य भाषा" आंदोलन लॉस एंजिल्स में अज़ुसा स्ट्रीट मिशन के साथ आरम्भ हुआ, जहाँ अफ्रीकी-अमेरिकी लोग विचित्र आत्मिक अनुभवों में लिप्त थे, और अतिरिक्त-बाइबल आधारित प्रकाशन प्राप्त कर रहे थे। अब यह आंदोलन मसीही जगत पर हावी है। यह भीड़ को आकर्षित करने के लिये रॉक संगीत का उपयोग करता है और उनसे करोड़ों डॉलर लूटने के लिये सम्पन्नता के सुसमाचार का उपयोग करता है। प्रभु ने कहा कि अंतिम दिनों में मसीही जगत "सम्पन्नता और **धन-सम्पदा से समृद्ध होगा** और उसे किसी वस्तु की घटी नहीं होगी।" टीवी के "सुसमाचार प्रचारक" हर वर्ष करोड़ों डॉलर लेते हैं और शानदार जीवन व्यतीत करते हैं। हिल्सॉन्ग की कलीसियाएँ करोड़ों डॉलर का समकालीन संगीत व्यवसाय है।

लौदीकिया की कलीसिया को प्रभु अपने मुँह से उगल देगा। यीशु ने चेतावनी दी कि बहुत से लोग कहेंगे, "हे प्रभु, क्या हमने तेरे नाम से भविष्यद्वाणी नहीं की," परन्तु वह उत्तर देगा, "मैंने तुमको कभी नहीं जाना" (मत्ती 7:22-23)।

अंतिम दिनों की कलीसिया से मसीह को बाहर रखा गया है, परन्तु अधर्मी लोगों का स्वागत किया गया है। परमेश्वर के वचन का विरोधाभास या खंडन किया जाता है। कई लोगों ने सामाजिक कार्यक्रमों की ओर रुख किया है और कुछ ने समलैंगिक विवाह को स्वीकार कर लिया है। हिल्सॉन्ग ने अपनी न्यूयॉर्क की कलीसिया में संगीत का नेतृत्व करने के लिये लंदन से एक समलैंगिक, जोश कैनफील्ड को आमंत्रित किया और **वह आठ वर्षों तक विभिन्न नेतृत्व भूमिकाओं में बना रहा। उसके** पूर्व के प्रसिद्ध समलैंगिक साथी भी नेतृत्व में थे। प्रतिकूल लोकप्रियता से विवश होकर, हिल्सॉन्ग अब कहता है कि वह पारम्परिक विवाह के लिये प्रतिबद्ध है, परन्तु पादरी ब्रायन ह्यूस्टन

कहते हैं कि “न केवल ऑस्ट्रेलिया में, बल्कि संसारभर में हमारी कलीसिया में बहुत से समलैंगिक लोग है।” बाइबल कहती है कि “उस कुकर्मी को अपने बीच में से निकाल दो” (1 कुरि. 5:13)। यह अंतिम दिनों की करिश्माई कलीसिया है जहाँ “भरमानेवाली आत्माएँ और दुष्टात्माओं की शिक्षाएँ” “पाखंड में झूठ” बोलती हैं (1 तीमु. 4:1-2)।
कलीसिया का युग यीशु मसीह के ढोंगी कलीसिया के दरवाजे के बाहर निकल जाने के साथ समाप्त होगा और जब ऐसा होता है तो परमेश्वर यीशु मसीह की बची हुई दुल्हन को बचाने के लिये स्वर्ग में एक द्वार खोलेगा। इस बीच में,

“इसलिये, आओ उसकी निन्दा अपने ऊपर लिये हुए छावनी के बाहर उसके पास निकल चलें” *(इब्रा. 13:13-14)*।

पहला पुनरुत्थान या

जीवन का पुनरुत्थान (यूहन्ना 5:29)

पहले फल
पुराने नियम के सभी पवित्र लोग मसीह के साथ उठे। स्वर्ग को पवित्र नगर में ले जाया गया (मत्ती 27:52-53)

बीमा सीट और मेम्ने का विवाह (2 कुरि 5:10)

फसल
कलीसिया का उत्साह (1 थिस्स 4:13-18) (1 कुरि 15: 50-54)

दूसरा आगमन
मसीह "विवाह से" आता है (लूका 12:36)

बटोरने का कार्य
क्लेश में शहीद (प्रका 11:12 और प्रका 20:4)

बटोरने का कार्य
सहस्राब्दी संत (प्रका 20:5)

नया स्वर्ग और नई पृथ्वी बचाए गए के लिए
(प्रकाशितवाक्य. 21 & 22)

व्यवस्था का युग

कलीसिया का युग (इफि 3:1-10) 7 वर्ष का क्लेश (मत्ती 24:7-28)
पृथ्वी पर यीशु मसीह का 1,000 वर्ष का शासनकाल (प्रका 20: 1-10)

1000 वर्षों तक शासन किया

महान श्वेत सिंहासन पर दमन से पुनरुत्थान (प्रका 11-25)
(प्रका 11-25)

स्वर्ग जहां पुराने नियम के संत यीशु मसीह के पुनर्जीवित होने की प्रतीक्षा कर रहे थे। (लूका 24:7-28)

विवाह भोज (प्रका 19:9)

चिरस्थायी आग की झील "गेहन्ना"

कब्र में बचाए नहीं गए मृतकों के शव महान श्वेत सिंहासन पर पुनरुत्थान की प्रतीक्षा कर रहे हैं।आग की झील "गेहन्ना" नर्क ("पाताल लोक") - पीड़ा का स्थान जहां न बचाई गई आत्माएं इंतजार करती हैं महान महान श्वेत सिंहासन पर विनाश का पुनरुत्थान। खाड़ी

स्वर्गारोहण – स्वर्ग में एक द्वार खुला हुआ है - 4 और 5 अध्याय

अध्याय 4 से इस पुस्तक का तीसरा चरण "इन बातों के बाद" आरम्भ होता है, जो कि वर्तमान कलीसियाई युग है; यूहन्ना स्वर्ग में एक द्वार खुला देखता है और आदेश के रूप में एक आवाज सुनता है, "यहाँ ऊपर आ जा, और मैं वे बातें तुझे दिखाऊँगा, जिनका इन बातों के बाद पूरा होना अवश्य है।"

क्लेश के अंत में कलीसिया के स्वर्गारोहण की तुलना प्रभु के पृथ्वी पर आने से करना दिलचस्प बात है। स्वर्गारोहण के समय मसीह की दुल्हन को लेने के लिये स्वर्ग में केवल "एक द्वार" खोला गया है, परन्तु "क्लेश के तुरन्त बाद" जब मसीह आएगा (मत्ती 24:29), तो यूहन्ना "स्वर्ग को खुला हुआ" देखता है (प्रका. 19:11) ताकि प्रभु के आगमन पर सब पवित्र लोग और स्वर्गदूत उमड़ पड़ें।

दूसरे आगमन पर, मसीह "अपने सब पवित्र लोगों के साथ" आकर (1 थिस्स. 3:13; यहूदा 1:14) पृथ्वी पर शासन करेगा। हालाँकि, स्वर्गारोहण के समय, वह उन सब लोगों के लिये हवा में आएगा जो "मसीह में" पाए जाते हैं अर्थात् जो कलीसिया हैं (1 थिस्स. 4:16), और उनके साथ स्वर्ग में लौट जाएगा।

यूहन्ना ने "तुरही के शब्द" जैसी आवाज सुनी और पौलुस ने 1 कुरि. 15:51-55 और 1 थिस्स. 4:13-18 में उसी तुरही की आवाज के बारे में बात की है। "अंतिम तुरही" एक सैन्य शब्द है। पहली शताब्दी के यहूदी इतिहासकार जोसेफुस ने लिखा है कि जब-जब रोमी सेना ने अपना डेरा बदला तो उन्होंने तीन तुरही बजाई गईं; पहली तुरही पर सामान समेटना था, दूसरी तुरही पर खंडों में बनना था और **अंतिम तुरही पर निकल जाना था**। सेनापति ने चिल्लाकर पूछा, "क्या तुम तैयार हो?" और सिपाहियों ने उत्तर दिया, "हम तैयार हैं!"

प्रभु की आवाज एक "आदेश देने वाली आवाज" (केलेयूमा) है कि "यहाँ ऊपर आ जा!" - "पलक मारते ही" "एक ले लिया जाएगा और दूसरा छोड़ दिया जाएगा" (1 कुरि. 15:52; लूका 17:34)। बचाए गए लोग उत्तर देंगे, "हम तैयार हैं!"

परमेश्वर का सिंहासन

यूहन्ना स्वर्ग के द्वार से प्रवेश करते ही "तुरन्त" सिंहासन के सामने पहुँच जाता है, जहाँ मसीह "यशब और माणिक्य" की तरह दिखाई पड़ता है – और उस सिंहासन के चारों ओर "मरकत" की तरह दया का मेघधनुष होता है। तूफानी बादलों के ऊपर से पृथ्वी की ओर देखने पर एक पूर्ण चक्र वाला मेघधनुष देखा जा सकता है। महिमामय शरीरों में आ जाने के बाद हम परमेश्वर की दया की सीमा को पूरी तरह से समझ जाएँगे।

यशब और माणिक्य महायाजक के सीनाबंद या चपरास पर लगी 12 मणियों में से अंतिम और पहले थे, जिन पर 12 गोत्रों के नाम खुदे हुए थे। यहूदा याकूब का चौथा पुत्र था और चौथी मणि मरकत थी जिस पर यहूदा का नाम लिखा हुआ था। इस प्रकार, यीशु को यहूदा के गोत्र से दाऊद के वंश के इस्राएल के राजा के रूप में सिंहासन पर देखा गया है और उसे "यहूदा के गोत्र का वह सिंह, जो दाऊद का मूल है" कहा गया है (प्रका. 5:5)।

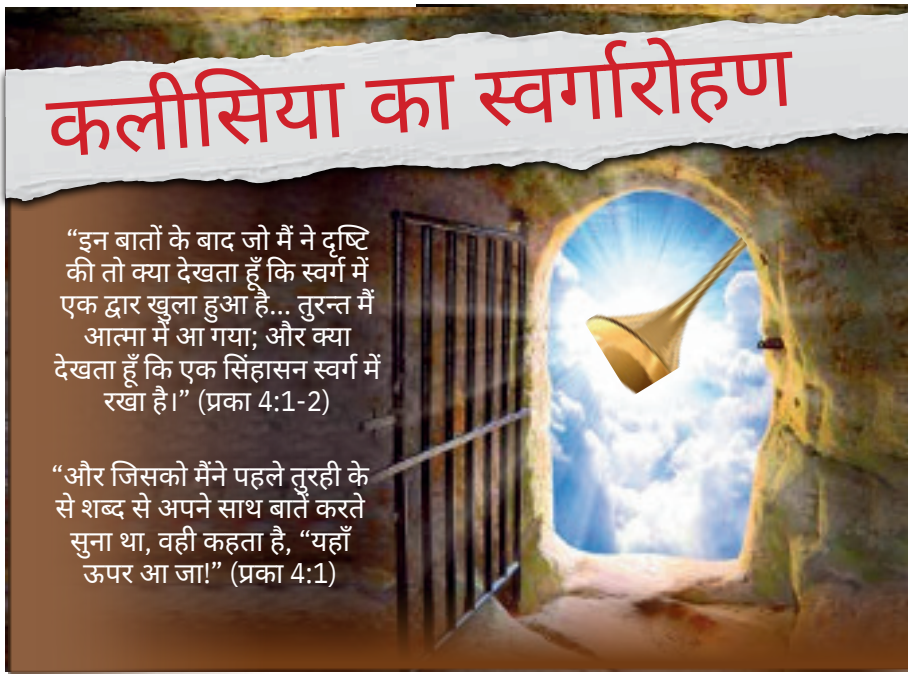

यूहन्ना ने 24 प्राचीनों को पुराने नियम के पवित्र लोगों की आराधना में अगुवाई करते देखा। इन्हें दाऊद के द्वारा मंदिर में आराधना की अगुवाई करने के लिये नियुक्त किया गया था (1 इति. 24 अध्याय)। हमें यह स्मरण रखना चाहिए कि पुराने नियम के सब पवित्र लोग मसीह के साथ **पुनर्जीवित हो गए थे** (मत्ती 27:52¬53) और अब पुनरुत्थान के माध्यम से “सिद्ध किए हुए धर्मियों (धर्मी ठहराए हुओं) की आत्माओं” के रूप में स्वर्ग में हैं (इब्रा. 12:23; इफि. 4:8-10)। स्वर्गारोहण के समय, “पहिलौठे के कलीसिया” को भी पुनरुत्थान के शरीरों में “सिद्ध बनाया” जाएगा; कलीसियाई युग के पवित्र लोगों की आत्माएँ मसीह के साथ हवा में आएँगी और “जो मसीह में मरे हैं, वे पहले जी उठेंगे” (1 थिस्स. 4:14,16)।

पुराने नियम के पवित्र लोगों की आराधना की अगुवाई दाऊद के द्वारा (1 इति. 24 अध्याय) नियुक्त इस्राएल के 24 प्राचीनों के द्वारा की जाती है । प्रभु यीशु को इस रूप में देखा गया है:

i) इस्राएल का राजा - “यहूदा के गोत्र का सिंह”

ii) परमेश्वर का अवतार - “दाऊद का मूल” (यशा. 11:10), और

iii) “वध किया हुआ मेम्ना” केवल उसे ही न्याय करने का अधिकार है (यूह. 5:22,27)।

कलीसिया मसीह की दुल्हन है और मसीह दूल्हा है (यूह. 3:29)। स्वर्गारोहण के बाद यह विवाह स्वर्ग में होगा। यह एक शाही विवाह होगा। उसी समय में पृथ्वी पर सात वर्ष तक क्लेश बना रहेगा। स्वर्ग में मसीह के न्याय आसन (बीमा) से कलीसिया को पुरस्कार प्राप्त होंगे और उस क्लेश के अंत में जब राजाओं के राजा के रूप में मसीह पृथ्वी पर लौटेगा,

तो पृथ्वी पर "मेम्ने के विवाह के भोज" के लिये दुल्हन उसके साथ आएगी (प्रका. 19:7-9)। यह विवाह प्रभु के पृथ्वी पर लौटने से पहले होना चाहिए क्योंकि जब वह आएगा तो वह "विवाह से **लौटेगा" (लूका 12:36)**। इस्राएल को उस क्लेश के पहले अर्धभाग में बचा लिया गया होगा और वह विवाह भोज में मेहमान होगा। यहूदी, अन्यजाति और कलीसिया का भेद कभी समाप्त नहीं होगा। नये आकाश और पृथ्वी में भी, यहूदी, अन्यजाति और कलीसिया का भेद जारी रहेगा (प्रका. 21:9-14; प्रका. 21:12; प्रका. 21:24-26)।

क्लेश से पहले स्वर्गारोहण

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक पृथ्वी पर क्लेश आरम्भ होने से पहले कलीसिया के स्वर्गारोहण को दर्शाती है। 1 थिस्स 4:13-18 में उस स्वर्गारोहण के तुरन्त बाद का वर्णन किया गया है। वहाँ हम पढ़ते हैं:
"हे भाइयों, इसका प्रयोजन नहीं, कि समयों और कालों के विषय में तुम्हारे पास कुछ लिखा जाए। क्योंकि तुम आप ठीक जानते हो कि जैसा रात को चोर आता है, वैसा ही प्रभु का दिन आनेवाला है। जब लोग कहते होंगे, "कुशल हैं, और कुछ भय नहीं," तो उन पर एकाएक विनाश आ पड़ेगा, जिस प्रकार गर्भवती पर पीड़ा; और वे किसी रीति से न बचेंगे" (1 थिस्स. 5:1-3)।

प्रभु का दिन (क्लेश) अचानक आ पड़ेगा; जैसे मनुष्य शांति की बात कर रहे होंगे, विनाश आ पड़ेगा, परन्तु पौलुस विश्वासियों को आश्वासन देता है कि

"हे भाइयों, तुम तो अंधकार में नहीं हो, कि वह दिन तुम पर चोर के समान आ पड़े... क्योंकि परमेश्वर ने हमें क्रोध के लिये नहीं, परन्तु इसलिये ठहराया कि हम अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा उद्धार प्राप्त करें। वह हमारे लिये इस कारण मरा, कि हम चाहे जागते हों, चाहे सोते हों, सब मिलकर उसी के साथ जीएँ" (1 थिस्स. 5:4-9)।

थिस्सलुनीकियों को पहले ही बचाया जा चुका था और पौलुस जिस उद्धार का उल्लेख करता है वह "शरीर की मुक्ति" अर्थात् स्वर्गारोहण के समय पुनरुत्थान है। परमेश्वर ने हमें क्लेश के प्रकोप से पहले छुटकारा पाने के लिये नियुक्त किया है। इसी तरह की एक प्रतिज्ञा फिलदिलफिया की कलीसिया से की गई है:

"तूने मेरे धीरज के वचन को थामा है, इसलिये मैं भी तुझे परीक्षा के उस समय बचा रखूँगा, जो पृथ्वी पर रहनेवालों के परखने के लिये सारे संसार पर आनेवाला है" (प्रका. 3:10)।

"युग के अंत" (क्लेश) का संकेत इस्राएल को दिया गया है:

"मैं तुम से कहता हूँ, उस रात दो मनुष्य एक खाट पर होंगे, एक ले लिया जाएगा, और दूसरा छोड़ दिया जाएगा। दो स्त्रियाँ एक साथ चक्की पीसती होंगी, एक ले ली जाएगी, और दूसरी छोड़ दी जाएगी। [दो जन खेत में होंगे, एक ले लिया जाएगा और दूसरा छोड़ा जाएगा]" (लूका 17:34-36)

यह लोगों का विश्व स्तर पर गायब होना है। "ले लिया जाएगा" शब्द परलंबन (पारलाम्बानो) है जिसका अर्थ "किसी को ले लेना" होता है और "छोड़ दिया जाएगा" शब्द अजिहमी (अजिह्मी) है जिसका अर्थ है, "दूर करना" होता है। इसका अर्थ यह नहीं हो सकता कि "न्याय में ले लिया जाएगा" और "राज्य में प्रवेश करने के लिये छोड़ दिया जाएगा", जैसा कि कुछ लोगों ने सुझाव दिया है।

क्लेश का पहला अर्धभाग - 6 से 9 अध्याय

इस कलीसियाई युग में मसीह को अस्वीकार करने के कारण इस्राएल को परमेश्वर ने अंधा कर दिया है, जैसी यशायाह ने भविष्यद्वाणी की थी (यशा. 6:9-12) और जैसी प्रभु ने पुष्टि की थी (मत्ती 13:10-15; यूह. 12:37-41)। पौलुस ने यह भी लिखा था कि:

*"और आज तक जब कभी मूसा की पुस्तक पढ़ी जाती है, **तो उनके हृदय पर परदा पड़ा रहता है**। परन्तु जब कभी उनका हृदय **प्रभु की ओर फिरेगा**, तब वह परदा उठ जाएगा" (2 कुरि. 3:15-16)।*

पौलुस ने इस बात का संकेत दिया था कि प्राकृतिक जैतून की शाखा के रूप में, इस्राएल को जैतून के पेड़ से तोड़कर, एक जंगली जैतून की शाखा, अर्थात् अन्यजातियों को उनके स्थान पर उस समय तक के लिये लगाया गया है **जब तक कि** "अन्यजातियाँ पूरी रीति से प्रवेश न कर लें" और उसके बाद "सारा इस्राएल उद्धार पाए..." (रोमियों 11:15-27)।

याकूब (इस्राएल) के संकट का समय

कलीसिया के स्वर्गारोहणके बाद क्लेश आएगाऔर यिर्मयाह ने इस बात की ओर संकेत किया कि "प्रभु का दिन" (क्लेश) "याकूब (इस्राएल) के संकट का समय" होगा (यिर्म. 30:7); वह आगे कहता है कि "परन्तु वह उससे भी छुड़ाया जाएगा" योएल और यहेजकेल दोनों ने अंतिम दिनों में इस्राएल पर "उत्तरी" रूसी/इस्लामिक आक्रमण का वर्णन किया है, जिसका उपयोग परमेश्वर इस राष्ट्र को पश्चाताप करवाने के लिये करता है (योएल 2 अध्याय और यहेज. 38,39 अध्याय)।

यह क्लेश इस्राएल का "70वाँ सप्ताह" है (दानि. 9:27)

परमेश्वर ने दानिय्येल को बताया कि यरूशलेम और यहूदियों पर 70 सात वर्ष (490 भविष्यसूचक वर्ष) निर्धारित किए गए थे जब तक कि राज्य में यह देश आशीषितनहीं हो जाता (दानि. 9:24-27)।

यह 490 वर्षकी अवधि अर्तक्षत्र (445 ईसापूर्व) के 20वें वर्ष के नीसान महीने में आरम्भहुई (नहे. 1 और 2 अध्याय) और भविष्यद्वाणी के 483 वर्षों के बाद जक. 9:9 की पूर्ति में राजकुमार मसीह ने अपने आप को खजूर वाले रविवार के दिन उस देश के सामने उनके राजा के रूप में प्रस्तुत किया। लूका19:33-38 को देखें।

*"हे सिय्योन बहुत ही मगन हो। हे यरूशलेम जयजयकार कर! क्योंकि **तेरा राजा तेरे पास आएगा**; वह धर्मी और उद्धार पाया हुआ है, वह दीन है, और गदहे पर वरन् गदही के बच्चे पर चढ़ा हुआ आएगा।"*

मसीह के स्वयं को राजा के रूप में प्रस्तुत करने के बाद एक लंबे अंतराल की भविष्यद्वाणी की गई है। इस अंतराल में मसीह को (चार दिन बाद) "काट दिया जाएगा", और (38 वर्ष बाद) यरूशलेम और मंदिर को नष्ट कर दिया जाएगा, और अंत में एक रोमी प्रधान (अभी भी भविष्य में) यहूदियों के साथ सात वर्षकी वाचा बाँधेगा। यह वाचा और स्वर्गारोहणक्लेश को उकसातेहैं। इस्राएल के भविष्यसूचक इतिहास में इस अंतराल के दौरान, देशमें "विनाश होना निश्चित है" और कलीसियाई युग अपना समयकालचलाएगा जिसके बाद राज्य की स्थापना से पहले इस्राएल के इतिहास के अंतिम सात वर्षघटित होने हैं।

थिस्सलुनीके के मसीहियों को इस बात की शिक्षा दी गई थी कि कलीसिया क्लेश से नहीं गुजरेगा, परन्तु जब उत्पीड़न आया, तो कुछ ने कहा कि वह क्लेश पहले ही आ चुका था। पौलुस ने लिखा:

"किसी रीति से किसी के धोखे में न आना क्योंकि वह दिन न आएगा, जब तक विद्रोह (शाब्दिक रूप से, प्रस्थान) नहीं होता, और वह अधर्मी पुरुष अर्थात् विनाश का पुत्र प्रगट न हो। जो विरोध करता है, और हर एक से जो परमेश्वर, या पूज्य कहलाता है, अपने आप को बड़ा ठहराता है, यहाँ तक कि वह परमेश्वर के मन्दिर में बैठकर अपने आप को परमेश्वर प्रगट करता है।" (2 थिस्स. 2:2-4)।

इस "विद्रोह" शब्द का अनुवाद "पहले चले जाना" किया जाना चाहिए। सभी पुराने अंग्रेजी अनुवादों में इसका अनुवाद इसी प्रकार किया गया है और इसके यूनानी भाषा के शब्द के मौखिक रूप का अर्थ "चले जाना" होता है। यह निश्चयवाचक उपपद किसी अन्य स्थिति की ओर नहीं, बल्कि एक विशिष्ट घटना, अर्थात् कलीसिया के प्रस्थान की ओर संकेत करता है। कलीसिया का प्रस्थान और मसीह विरोधी का प्रकट होना – ये दो घटनाएँ क्लेश की आरम्भ का संकेत देती हैं। यह बात सच है कि धर्मत्याग अंतिम दिनों का चिन्ह है जैसा कि प्रभु और प्रेरितों ने संकेत दिया है (मत्ती 24:11; 1 तीमु. 4:1; 2 तीमु. 3:1;2 पत. 3:3-4)) परन्तु 2 थिस्स. 2 अध्याय का संदर्भ शारीरिक प्रस्थान और "विनाश के पुत्र" की उपस्थिति की माँग करता है।

प्रकाशितवाक्य 6 अध्याय - पहली मुहर - शांति और सुरक्षा

यूहन्ना ने प्रभु को एक पुस्तक पर सात मुहरें खोलते हुए देखा जिसमें क्लेश के सात वर्षों के दौरान होने वाले सभी न्याय शामिल हैं और वे सफेद, लाल, काले और पीले घोड़ों पर बैठे हुए चार सवारों के साथ आरम्भ होते हैं। सातवीं मुहर में सात तुरहियाँ हैं और सातवीं तुरही में सात शीशी (कटोरे) वाले न्याय हैं जिन्हें "सात अंतिम विपत्तियों" के रूप में वर्णित किया गया है।

सफेद घोड़े वाले सवार के पास धनुष तो है परन्तु कोई तीर नहीं है और वह "जय करता हुआ निकला कि और भी जय प्राप्त करे।" हम जानते हैं कि क्लेश का आरम्भ "अधर्मी पुरुष" अर्थात् मसीह विरोधी के प्रकट होने से होगा जो शांतिपूर्ण विजय की खोज करेगा। जब लोग कहते होंगे, **"कुशल हैं, और कुछ भय नहीं; तो उन पर एकाएक विनाश आ पड़ेगा।"**
दानिय्येल 9:26-27 के अनुसार मसीह विरोधी एक रोमी प्रधान होगा क्योंकि वह उसी के लोग थे जिन्होंने ई.प.70 में "शहर और अभयारण्य" को नष्ट कर दिया था। पिछले सात वर्ष तब आरम्भ होते हैं जब यह रोमी प्रधान "एक सप्ताह (सात वर्ष) के लिये बहुतों के संग दृढ़ वाचा बाँधेगा" (दानि. 9:27)। एक काम जो वह करेगा कि वह "अपने लाभ के लिये अपने देश की (इस्राएल की) भूमि को बाँट देगा" (दानि. 11:39), जो इस बात का सुझाव देता है कि वह अरब/इस्राएल मुद्दे को हल करेगा और मंदिर के पर्वत पर एक यहूदी मंदिर बनाया जाएगा जहाँ यहूदी लोग बलिदान चढ़ाने के साथ-साथ आराधना करना फिर से आरम्भ करेंगे। हालाँकि, "आधे सप्ताह (सात वर्ष) के बीतने पर वह मेलबलि और अन्नबलि को बन्द करेगा; और कंगूरे पर उजाड़नेवाली घृणित वस्तुएँ दिखाई देंगी" (दानि. 9:27)।

स्वर्गारोहण पर कलीसिया का प्रस्थान और मसीही विरोधी सात वर्ष की वाचा बाँधता है

"एक समय + समयों + आधे समय तक", = साढ़े तीन वर्ष = 42 महीने = 1,260 दिन (प्रका. अध्याय 6 से 9)

"जाति पर जाति, और राज्य पर राज्य चढ़ाई करेगा, और जगह जगह अकाल पड़ेंगे, और भूकम्प होंगे। ये सब बातें पीड़ाओं का आरम्भ होंगी।" (मत्ती 24:7-8)।

एक रोमी राजकुमार ने इस्राएल के साथ मंदिर बनाने की अनुमति देते हुए **7 साल की वाचा** बाँधी। 144,000 यहूदियों सहित अनेक लोग मसीह की ओर मुड़े।

वैश्विक इस्लामी आतंकवाद खाद्य श्रृंखला को बाधित करता है जिसके परिणामस्वरूप वैश्विक अकाल पड़ता है।
एक चौथाई आदमी मर जाते हैं (प्रका. 6:3-11)

144,000 यहूदी गवाहों और अन्यजातियों के विश्वासियों का **सताव** - कई शहीद

रूसी/इस्लामी आक्रमण। (रूस, तुर्की, ईरान, लीबिया, सूडान – यहे. 38/39; योएल 2)

इस्राएल यीशु मसीह की ओर मुड़ गया और परमेश्वर ने **वैश्विक भूकंप,** ओले, महामारी के साथ हमलावर सेनाओं को नष्ट कर दिया और हर आदमी की तलवार उसके भाई के खिलाफ होगी। रूस जल गया।
इस्राएल मृतकों को 7 महीने तक दफनाता है।

144,000 यहूदी "हमारे परमेश्वर के सेवकों" को तुरही के न्याय शुरू होने से पहले राज्य के सुसमाचार का प्रचार करने के लिए सुरक्षा के लिए **मुहर** कर दिया गया है।

6 मुहर का न्याय (प्रका. 6:1-17)

पहले चार तुरही के न्याय - सभी घास और पेड़ों का एक तिहाई जल गई। एक तिहाई महासागर और नदियाँ प्रदूषित हो गईं और एक तिहाई दिन और रात अंधकारमय हो गए।

पहला दुःख - अथाह कुण्ड खुला और दुष्टआत्माओं ने मनुष्यों को 5 महीने तक पीड़ित किया।
मसीह विरोधी पर एक दुष्टआत्मा का कब्ज़ा हो जाता है और वह पशु बन जाता है।

दूसरा दुःख – एशिया में युद्ध और एक तिहाई आदमी नष्ट - 20 करोड़ आदमी हथियारों के घेरे में होते हैं।

1,260 दिनों की सेवकाई के बाद यरूशलेम में पशु द्वारा दो **यहूदी भविष्यद्वक्ताओं की हत्या** कर दी गई।

7वीं मुहर 6वीं तुरही जारी करती है न्याय (प्रका. 7 से 9)

क्लेश के पहले भाग में घटनाओं का कालक्रम

प्रकाशितवाक्य अध्याय 6-9

"आने वाले (रोमी) प्रधान" को एक "सींग" के रूप में वर्णित किया गया है जो रोमी साम्राज्य के अंतिम चरण में "10 सींगों" के बीच उभरेगा जिसका अंतिम दिनों में पुनर्जीवित होना अवश्य है। एक सींग किसी राजा या हाकिम का प्रतीक है और यह "सींग" "पवित्र लोगों के संग लड़ाई करके उन पर... प्रबल भी हो गया" (दानि. 7:21)। पवित्र लोगों के साथ होने वाला यह युद्ध सात वर्षों के उस मध्य-बिंदु पर होना चाहिए जब रोमी प्रधान अन्नबलि और मेलबलि को बंद कर देगा। उस समय यहूदियों का हृदय परिवर्तन होगा और इसलिये उन्हें "परमप्रधान के पवित्र लोग" कहा गया है (दानि. 7:27)।

दूसरी, तीसरी, चौथी और पाँचवीं मुहरें - वैश्विक इस्लामी आतंकवाद

लाल घोड़े का सवार और उसके पीछे आने वाले दो अन्य सवार पृथ्वी से मेल उठा लेंगे और इसके परिणामस्वरूप संसार की एक चौथाई आबादी की मृत्यु हो जाएगी। हमने **छठी मुहर की पहचान इस्राएल पर रूसी/इस्लामी आक्रमण के रूप में** पहले ही कर ली है (पृष्ठ 8 और 9) और पृथ्वी से मेल उठा लिया जाना इस इस्लामिक आतंक से पहले होगा। सन् 1979 से लेकर और अरब के विद्रोह के बाद से, इस्लाम ने तलवार की धार के द्वारा संसार को बदलने के लिये जिहाद आरम्भ कर दिया है। प्रत्येक देश में नियोजित प्रवासन ने आतंकवादियों को एक सुरक्षित आश्रय प्रदान किया है, और मस्जिदें नयी पीढ़ी को कट्टरपंथी बनाने के लिये इमामों को एक मंच प्रदान करती हैं।

मुसलमान लोग खुल्लमखुल्ला दावा करते हैं कि वे संसार पर कब्जा कर लेंगे। अफ़्रीका में इस्लाम हत्या करने, अपहरण करने और बलात्कार करने की ओर बढ़ रहा है; मध्य एशिया पहले से ही उनके नियंत्रण में है और वे चीन पर दबाव बना रहे हैं। लाखों मुसलमानों के लिये पश्चिमी देशों ने अपने दरवाजे खोल दिए हैं और मध्य पूर्व में युद्धों का उपयोग संभावित आतंकवादियों को यूरोप, अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया में निरंतर प्रवाह प्रदान करने के लिये किया गया है।

आतंकवादी गुट तो पहले से ही काम कर रहे हैं और डर फैला हुआ है, परन्तु यह उस आतंक से तुलना किए जाने के लिये कुछ भी नहीं है जो स्वर्गारोहण के बाद संसार में तबाही लाएगा। जल्द ही ईरान के पास परमाणु हथियार होंगे और वह इन्हें तथा सामूहिक विनाश के अन्य हथियारों को पश्चिमी देशों में काम करनेवालों को उपलब्ध कराएगा। यूहन्ना ने लिखा:

"फिर एक और घोड़ा निकला, जो लाल रंग का था; उसके सवार को यह अधिकार दिया गया कि पृथ्वी पर से मेल उठा ले, ताकि लोग एक दूसरे का वध करें; और उसे एक बड़ी तलवार दी गई" (प्रका. 6:4)।

जब दूसरी और तीसरी मुहर खोली जाती है तो बड़ा अकाल और मृत्यु होती है; जो कि वैश्विक आतंकवाद का परिणाम है जो कई शहरों की खाद्य प्रणाली को बाधित करेगा। अन्य सभी धर्मों के प्रति इस्लाम की नफरत यीशु मसीह पर विश्वास करने वाले कई लोगों की शहादत के लिये जिम्मेदार होगी।

छठी मुहर - एक रूसी/इस्लामी आक्रमण

जब छठी मुहर तोड़ी जाती है तो रूसी/इस्लामी सेना द्वारा इस्राएल पर आक्रमण होता है। हम जानते हैं कि यह वही सेना है क्योंकि इस समय दो वैश्विक भूकंपों में से पहला भूकंप आया है, और बड़े-बड़े ओले (टूटते तारे) उन सेनाओं को नष्ट कर देंगे और उनकी संख्या का केवल छठा हिस्सा साइबेरिया में भागने के लिये बचेगा। मागोग (रूस) देश भूमि को जला दिया जाएगा क्योंकि संसार भर के यहूदी यीशु मसीह पर विश्वास करेंगे।

कुछ लोगों ने इस बात पर अचम्भा किया कि पृथ्वी पर अब तक का सबसे शक्तिशाली देश अमेरिका, उस क्लेश के समय में बहुत छोटी भूमिका क्यों निभाएगा। ऐसा हो सकता है कि वह आतंकवाद से बहुत कमजोर हो जाएगा और विश्व परिदृश्य पर हावी होने में असमर्थ हो जाएगा, जैसा कि वह द्वितीय विश्व युद्ध के बाद से रहा है। इसके अलावा, इस समय "अन्यजातियों के द्वीप" जला दिए जाते हैं (यहेज. 39:6)।

अध्याय 7 – राज्य का सुसमाचार का प्रचार करने के लिये 1,44,000 यहूदियों पर मुहर लगाई गई

इस समय ऐसे 1,44,000 यहूदी नवयुवक होंगे जो "परमेश्वर के निमित्त पहले फल" (प्रका. 14:4) और "हमारे (इस्राएल के) परमेश्वर के सेवक" होंगे जिन पर सुरक्षा के लिये मुहर लगाई जाएगी। पाँचवीं मुहर के न्याय के दौरान बहुत से लोग शहीद हुए हैं और हम जानते हैं कि ये 1,44,000 यहूदी गवाह समूचे संसार में गवाही देंगे। इन युवाओं को स्वर्गारोहण के तुरन्त बाद मसीह पर विश्वास करना होगा, परन्तु पूरे देश का हृदय परिवर्तन उत्तरी आक्रमण के समय होगा (यहेज. 39:22)।
उस क्लेश के पहले भाग में इन 1,44,000 लोगों के द्वारा "राज्य का यह सुसमाचार सारे जगत में प्रचार किया जाएगा" (मत्ती 24:14) और यहाँ तक कि उनके अपने लोगों के द्वारा भी उन्हें सताया जाएगा। यीशु ने कहा था,

> *"जब वे तुम्हें एक नगर में सताएँ, तो दूसरे को भाग जाना। मैं तुम से सच कहता हूँ, तुम मनुष्य के पुत्र के आने से पहले इस्राएल के सब नगरों में से गए भी न होंगे" (मत्ती 10:23)*

मत्ती उस क्लेश के मध्य-बिंदु से **पहले** 1,44,000 लोगों की गवाही देता है जब "उजाड़ने वाली घृणित वस्तु" को स्थापित की जाती है (मत्ती 24:15) और उन 1,44,000 लोगों पर उस समय तक के लिये **सुरक्षा हेतु** मुहर लगाई जाती है जब तक कि उनका काम पूरा नहीं होकर घटित नहीं होता, **इससे पहले कि** तुरही का न्याय उस समय आरम्भ हो जब वे चार स्वर्गदूत "पृथ्वी, समुद्र और पेड़ों" के एक तिहाई हिस्से को नष्ट कर देते हैं (प्रका. 7:2-3)।
स्वर्गारोहण के तुरन्त बाद दो यहूदी भविष्यद्वक्ता भी बचाए जाएँगे; ये मंदिर के पुनर्निर्माण को प्रोत्साहित करेंगे और यरूशलेम में 1,260 दिनों तक गवाही देंगे, जो कि उस क्लेश का पहला भाग है (प्रका. 11:3)। 1,260 दिनों के बाद मसीह विरोधी उन्हें मार डालेगा परन्तु परमेश्वर उन्हें फिर से जीवित करेगा और वे स्वर्ग पर उठा लिये जाएँगे (प्रका. 11:11-12)।
1,44,000 लोगों को शीशी के न्याय से पहले क्लेश के मध्य-बिंदु पर स्वर्ग में सिंहासन के चारों ओर देखा जाता है, और वे "सात अंतिम विपत्तियाँ" आरम्भ होती हैं इसलिये उन 1,44,000 को भी शहीदों के रूप में मरना होगा (प्रका. 14:1-4)।
यह संपूर्ण क्लेश की सात वर्षों की अवधि इस्राएल के बारे में है; जिस पर आक्रमण किया गया, जिसे सताया गया, जिसने पश्चाताप किया गया और जिसे परमेश्वर द्वारा संरक्षित किया गया होता है। क्लेश के दौरान पृथ्वी पर कलीसिया का एक भी उल्लेख नहीं मिलता क्योंकि "प्रभु का दिन" (क्लेश) आरम्भ होने से पहले ही कलीसिया का स्वर्गारोहण हो जाएगा। पौलुस ने मसीही लोगों से कहा:

> "परमेश्वर ने हमें क्रोध के लिये नहीं, परन्तु इसलिये ठहराया कि हम अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा उद्धार (मुक्ति) प्राप्त करें" (1 थिस्स. 5:4,9-10)।

8 और 9 अध्याय – तीन विपत्तियों समेत तुरही के न्याय

जब सातवीं मुहर खोली गई तो सात स्वर्गदूत प्रकट हुए और प्रत्येक को एक तुरही दी गई। जब प्रत्येक तुरही फूँकी जाती है तो एक न्याय की घोषणा की जाती है। पहली चार तुरहियाँ पर्यावरण वाले न्यायों की घोषणा करती हैं और ये परमेश्वर के पीड़ित पवित्र लोगों की प्रार्थनाओं के उत्तर में हैं (प्रका. 8:1-12)। संसार का एक तिहाई हिस्सा घास, पेड़, समुद्र, वातावरण और यहाँ तक कि सूर्य का भी न्याय होते हुए देखेगा। परमेश्वर दिखाएगा कि वह मौसम और पर्यावरण को नियंत्रित करता है। यह "हरी घास" अर्थात् उन लोगों के लिये परमेश्वर का उत्तर होगा जिन्होंने यह झूठ फैलाया है कि मनुष्य पर्यावरण को नियंत्रित कर सकता है। इतने बड़े पैमाने पर होने वाली तबाही की कल्पना करना कठिन होता है जो एक तिहाई फसलों को नष्ट कर देगी, परिवहन को बाधित कर देगी और असंख्य मौतों का कारण बनेगी। परन्तु इससे भी बुरा आने वाला है।

अंतिम तीन तुरहियाँ प्रत्येक विपत्ति की घोषणा करती हैं जो उस क्लेश को समापन पर ले आएगी। पहली दो विपत्तियाँ हमें सात वर्षों के मध्य-बिंदु पर ले आती हैं और तीसरी विपत्ति "सात अंतिम विपत्तियों" का परिचय देती है जिन्हें सात शीशी वाले न्याय के रूप में जाना जाता है।

अध्याय 9 - पहली विपत्ति या पाँचवीं तुरही

यूहन्ना ने एक सामर्थी स्वर्गदूत को स्वर्ग से उतरते और अथाह कुण्ड को खोलते देखा। अथाह कुण्ड से "एक बड़ी भट्टी के समान धुआँ" निकला और टिड्डियों की तरह दिखाई देती हुई दुष्टात्माएँ, उन सब लोगों को पीड़ित करने के लिये निकलीं जिनके "माथे पर परमेश्वर की मुहर" नहीं है (प्रका. 9:4)। उनके एक बार काट लेने पर, लोगों को पाँच महीने तक असहनीय पीड़ा सहनी पड़ती है।

इन दुष्टात्माओं का एक राजा है जिसका इब्रानी नाम अबद्दोन और यूनानी नाम अपुल्लयोन है। बाढ़ के समय इन दुष्टात्माओं को "नरक में भेजकर अंधेरे कुण्डों में डाल दिया, ताकि न्याय के दिन तक बन्दी रहें" (2 पत. 2:4) - जैसा कि यहूदा ने हमें बताया, क्योंकि "उन्होंने अपने निज निवास को छोड़ दिया" (यहूदा 1:6)। जब "परमेश्वर के पुत्रों (स्वर्गदूतों) ने मनुष्य की पुत्रियों को देखा... और उन्होंने जिस-जिस को चाहा उनसे ब्याह कर लिया" (उत्प. 6:2), तो परमेश्वर ने इन पतित स्वर्गदूतों को अंधेरे कुण्ड (Tartaros) में डाल दिया, जो अधोलोक की सबसे गहरी खाई अर्थात् अथाह कुण्ड है।

इस मोड़ पर, अथाह कुण्ड के राजा के पास मसीह विरोधी है जो फिर चरित्र बदलकर "अथाह कुण्ड में से निकलने वाला पशु" बन जाता है (प्रका. 11:7)। मसीह विरोधी एक दुष्टात्मा से ग्रस्त व्यक्ति बन जाता है, जो अपने झूठे भविष्यद्वक्ता के साथ, लोगों को धोखा देने के लिये चमत्कार करने में सक्षम होता है। इस समय तक उसे पशु नहीं कहा गया था।

दूसरी विपत्ति या छठी तुरही - एशिया में युद्ध

जब छठा स्वर्गदूत अपनी तुरही फूँकता है, तो फरात नदी में कैद चार पतित स्वर्गदूतों को एक तिहाई पुरुषों को मारने के लिये 200 करोड़ लोगों की सेना जुटाने के लिये खोल दिया जाता है। फरात एशिया की सीमा है और जब पूर्व के राजा हर–मगिदोन आते हैं तो ऐसा कहा जाता है कि वे फरात को पार करते हैं।

एशिया में संसार की आधी आबादी रहती है और चीन दावा करता है कि उसके पास 20 करोड़ लोगों की सेना है। यदि एशिया में युद्ध छिड़ गया तो लड़ाकों की संख्या आसानी से 20 करोड़ हो सकती है। भारत और चीन, भारत और पाकिस्तान, उत्तर कोरिया और संसार, चीन और ताइवान के बीच पहले से ही टकराव चल रहा है। भारत, चीन और उत्तर कोरिया सभी के पास परमाणु हथियार हैं। इसमें मरने वालों की संख्या अधिक होगी; जो सम्भवतः मानवजाति का एक तिहाई भाग हो सकती है! इस बात की सम्भावना है कि परमाणु हथियारों का इस्तेमाल किया जाएगा।

यह दुःख की बात है कि सताव हमेशा ईश्वरीय दुःख और पश्चाताप की ओर नहीं ले जाता। जो जीवित बचे हैं, वे अपने बुरे कर्मों से पश्चाताप नहीं करेंगे या "दुष्टात्माओं की, और सोने, चाँदी, पीतल, पत्थर, और काठ की मूर्तियों की पूजा नहीं करेंगे" (प्रका. 9:20)।

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक

कलीसिया को बीमा सीट पर पुरस्कार प्राप्त हुआ

स्वर्ग में एक दरवाज़ा खुला और कलीसिया उठा ली गई
इस्राएल द्वारा राज्य का सुसमाचार
न्याय की मुहरें

इस्राएल द्वारा राज्य का सुसमाचार

1260 दिन

7वें वर्ष का मध्य बिंदु

"उजाड़ने की घृणित वस्तु"

स्वर्गदूत द्वारा प्रचारित अनन्त सुसमाचार

1,260 दिन

7वीं तुरही का कटोरा (कटोरा) निर्णय

मेम्ने का विवाह भोज

स्वर्ग खुल गया और मसीह अपने संतों के साथ लौट आए

नया यरूशलेम स्वर्ग से पृथ्वी पर स्थानांतरित हुआ

नया स्वर्ग और नई पृथ्वी

1	2	3	4	5	6	7	8	9	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	
पतमुस पर यूहन्ना ने एशिया के सात कलीसियाओं को मसीही जगत के सात चरणों के रूप में देखा			कलीसिया स्वर्गारोहित हो गई और सिंहासन के		सामने आ गई	इस्राएल					मुस्लिम आक्रमण में परिवर्तित हो गया- वैश्विक भूकंप	बड़ी संख्या में लोग शहीद हुए	हाय- चार पर्यावरणीय आपदाएँ पेड़-समुद्र-नदी-सूर्य की	मार	एक स्वर्गदूत अथाह कुण्ड को खोलता है और दुष्टात्माओं को पृथ्वी पर छोड़ देता है।		बीस करोड़ एशियाई सेना 1 तिहाई पुरुषों को मारने के लिए तैयार (1 वर्ष, 1 महीना, 1 दिन)	इस्राएल - सात गड़गड़ाहट के कारण दो यहूदी भविष्यद्वक्ता मारे गए, इस्राएल उजाड़ की ओर भाग गया	मसीह विरोधी मंदिर में बैठा है, स्वर्गदूतों ने इस्राएल के गवाह की जगह ले ली है	हाय	हाय- पशु के अनुयायियों पर सात आखिरी विपत्तियाँ डाली गईं, समुद्र, नदियाँ, सूर्य, पशु का साम्राज्य। पूर्व के राजा फ़रात नदी को पार करते हैं	धर्मत्यागी मसीहीजगत - रहस्य महान बेबीलोन को मसीह विरोधी ने जला दिया	मसीह-विरोधी और झूठे भविष्यद्वक्ता को आग की झील में डाल दिया गया, जीवित जातियों का न्याय किया गया	यरूशलेम में दाऊद के सिंहासन पर राजाओं के राजा के रूप में मसीह का 1,000 वर्ष का शासन	पृथ्वी आग से जल गयी है

पशु और उसका झूठा भविष्यद्वक्ता

शैतान और सभी उद्धार न पाए हुए लोग आग की झील में

पहले 1,260 दिनों के अंत पर संसार की समीक्षा

क्लेश का पहला अर्धभाग संसार को भयानक उजाड़ की स्थिति में छोड़ देगा और कई राष्ट्र अपंग हो जाएँगे:

• इस्लामिक आतंकवाद ने पृथ्वी की शांति छीन ली होगी और लोग भय में जीवन व्यतीत कर रहे होंगे; संसार की एक चौथाई आबादी समाप्त हो जाएगी।

• रूस और इस्लाम को नष्ट कर दिया जाएगा और रूस देश को जला दिया जाएगा। "अन्यजातियों के द्वीप" जला दिये जाएँगे। अमेरिका और ब्रिटेन?

• चार पर्यावरण वाले न्याय एक तिहाई पेड़ों को जला देंगे; समुद्रों के एक-तिहाई हिस्से को प्रदूषित कर देंगे; पीने के पानी का एक-तिहाई भाग प्रदूषित कर देंगे और एक-तिहाई समय तक सूर्य नहीं चमकेगा।

• एशिया में एक वर्ष, एक माह, एक दिन और एक घंटे तक चलने वाले युद्ध में एक तिहाई लोग मारे जाएँगे। एशिया में राजनीति बदलेगी।

• दुष्टात्माओं की गतिविधि सर्वकालिक चरम पर पहुँच जाएगी और दुष्टात्माएँ मनुष्यों पर कष्टदायक पीड़ादायी डंक से आक्रमण करेंगी।

• संसार ऐसे किसी भी व्यक्ति को स्वीकार करने को तैयार होगा जो इस बात का दावा करता है कि वह अराजकता से बाहर व्यवस्था लाने में सक्षम है, और मसीह विरोधी (अधर्मी पुरुष) खालीपन को भर देगा। रूस, इस्लाम, एशिया और अन्यजातियों के द्वीपों के अपंग हो जाने से, शक्तिशाली पुनर्जीवित रोमी साम्राज्य के मुखिया पशु का कोई विरोध नहीं होगा।

• ऐसा लगता है कि उस क्लेश के पहले भाग के दौरान पुनर्जीवित रोमी साम्राज्य (यूरोप) उन युद्धों से अलग रहने में सक्षम होगा जो रूस और इस्लाम को इस्राएल देश में विनाश की ओर ले जाते हैं, और उस एशियाई युद्ध से जो मरे हुए लोगों की एक तिहाई को छोड़ देता है। राजनीतिक शक्ति का संतुलन मसीह विरोधी के पक्ष में हो गया होगा।

• "पशु का सिंहासन" और "उसका राज्य" क्लेश के दूसरे अर्धभाग में विशेष न्याय के लिये आते हैं (प्रका. 16:10)।

• जो लोग "प्रकोप के पहले के स्वर्गारोहण के सिद्धांत" को मानते हैं, वे इस बात की शिक्षा देते हैं कि क्लेश के पहले भाग में परमेश्वर का क्रोध प्रकट नहीं होता है। ऊपर सूचीबद्ध की गई घटनाएँ इस बात को दर्शाती हैं कि सभी मुहरबंद न्याय परमेश्वर का प्रकोप हैं। पृथ्वी के राजा इस बात की घोषणा करते हैं कि पाँचवीं मुहर के बाद "मेम्ने का प्रकोप आ गया है" और रूसी/इस्लामी सेनाएँ सात वर्ष से पहले-पहले "मेरे (परमेश्वर के) क्रोध की आग" का लक्ष्य होंगी (यहेज. 38:19)।

क्लेश के पहले अर्धभाग में होने वाली घटनाओं के लिये आवश्यक समय

क्लेश के पहले अर्धभाग में केवल साढ़े तीन वर्ष का समय है और यदि हमने घटित होने वाली घटनाओं को सही ढंग से निर्धारित किया है तो उन्हें इस समय सीमा के भीतर उपयुक्त बैठना चाहिए। यदि हम प्रत्येक घटना के लिये उचित समय आवंटित करते हैं तो उचित क्रम में रखे जाने पर इसके समय का योग 42 महीने से अधिक नहीं होना चाहिए। **इसमें कोई संदेह की बात नहीं है कि कुछ घटनाएँ अतिव्याप्त होंगी।**

नीचे उन घटनाओं का सारांश दिया गया है जिनके लिये पवित्रशास्त्र उस प्रत्येक घटना के लिये उचित समयानुमान के साथ यह बताता है कि वे क्लेश के पहले अर्धभाग में घटित होंगी।
घटना 1 - कलीसिया का स्वर्गारोहण – इसके लिये कोई समय आवंटित नहीं किया गया है, पवित्रशास्त्र इस बात की ओर संकेत करता है कि यह घटना "क्षण भर में, पलक मारते ही" घटित होगी (1 कुरि. 15:52)।
घटना 2 - एक रोमी प्रधान (यूरोपीय संघ) इस्राएल के साथ सात वर्ष की वाचा पर हस्ताक्षर करेगा (पहली मुहर) - <u>इसके लिये कोई समय आवंटित नहीं किया गया है</u>
कलीसियाई युग और इस्राएल के 70वें सप्ताह के बीच कोई अंतर नहीं होगा। 2 थिस्स. 2:3-8 के अनुसार स्वर्गारोहण के तुरन्त बाद मसीह विरोधी प्रकट होता है और ये **दो घटनाएँ** प्रभु के दिन के सात वर्षों को प्रारम्भ करती हैं:

"किसी रीति से किसी के धोखे में न आना क्योंकि वह दिन न आएगा, जब तक विद्रोह (शाब्दिक रूप से, प्रस्थान) नहीं होता, और वह अधर्मी पुरुष अर्थात् विनाश का पुत्र प्रगट न हो... क्योंकि अधर्म का भेद अब भी कार्य करता जाता है, पर अभी एक रोकनेवाला (अड़चन डालने वाला) है, और जब तक वह दूर न हो जाए, वह रोके रहेगा। तब वह अधर्मी प्रगट होगा" (2 थिस्स. 2:3-8)।

घटना 3 - इस्लामवादियों को क्रोधित करने वाले क्लेश के बहुत पहले ही एक क्लेश का मंदिर बनाया जाना चाहिए - <u>छह महीने</u>
सम्भवत: वैश्विक इस्लामिक आतंकवाद (दूसरी मुहर) के द्वारा "पृथ्वी पर से मेल उठा लिया गया है" जिसके परिणामस्वरूप व्यापक अकाल और मृत्यु (तीसरी और चौथी मुहर) हुई। जो लोग परमेश्वर के 1,44,000 यहूदी सेवकों के साथ खड़े हैं, उनके तीव्र उत्पीड़न से कई शहीद होंगे (पाँचवीं मुहर)। इस्लामिक प्रवास आतंकवादियों के आश्रय स्थल तैयार कर रहा है और <u>ऊपर बताई गई सभी घटनाएँ पहले वर्ष में घटित हो सकती हैं।</u>
घटना 4 - दक्षिण का राजा (मिस्र) आक्रमण करेगा - <u>नौ महीने</u> (दानि. 11:40-42; यशा. 19 अध्याय) - इस्राएल और यूरोपीय संघ ने मध्य पूर्व पर कब्जा करने का उत्तर दिया। मिस्र उजाड़ हो गया है जिससे मुस्लिम जगत नाराज है।
घटना 5 - तुर्की, ईरान, लीबिया और सूडान से रूस उत्तर की ओर से इस्राएल में एक इस्लामिक सेना का नेतृत्व करेगा (छठी मुहर) - रूस और ईरान पहले से ही सीरिया में स्थित हैं - <u>नौ महीने</u>। इस्राएल का हृदय परिवर्तन हो गया है और आक्रमणकारियों को वैश्विक भूकंप, उल्कापिंड आदि

द्वारा नष्ट कर दिया गया है (यहेज. 38,39 अध्याय; योएल 2 अध्याय)।

> "जब उसने छठवीं मुहर खोली, तो मैंने देखा कि एक बड़ा भूकम्प हुआ... और हर एक पहाड़, और टापू, अपने-अपने स्थान से टल गया" (प्रका. 6:12-14)।

ध्यान दें: पर्यावरण वाले न्यायों से पहले परमेश्वर के 1,44,000 यहूदी सेवकों पर सुरक्षा के लिये मुहर लगा दी गई है (प्रका. 7:1-4)

> *"जब तक हम अपने परमेश्वर के दासों के माथे पर मुहर न लगा दें, तब तक पृथ्वी और समुद्र और पेड़ों को हानि न पहुँचाना (पहली चार तुरहियाँ)।"*

1,44,000 यहूदी लोग सब देशों को राज्य के सुसमाचार का प्रचार करते हैं (मत्ती 24:14) और वे पर्यावरण वाले न्यायों और अथाह कुण्ड से निकलने वाली दुष्टात्माओं से सुरक्षित हैं (प्रका. 9:4)।

घटना 6 - चार पर्यावरण वाले न्याय अचानक सभी पेड़ों, घास, समुद्रों में से एक तिहाई को नष्ट कर देते हैं और दिन के एक तिहाई हिस्से के लिये सूर्य अंधेरा हो जाता है। उसी समय इस्राएल मृतकों को दफनाएगा और अथाह कुण्ड खोला जाएगा - <u>पाँच महीने</u>
दुष्टात्माओं की शक्तियाँ स्वतंत्र हो जाती हैं और मनुष्य पाँच महीने तक पीड़ित रहते हैं। एशियाई युद्ध के लड़े जाने तक ये घटनाएँ जारी रह सकती हैं।

घटना 7 - एशिया का युद्ध जिसमें 20 करोड़ लोग शामिल हैं - <u>तेरह महीने</u>

इस युद्ध को "मनुष्यों के एक तिहाई को मार डालने के लिये" एक घंटे, एक दिन, एक महीने और एक वर्ष का विशिष्ट समय दिया गया है (प्रका. 9:15)। ऐसा प्रतीत होता है कि मसीह विरोधी का राज्य, पुनर्जीवित रोमी साम्राज्य, क्लेश के पहले अर्धभाग के दौरान मिस्र को अधीन करने और मध्य पूर्व के देशों (दानि. 11:41-43) पर कब्जा करने के अलावा प्रमुख युद्धों में शामिल नहीं है, जबकि रूस और इस्लामिक राष्ट्र नष्ट हो गए हैं और क्लेश के पहले अर्धभाग में एशिया बहुत कम हो गया है। **यह एक ऐसा खालीपन छोड़ देता है जिसे मसीह विरोधी बिना किसी चुनौती के भर सकता है।** क्लेश के दूसरे अर्धभाग का संघर्ष परमेश्वर और शैतान के बीच है; अर्थात् मसीह और मसीह विरोधी के बीच में है। मनुष्य या तो परमेश्वर की या शैतान की उपासना करेंगे (प्रका. 9:20; 16:21) और इसलिये "सात अंतिम विपत्तियों" के न्याय पशु के राज्य और उन लोगों के खिलाफ निर्देशित हैं **जिनके पास पशु का निशान है**।
क्लेश के पहले अर्धभाग की घटनाओं को आसानी से 42 महीने या 1,260 दिनों में समेटा जा सकता है।

क्लेश का मध्य-बिन्दु
प्रकाशितवाक्य 10 से 14 अध्याय

सात-वर्षीय क्लेश के मध्य-बिंदु पर होने वाली घटनाओं का वर्णन 10 से लेकर 14 अध्याय में किया गया है और इसका सारांश आने वाले पृष्ठ पर देखा जा सकता है।

अध्याय 10 - सात गर्जन वाले न्यायों पर रोक लगा दी गई

अध्याय 10 में यूहन्ना एक शक्तिशाली स्वर्गदूत को स्वर्ग से उतरते हुए देखता है जिसके सिर पर परमेश्वर की दया का प्रतीक मेघधनुष है। सात गर्जन वाले न्याय सामने आए हैं और यूहन्ना को उन्हें लिखने के लिये मना किया गया है। यीशु ने कहा कि "यदि वे दिन घटाए न जाते, तो कोई प्राणी न बचता; परन्तु चुने हुओं के कारण (अर्थात् इस्राएल के कारण) वे दिन घटाए जाएँगे" (मत्ती 24:22)। यीशु ने सम्भवतः उन सात गर्जनाओं को रोकने का ही उल्लेख किया है।

इस चरण में छः तुरही वाले न्याय का शोर हो चुका है और यूहन्ना को बताया गया है कि जब सातवाँ स्वर्गदूत "तुरही फूँकने पर होगा, तो परमेश्वर का वह रहस्य पूरा हो जाएगा" (प्रका. 10:7)। सातवीं तुरही तीसरी विपत्ति है जो "सात अंतिम विपत्तियों" की घोषणा करती है, जिन्हें सात शीशी का न्याय कहा जाता है। जब दानिय्येल ने इस अवधि के बारे में भविष्यद्वाणी की, तो उसे बताया गया कि "ये बातें अन्त समय के लिये बन्द हैं और इन पर मुहर दी हुई है" (दानि. 12:9), परन्तु प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में हम परमेश्वर के मेम्ने को भविष्यद्वाणी की पुस्तक को खोलते हुए देख रहे हैं (प्रका. 5:5)। जैसे ही उस क्लेश का दूसरा अर्धभाग आरम्भ होता है, सात शीशियाँ (कटोरे) प्रकट हो जाती हैं और सात अंतिम विपत्तियाँ जो पहले छिपी हुई थीं, अब पूरी तरह से प्रकट हो जाती हैं। उस स्वर्गदूत ने घोषणा की कि "अब और देर (विलंब) न होगी" (प्रका. 10:6)।

अध्याय 11 - यहूदी भविष्यद्वक्ताओं को घात किया गया और बलिदान बंद किए गए

अध्याय 11 में हमें बताया गया है कि यरूशलेम में दो यहूदी भविष्यद्वक्ता होंगे, जिन्हें हाग्गै और जकर्याह की तरह, मंदिर में दीपक के लिये तेल की आपूर्ति करने वाले "जैतून के दो पेड़ों" के रूप में वर्णित किया गया है। हाग्गै और जकर्याह ने बेबीलोन की कैद के बाद मंदिर के पुनर्निर्माण को प्रोत्साहित किया और ये दो भविष्यद्वक्ता क्लेश के मंदिर के पुनर्निर्माण को प्रोत्साहित करते हैं, और निःसंदेह उन्हें निर्माण के लिये उस मंदिर को मापने के लिये कहा गया है। हालाँकि, मंदिर का पर्वत के केवल एक हिस्से को मापा जाना है और शेष को अन्यजातियों के हाथों में छोड़ दिया जाना है, जो इस बात को दर्शाता है कि चट्टान का गुम्बद प्रभु के लौटने तक, या कम से कम क्लेश के मध्य-बिंदु तक बना रहेगा। ये भविष्यद्वक्ता केवल 1,260 दिनों के लिये सेवा करते हैं, जिस दौरान उनके पास अपनी सुरक्षा के लिये विशेष शक्तियाँ होती हैं (प्रका. 11:1-6)। 1,260 दिनों के बाद पशु (अर्थात् मसीह-विरोधी) मंदिर की पूजा में हस्तक्षेप करेगा और "मेलबलि और अन्नबलि को बन्द करेगा" (दानि. 9:27)। इन दो भविष्यद्वक्ताओं की सेवकाई उस पशु के द्वारा समाप्त कर दी जाएगी जो इस चरण पर अथाह कुण्ड से निकलकर दुष्टात्मा से ग्रस्त हो जाएगा (प्रका. 11:7)। उन दोनों भविष्यद्वक्ताओं के शव संसार के देखने और आनंद लेने के लिये यरूशलेम की सड़कों पर पड़े रहेंगे। हालाँकि, साढ़े तीन दिन के बाद परमेश्वर उन्हें जिलाकर उठाएगा और वे स्वर्ग पर चढ़ जाएँगे।

अधोलोक से निकला हुआ मसीह विरोधी दुष्टात्मा

सात गर्जन वाले न्यायों पर मुहर लगा दी गई है और एक स्वर्गदूत ने घोषणा की है कि **"अब और देर न होगी"**।

मसीह विरोधी ने मंदिर में **यहूदी बलिदानों को बंद कर दिया** और वहाँ अपनी प्रतिमा स्थापित की - "उजाड़नेवाली घृणित वस्तु"।

स्वर्ग में युद्ध होता है और मीकाएल और उसके स्वर्गदूतों ने अजगर (शैतान) और उसके स्वर्गदूतों को पृथ्वी पर गिरा दिया।

यरूशलेम में उस पशु द्वारा मारे गए दो यहूदी भविष्यद्वक्ताओं को साढ़े तीन दिनों के बाद पुनर्जीवित किया गया और **स्वर्ग में उठा लिया गया**।

इस्राएल यरूशलेम से भाग गया, जिसकी सहायता "बड़े उकाब के दो पंख" वाले एक देश ने की - जो सम्भवतः संयुक्त राज्य अमेरिका है।

परमेश्वर के 1,44,000 यहूदी सेवक स्वर्ग में **सिंहासन के सामने** उपस्थित होते हैं। पृथ्वी पर इस्राएल की गवाही खामोश कर दी गई।

स्वर्ग में उड़ने वाले स्वर्गदूत **"अनन्त सुसमाचार" की घोषणा** करते हैं और आने वाले प्रकोप और भारी क्लेश की चेतावनी देते हैं।

उस पशु की **हत्या का प्रयास** किया जाता है और सिर पर तलवार से लगा उसका "प्राणघातक" घाव अच्छा हो जाता है।

प्रभु और स्वर्गदूत पृथ्वी की **फसल काटने** की और राष्ट्रों को परमेश्वर के प्रकोप के रसकुण्ड में डालने की तैयारी करते हैं।

एक स्वर्गदूत उस **पशु की छाप** न लेने की चेतावनी देता है। आग की झील में सदैव पीडा सहते रहने से "प्रभु में" मरना बेहतर है।

क्लेश के मध्य बिंदु पर घटित होने वाली 18 घटनाएँ

प्रकाशितवाक्य 10-14 अध्याय

अध्याय 12:7-13 - स्वर्ग में युद्ध

इस समय स्वर्ग में युद्ध होगा (प्रका. 12:7-13)। शैतान की हमेशा से ही परमेश्वर के सिंहासन तक पहुँच रही है, परन्तु उस क्लेश के आधे रास्ते में वह सर्वशक्तिमान परमेश्वर को उखाड़ फेंकने के प्रयास में अपनी सब दुष्टात्माओं को एकजुट कर देगा। मीकाएल और स्वर्गदूत जिनकी वह प्रधान स्वर्गदूत के रूप में अध्यक्षता करते हैं, शैतान की सेना पर विजय प्राप्त करेंगे और उन्हें स्वर्ग से पृथ्वी पर गिरा देंगे। स्वर्ग तक पहुँच से वंचित होने के बाद शैतान यह जानकर बड़े क्रोध के साथ नीचे आएगा कि उसका "थोड़ा ही समय और बाकी है" अर्थात् 42 महीने, इससे पहले कि वह अथाह कुण्ड में बाँधा जाए।

अध्याय 12:1-6; 13-17 - इस्राएल को उस पशु के द्वारा सताया गया

अध्याय 12 में पाई जाने वाली एक स्त्री 12 तारों वाला मुकुट पहने हुए यूहन्ना को दिखाई दी। उसने सूर्य को ओढ़ा हुआ है और चाँद **जो इस्राएल देश का प्रतीक है,** उसके पैरों के नीचे है। यूसुफ के सपने के अनुसार वे 12 तारे 12 गोत्रों का प्रतिनिधित्व करते हैं (उत्पत्ति 37:9-10)। जिस स्त्री को यूहन्ना ने देखा, "वह बेटा जनी जो लोहे का राजदण्ड लिये हुए, सब जातियों पर राज्य करने पर था," और "उसका बच्चा परमेश्वर के पास, और उसके सिंहासन के पास उठाकर पहुँचा दिया गया" (प्रका. 12:5)। यह प्रभु यीशु मसीह के अलावा कोई और नहीं हो सकता। उसके जन्म के समय अजगर (शैतान) ने उस बालक को "जन्म लेते ही" निगल लेने का प्रयास किया था, जब हेरोदेस ने बैतलहम में शिशुओं को मार डाला था, परन्तु मसीह को जिलाकर परमेश्वर के सिंहासन पर बैठाया गया है।

इसलिये जब तुम उस उजाड़नेवाली घृणित वस्तु को जिसकी चर्चा दानिय्येल भविष्यद्वक्ता के द्वारा हुई थी, पवित्रस्थान में खड़ी हुई देखो, (जो पढ़े, वह समझे), **तब जो यहूदिया में हों वे पहाड़ों पर भाग जाएँ (मत्ती 24:15-16)**

इसमें स्त्री के "वंश" का वर्णन किया गया है और ये क्लेश में पड़े हुए लोग यहूदी हैं। जब सात वर्षों के पहले अर्धभाग में इस्राएल का हृदय परिवर्तन हो जाएगा, तो शैतान उन यहूदियों को नष्ट करने का प्रयास करेगा जो इस चरण में "जो परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते, और यीशु की गवाही देने पर स्थिर हैं" (प्रका. 12:17)। यह उत्पीड़न तीव्र होगा और यहूदी लोग (यहूदिया के) जंगल में भाग जाएँगे जहाँ **परमेश्वर ने एक** जगह तैयार की है। वहाँ उस स्त्री का "एक समय, और समयों, और आधे समय तक" या साढ़े तीन वर्ष तक अर्थात् उस क्लेश के दूसरे अर्धभाग तक पालन-पोषण किया जाता है। दानिय्येल ने क्लेश के पहले अर्धभाग के अंत में इस घटना का वर्णन किया। दानिय्येल ने लिखा: "उसी समय वह (अर्थात् पशु) पूरब और उत्तर दिशाओं से ... बड़े क्रोध में आकर बहुतों का सत्यानाश करने के लिये निकलेगा" (दानि. 11:44)।

इस समय यहूदियों को उस पशु से बचने के लिये "बड़े उकाब के दो पंख" दिए जाएँगे (प्रका. 12:14), और यद्यपि यहूदियों का पीछा किया जाता है, तौभी वे क्लेश के दूसरे अर्धभाग तक कायम रहेंगे।

वह बड़ा उकाब कौन है?

यहेजकेल की पुस्तक में हम बेबीलोन और मिस्र को "लम्बे पंखवाले **बड़ा उकाब"** (यहेज. 17:3,7) के रूप में पढ़ते हैं और इस प्रतीक के द्वारा यह पता चलता है कि क्लेश के दूसरे अर्धभाग के दौरान उस पशु से सुरक्षा में कुछ बड़े देश इस्राएल की सहायता करेंगे - सम्भवतः वह देश संयुक्त राज्य होगा।

जकर्याह की भविष्यद्वाणी हमें यह मालूम होता है कि बचाया गया वह यहूदी देश उस पशु के विपुद्ध लड़ रहा होगा और प्रभु उसके लिये लड़ेगा। जकर्याह बताता है कि **"यहूदा भी यरूशलेम में लड़ेगा"** (जक. 14:14) और "चारों ओर की सब जातियों" के विरुद्ध बड़ी सफलताएँ हासिल की जाएँगी। यहूदा के अधिपति "पूले में जलती हुई मशाल" के समान हो जाएँगे (जक. 12:6) और "उस समय उनमें से जो ठोकर खानेवाला हो वह दाऊद के समान होगा; और दाऊद का घराना परमेश्वर के समान होगा, अर्थात् यहोवा के उस दूत के समान जो उनके आगे-आगे चलता था" (जक. 12:8)।

अध्याय 13 - पशु और उसका झूठा भविष्यद्वक्ता

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के 13 अध्याय में हमें पशु और उसके झूठे भविष्यद्वक्ता का वर्णन मिलता है। अजगर (शैतान), पशु और झूठा भविष्यद्वक्ता, ये बुराई की त्रिमूर्ति का हिस्सा होंगे। उस पशु की तुलना एक चीते, भालू और सिंह से की गई है, जो अतीत के चार सांसारिक साम्राज्यों अर्थात् बेबीलोन, फारस और यूनान के सभी गुणों को एक साथ मिलाता है, जिसका वर्णन दानिय्येल ने किया है (दानि. 7:1-14)। उस पशु के पास "दस सींग" हैं जो पुनर्जीवित रोमी साम्राज्य के दस राजाओं (हाकिमों) का प्रतिनिधित्व करते हैं जिन्हें हम आज के समय में यूरोपीय संघ में बनना आरम्भ होते हुए देखते हैं। अंत में, यूरोपीय संघ में ऐसे दस राज्य शामिल होने चाहिए जो सात वर्ष के उस क्लेश के बीच में मसीह विरोधी को अपनी शक्ति देते हैं (अध्याय 17:12-13)।

अपनी दुष्टात्मा से ग्रस्त भीड़ को मुक्त करने के लिये अथाह कुण्ड खोले जाने और शैतान को पृथ्वी पर गिरा दिए जाने के साथ-साथ, उस क्लेश के दूसरे अर्धभाग में अभूतपूर्व दावनी गतिविधि देखी जाएगी; **लोग उस अजगर (शैतान) की पूजा करेंगे और**

"यह कहकर पशु की पूजा की, "इस पशु के समान कौन है? ...और उसने परमेश्वर की निन्दा करने के लिये मुँह खोला, कि उसके नाम और उसके तम्बू अर्थात् स्वर्ग के रहनेवालों की निन्दा करे। उसे यह अधिकार दिया गया, कि पवित्र लोगों से लड़े" (प्रका. 13:4-7)।

उस पशु को 42 महीनों के लिये संसार की अर्थव्यवस्था और धर्मों पर अत्यन्त शैतानी अधिकार दिया जाएगा जो कि उस क्लेश का दूसरा अर्धभाग होगा। जिन मनुष्यों पर उस वफादारी की छाप अर्थात् उनके माथे या दाहिने हाथ पर "उस पशु की छाप" (666) नहीं होगी, वे लेन-देन नहीं कर पाएँगे। जैसे ही पृथ्वी पर "सात अंतिम विपत्तियाँ" आएँगी, मनुष्य परमेश्वर के नाम की निंदा करेंगे (प्रका. 6:6,9,21)। क्लेश के मध्य-बिंदु के बाद केवल दो शिविर होंगे; जिनमें से एक परमेश्वर का होगा और एक शैतान का होगा। सभी धर्म शैतान के अधीन होंगे और उसके "अधर्मी पुरुष" की पूजा करेंगे।

चौथा जन्तु (दानि. 7:7-8

अध्याय 14:1-13 – 1,44,000 शहीद और स्वर्गदूत अनन्त सुसमाचार का प्रचार करते हैं

अध्याय 14 में हमें स्वर्ग का दृश्य दिखाया गया है जहाँ 24 यहूदी प्राचीन सिंहासन के सामने आराधना करते हैं और उनके साथ पृथ्वी के 1,44,000 यहूदी पुरुष भी शामिल होते हैं। यूहन्ना ने इन्हें "अपने (इस्राएल के) परमेश्वर के दास" (प्रका. 7:3) के रूप में वर्णित किया, जिन्होंने "राज्य का यह सुसमाचार सारे जगत में प्रचार किया... कि सब जातियों पर गवाही हो" (मत्ती 24:14)। ये "परमेश्वर और मेम्ने के निमित्त पहले फल" हैं (प्रका. 14:4)। कलीसिया के स्वर्गारोहण के बाद मसीह पर विश्वास करने वाले ये **पहले इस्राएली लोग थे**; उनकी गवाही के माध्यम से "सम्पूर्ण इस्राएल" ने रूसी आक्रमण के समय मसीह पर विश्वास किया; यरूशलेम के वे दो भविष्यद्वक्ता सम्भवतः इसी गुट से थे और जब वे "अपनी गवाही दे चुकेंगे" (प्रका. 11:7) तो पृथ्वी पर मनुष्यों की गवाही शान्त हो जाएगी और स्वर्गदूत खुल्लमखुल्ला उस संसार की गवाही देंगे जो परमेश्वर के साथ युद्ध में है।

स्वर्गदूत की गवाही का संदेश दया का प्रस्ताव नहीं है, क्योंकि लोगों ने **अपना अंतिम विकल्प** या तो पशु की छाप प्राप्त करना या मेम्ने का अनुसरण करना **बना लिया होगा**; अर्थात् वे या तो मसीह विरोधी का अनुरसण करेंगे या यीशु मसीह का अनुसरण करेंगे। क्लेश के दूसरे अर्धभाग में अनुग्रह का कोई सुसमाचार प्रचार नहीं किया जाता है क्योंकि दया का द्वार बंद हो गया है और न्याय केवल बाहर के सब लोगों के लिये ही बचा है।

*"**जो कोई उस पशु और उसकी मूर्ति की पूजा करे,** और अपने माथे या अपने हाथ पर उसकी छाप ले, तो वह परमेश्वर के प्रकोप की मदिरा जो बिना मिलावट के, उसके क्रोध के कटोरे में डाली गई है, पीएगा और पवित्र स्वर्गदूतों के सामने और मेम्ने के सामने आग और गन्धक की पीड़ा में पड़ेगा" (प्रका. 14:9-10)।*

अध्याय 14:14-20 - परमेश्वर के क्रोध का रसकुण्ड तैयार है

इस चरण में मनुष्य के पुत्र जैसा कोई व्यक्ति आकाश के बादलों में प्रकट होता है और स्वर्गदूत स्वर्गीय मंदिर से निकलते हैं; उनका संदेश एक ही है:

"अपना हँसुआ लगाकर लवनी कर, क्योंकि लवने का समय आ पहुँचा है, इसलिये **कि पृथ्वी की खेती पक चुकी है**... अपना उत्तम हँसुआ लगाकर पृथ्वी की दाखलता के गुच्छे काट ले; क्योंकि **उसकी दाख पक चुकी है।**

तब उस स्वर्गदूत ने पृथ्वी पर अपना हँसुआ लगाया, और पृथ्वी की दाखलता का फल काटकर, अपने **परमेश्वर के प्रकोप के बड़े रसकुण्ड** में डाल दिया। और नगर के बाहर उस रसकुण्ड में दाख रौंदे गए, और रसकुण्ड में से इतना लहू निकला कि घोड़ों के लगामों तक पहुँचा, और सौ कोस तक बह गया" (प्रका. 14:15-20)।

क्लेश का दूसरा अर्धभाग
प्रकाशितवाक्य 15 से 18 अध्याय

अध्याय 15 "अंतिम सात विपत्तियों" अर्थात् सात शीशियों (कटोरे) वाले न्यायों के साथ सात स्वर्गदूतों के स्वर्गीय मंदिर में से निकलते हुए का वर्णन करता है।

क्लेश के दूसरे अर्धभाग में दुष्टात्मा से ग्रस्त मसीह विरोधी समूचे संसार पर कब्जा कर लेगा और विश्वासी इस्राएल देश को पूरी तरह से नष्ट करने के लिये अपने सभी संसाधनों का उपयोग करेगा। हालाँकि, परमेश्वर अपने छुड़ाए हुए लोगों की रक्षा करेगा और उनके लिये लड़ेगा। मसीह विरोधी द्वारा एकत्रित की गई शक्तियों का न्याय मसीह विरोधी के राज्य और उसके प्रति वफादारी रखने वाले सभी लोगों के विरुद्ध निर्देशित सात व्यापक न्यायों के द्वारा किया जाएगा। भेद बेबीलोन, अर्थात् धर्मत्यागी मसीही जगत जिसने मसीह विरोधी को सत्ता में आने में सहायता की, जला दिया जाएगा और फिर महिमा और सामर्थ्य में मसीह वापस आएगा।

परमेश्वर उस पशु और उस पशु की पूजा करने वाले सभी लोगों के विरुद्ध अपना न्याय इस प्रकार निर्देशित करेगा:

- पशु की छाप पाने वाले सब लोगों पर एक दुःखदायी फोड़ा निकलेगा, समुद्र लहू में बदल जाएगा (प्रका. 16:2)।
- समुद्र लहू में बदल जाएगा और नदियाँ एवं झील जैसे पानी के सोते लहू में बदल जाएँगे (प्रका. 16:3-7)
- सूर्य मनुष्यों को झुलसा देगा और उस पशु के पूरे साम्राज्य पर अंधेरा छा जाएगा (प्रका. 16:8-9)।
- उस पशु का राज्य "अंधकार से भरा" होगा (प्रका. 16:10)
- अंत में, फरात नदी सूख जाएगी जिससे "पूर्व दिशा के राजाओं" की सेनाओं के लिये इस्राएल देश के हर–मगिदोन में अंतिम संघर्ष के निमित्त आने का रास्ता बन जाएगा (प्रका. 16:12-16)।

यह अंतिम संघर्ष परमेश्वर और शैतान के बीच खुल्लमखुल्ला युद्ध होगा। मसीह स्वर्ग की सेनाओं का नेतृत्व करेगा और मसीह विरोधी शैतान की सेनाओं का नेतृत्व करेगा। हालाँकि, इस युद्ध में प्रभु स्वयं अपने विरुद्ध खड़ी सभी सेनाओं को नष्ट कर देगा। फिर बिजलियाँ, और शब्द, और गर्जन, और एक ऐसा बड़ा भूकम्प, जो इससे पहले आए किसी भी भूकंप से भी बड़ा होगा, संसार को हिला देगा। वेश्याओं की माता, अर्थात् बड़े बेबीलोन को, जिसका मुख्यालय रोम में है, प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के 17 और 18 अध्याय में किए गए वर्णन के अनुसार जला दिया जाएगा। परमेश्वर उन दस राजाओं का उपयोग करेगा जो भेद बेबीलोन पर आक्रमण करने और उसे जलाने के लिये उस पशु को अपनी शक्ति देते हैं।

आखिरकार धर्मत्यागी मसीही जगत को नष्ट कर दिया गया – अध्याय 17 और 18

अध्याय 17 और 18 में हमें "भेद बेबीलोन वेश्याओं की माता" (मूर्तिपूजा) के न्याय का विस्तृत विवरण प्रदान किया गया है।

सातवीं तुरही की घोषणा
सात "अंतिम विपत्तियाँ"

"एक समय + समयों + आधे समय तक", = साढ़े तीन वर्ष = *42 महीने = 1,260 दिन (प्रका. अध्याय 6 से 9)*

क्योंकि उस समय ऐसा भारी क्लेश होगा, जैसा जगत के आरम्भ से न अब तक हुआ और न कभी होगा।*
यदि वे 22 दिन घटाए न जाते तो कोई प्राणी न बचता, परन्तु चुने हुओं के कारण वे दिन घटाए जाएँगे।
(मत्ती 24:21-22)।

पशु ने शैतान और पुनर्जीवित रोमन साम्राज्य (ईयू) के दस राजाओं द्वारा संप्रभु शक्ति दी।

मनुष्य पशु, उसकी छवि और शैतान की पूजा करते हैं। जो पशु को शक्ति देता है।

सात स्वर्गदूत सात शीशियों (कटोरे) के साथ संलग्न हैं जो मुख्य रूप से पशु और उसके अनुयायियों पर निर्देशित "सात अंतिम विपत्तियां" हैं। पहला प्याला उन सभी पर "गंभीर पीड़ा " का कारण बनता है **जो पशु की आराधना करते हैं**। पांचवा प्याला **पशु के राज्य में** "अंधेरा" लाता है। पुनर्जीवित रोमन साम्राज्य।

क्लेशकाल की पहली छमाही में पृथ्वी के एक तिहाई हिस्से पर गिरने वाले फैसले अब समुद्र और नदियों को प्रदूषित करने वाले वैश्विक बन गए हैं और चिलचिलाती गर्मी की लहरें हैं।

इस्राएल परमेश्वर द्वारा तैयार किए गए स्थान में सुरक्षित रखा जाएगा और एक ऐसे राष्ट्र द्वारा पोषित किया जाएगा जिसके पास एक महान उकाब के दो पंख हैं - संयुक्त राज्य अमेरिका?

इस्राएल अपने अस्तित्व के लिए लड़ रहा होगा, और चूँकि वे परमेश्वर पर भरोसा कर रहे हैं, इसलिए वे "लकड़ियों के बीच आग का चूल्हा" और पड़ोसी राष्ट्रों के बीच "एक पूले में आग की मशाल"के समान होगा (जकर्याह 12:6)।

10 राजा रोम कालक्रम में रहस्यमय बेबीलोन (वेटिकन) को जलाएंगे

पशु यरूशलेम के खिलाफ "सभी राष्ट्रों" को इकट्ठा करने के लिए राक्षसी शक्तियों का उपयोग करेगा, हरमगिदोन की लड़ाई के लिए।

मसीह अपनी दुल्हन के साथ जैतून के पर्वत पर आता है और राष्ट्रों के लोगों को दण्ड देता है। **यह दूसरा वैश्विक भूकंप है** क्योंकि पशु और झूठे पैगंबर मारे गए और आग की झील में डाल दिए गए।

सातवीं तुरही ने सात शीशियों (कटोरा) का न्याय जारी किए (प्रका 16 से 18)

क्लेशकाल के दूसरे भाग में घटनाओं का कालक्रम
प्रकाशितवाक्य अध्याय 15-19

पवित्रशास्त्र में, मूर्तिपूजा को आत्मिक वेश्यावृत्ति के रूप में वर्णित किया गया है। जब इस्राएल मूर्तियों की ओर फिर गया, तो परमेश्वर ने उस देश पर यहोवा की बेवफा पत्नी होने का आरोप लगाया, जैसा कि होशे की पुस्तक में देखा जा सकता है। बेबीलोन में आए जलप्रलय के बाद वहाँ मूर्तिपूजा आरम्भ हुई और यह समूचे संसार में, विशेष करके कैथोलिक कलीसिया में फैल गई। हजारों "पवित्र लोग" और भक्त लोग उनकी मूर्तियों के साथ-साथ यीशु मसीह की मूर्ति के सामने भी दण्डवत होते हैं और प्रार्थना करते हैं। कैथोलिक मास विवाहों, अंत्येष्टियों और अन्य विशेष अवसरों पर दोहराया जाने वाला एक निंदनीय और मूर्तिपूजक बुतपरस्त बलिदान है। स्वर्ग की रानी के रूप में मरियम की बड़ाई करना उसे एक प्राचीन देवता बनाता है, जिसकी बाइबल में निंदा की गई है (यिर्म. 44:15-27)।

यह वेश्या स्त्री उस पशु की सवारी कर रही है जो इस बात की ओर संकेत करती है कि वह उस पशु को सत्ता में लाने के लिये मार्गदर्शन कर रही है। उस पशु के द्वारा अपने आप को परमेश्वर घोषित करने के बाद उसके पास उसका कोई और उपयोग नहीं होगा।

उस पशु पर सवार वेश्या स्त्री की छवि यूनानी भाषा की पौराणिक कथाओं से सम्बन्धित है जहाँ सूर के राजा की बेटी को देवताओं के पिता ज्यूस ने आकर्षित किया था, परन्तु उसने उसकी पेशकश को अस्वीकार कर दिया था। ज्यूस ने फिर खुद को एक बैल में बदलकर उस युवती के साथ मित्रतापूर्ण व्यवहार किया। जब वह उसकी पीठ पर सवार हुई तो उसने भूमध्य सागर में छलांग लगा दी और तैरकर क्रेते तक पहुँच गया, जहाँ उसने खुद को वापस ज्यूस में बदलकर उससे विवाह कर लिया। उसका नाम यूरोपा था और उसी के नाम पर यूरोप का नाम पड़ा।

समय दिसंबर 1,1991

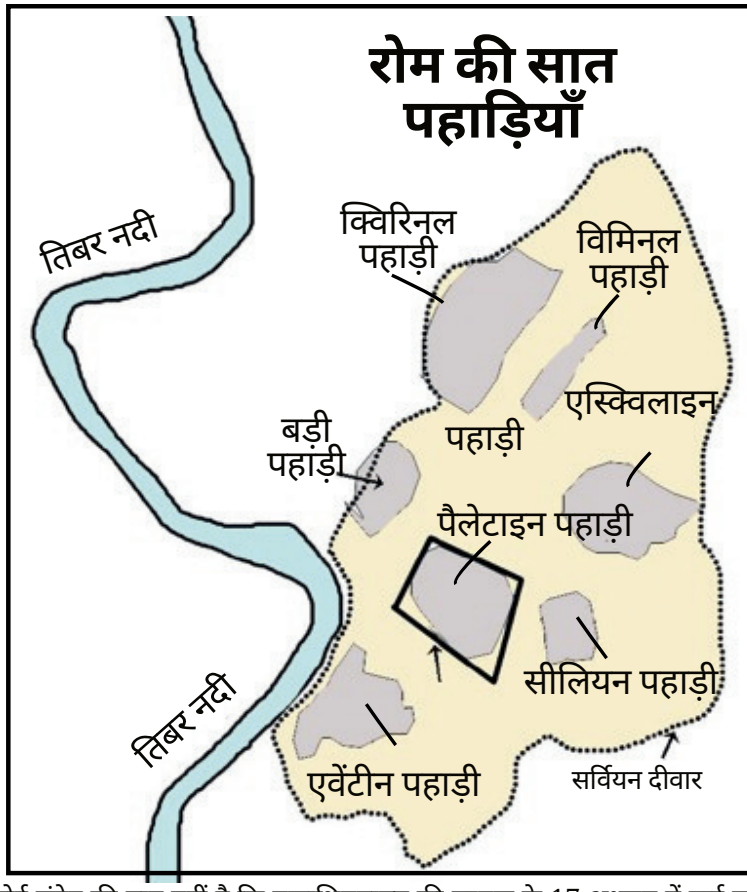

इसमें कोई संदेह की बात नहीं है कि प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के 17 अध्याय में पाई जाने वाली उस स्त्री की पहचान के लिये दिए गए सभी सुरागों का उत्तर वेटिकन देती है।

- वह अत्यधिक धनवान है (प्रका. 17:4)
- उसका प्रभाव वैश्विक और राजनीतिक है (प्रका. 17:15)
- वह यीशु मसीह के अनगिनत शहीदों के लहू की दोषी है (प्रका. 17:6)
- वह अपने हाथ में घृणित वस्तुओं से और उसके व्यभिचार की अशुद्ध वस्तुओं से भरा हुआ सोने का रखती है (प्रका. 17:4), और
- • वह रोम की सात पहाड़ियों पर विराजमान है (प्रका. 17:9)। उसने ई.प.96 में पृथ्वी के राजाओं पर शासन किया (प्रका. 17:18)।

जो लोग इस बात की शिक्षा देत हैं कि इराक के प्राचीन शहर बेबीलोन का पुनर्निर्माण किया जाएगा, या यह कि वह भेद बेबीलोन मक्का है, तो उनके सिद्धांत का समर्थन करने के लिये कोई धर्मग्रंथ नहीं मिलता। परमेश्वर ने स्पष्ट रूप से कहा है कि प्राचीन बेबीलोन का पुनर्निर्माण कभी नहीं किया जाएगा (यिर्म. 51:64)। मक्का सात पहाड़ियों पर नहीं बल्कि एक घाटी में स्थित है (प्रका. 17:9,18)। इसके अलावा, मक्का समुद्रतट से इतनी दूर है कि रोम के तट तक पहुँचने पर नाविक उसे जलते हुए नहीं देख सकते।

बचाव के लिये इस्राएल का युद्ध

उस क्लेश के दूसरे अर्धभाग के दौरान इस्राएली छुड़ाए गए लोग होंगे और जब वे मसीह विरोधी की शक्तियों से बचाव करेंगे तो परमेश्वर उनके पक्ष में होगा। जकर्याह स्पष्ट रूप से कहता है कि "यहूदा भी यरूशलेम में लड़ेगा" (जक. 14:14) और यरूशलेम को "चारों ओर की सब जातियों के लिये लड़खड़ा देने के नशा का कटोरा ठहरा दूँगा; और जब यरूशलेम घेर लिया जाएगा तब यहूदा की दशा भी ऐसी ही होगी" (जक. 12:2)। परमेश्वर "यहूदा के अधिपतियों को ऐसा कर देगा, जैसी लकड़ी के ढेर में आग भरी अँगीठी या पूले में जलती हुई मशाल होती है, अर्थात् वे दाहिने बाँए चारों ओर के सब लोगों को भस्म कर डालेंगे" (जक. 12:6)।

मसीह विरोधी इस्राएल को धोखा देने में सफल नहीं होगा और इसलिये तीन अशुद्ध आत्माएँ यरूशलेम पर अंतिम हमले में पृथ्वी के सभी राजाओं को संगठित करती हैं। हालाँकि, इसका कोई लाभ नहीं होगा "तब यहोवा निकलकर उन जातियों से ऐसा लड़ेगा जैसा वह संग्राम के दिन में लड़ा था। और उस दिन वह जैतून के पर्वत पर पाँव रखेगा" (जक. 14:3-4)।

दूसरा आगमन और सहस्राब्दी राज्य: प्रकाशितवाक्य 19 और 20 अध्याय

अध्याय 19 का आरम्भ स्वर्ग में गाए जाने वाले हालेलूय्याह के स्तुतिगान से होती है। यूहन्ना ने लिखा: "इसके बाद मैंने स्वर्ग में मानो बड़ी भीड़ को ऊँचे शब्द से यह कहते सुना, "हालेलूय्याह! उद्धार, और महिमा, और सामर्थ्य हमारे परमेश्वर ही का है। क्योंकि उसके निर्णय सच्चे और ठीक हैं, इसलिये कि उसने उस बड़ी वेश्या का... न्याय किया... है" (प्रका. 19:1-3)।
इससे हम इस बात को सीखते हैं कि जब परमेश्वर बुराई का न्याय करता है तो आनन्दित होना बिल्कुल सही है। हम पूरे स्वर्ग के साथ आनन्द मना सकते हैं।

मसीह की पवित्र दुल्हन का प्रदर्शन - प्रकाशितवाक्य 19:7-10

स्तुतिगान जारी रहता है क्योंकि मसीह की सच्ची दुल्हन को "शुद्ध और चमकदार महीन मलमल" में प्रदर्शित किया जाता है जो "पवित्र लोगों की धार्मिकता" या "पवित्र लोगों के धार्मिक कार्य" हैं। इस आयत के यूनानी भाषा के पाठ में **धार्मिकता बहुवचन में लिखा गया है**, जो इस बात को दर्शाता है कि मसीह की आरोपित धार्मिकता देखने में नहीं है, बल्कि विश्वासियों के धर्मी कार्य दृष्टि में हैं। मसीह की "उन सब लोगों में महिमा होगी जो विश्वास करते हैं" (2 थिस्स. 1:10)। मसीह के लिये की गई प्रत्येक विश्वासयोग्य सेवा को मसीह के न्याय आसन पर पुरस्कृत किया जाएगा और उस दिन मसीह की महिमा प्रदर्शित की जाएगी जब मसीह "अपने पवित्र लोगों में महिमा पाने, और सब विश्वास करनेवालों में आश्चर्य का कारण होने को आएगा" (2 थिस्स. 1:10)।
पवित्र लोगों के मुकुट अच्छी दौड़ के लिये स्टेफ़नोस (laurels) होते हैं, परन्तु राजाओं के राजा के द्वारा पहने जाने वाले कई मुकुट डायडेम (राजकीय मुकुट) होते हैं। पुरस्कार के मुकुट राजाओं के राजा और प्रभुओं के प्रभु की स्तुति और महिमा में गूंजेंगे, जिन्हें "बहुत से राजमुकुट" से सुशोभित किया जाएगा (प्रका. 19:12)।

मेम्ने का विवाह भोज

मसीह और उसकी कलीसिया का विवाह स्वर्ग में होता है, क्योंकि यीशु "विवाह से लौट आएगा" (लूका 12:36)। यह विवाह भोज **पृथ्वी पर** होगा, और इस्राएल उन सभी "धन्य" लोगों के साथ अतिथि होगा जो क्लेश से बच गए हैं - ये "भेड़ें" हैं जो "उसकी महिमा के सिंहासन" के सामने आती हैं (मत्ती 25:31-34)। ये "मेरे पिता के धन्य लोग" हैं जो सहस्राब्दी राज्य के उत्तराधिकारी हैं (मत्ती 25:33)।

"धन्य वे हैं, जो मेम्ने के विवाह के भोज में बुलाए गए हैं" (प्रका. 19:9)

दस कुँवारियों का दृष्टांत (मत्ती 25:1-13) कलीसिया के अस्तित्व में आने से पहले यहूदी शिष्यों को दिया गया था और इसमें दुल्हन का उल्लेख नहीं किया गया है। ये "बुद्धिमान कुँवारियाँ" वे हैं जो विवाह भोज के लिये तैयार हैं। यह युग के अंत में इस्राएल के लिये तैयार रहने की चेतावनी है।

राजा के पुत्र के विवाह भोज का दृष्टांत इस्राएल देश पर भविष्यद्वाणी थी। निमंत्रण तो भेजे गए थे, परन्तु आमंत्रित किए गए लोगों ने "इसे नजरअंदाज कर दिया" और राजा के दासों को "पकड़कर उनका अनादर किया और मार डाला" (मत्ती 22:5-6)। राजा को "क्रोध आया, और उसने अपनी सेना भेजकर ... उनके नगर को फूँक दिया" (मत्ती 22:7)।

यीशु मसीह के पहले आगमन पर राज्य का सुसमाचार इस्राएल को मेम्ने के विवाह भोज में शामिल होने का निमंत्रण था, परन्तु उन्होंने निमंत्रण को अस्वीकार कर दिया, इसलिये परमेश्वर ने रोमी लोगों को उनके नगर को नष्ट करने के लिये भेजा; जो ई.प.70 में यरूशलेम था। तब से यह निमंत्रण उन सब लोगों को भेज दिया गया है जो प्रतिक्रिया देंगे और राजा के पुत्र का सम्मान करेंगे।

इस कलीसियाई युग में परमेश्वर अन्यजातियों से "अपने नाम के लिये एक लोग" निकाल रहा है (प्रेरितों 15:14) और ये लोग "मेम्ने की पत्नी" होंगे। क्लेश के दौरान मेहमानों के रूप में "मेम्ने के विवाह भोज" में शामिल होने के लिये निमंत्रण फिर से भेजा जाएगा; जो लोग प्रतिक्रिया देंगे उन्हें विवाह भोज में और राज्य में आशीष मिलेगी।

यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला पुराने नियम का एक पवित्र जन था परन्तु वह अपने आप को केवल "दूल्हे के मित्र" के रूप में देखता था (यूहन्ना 3:29)।

स्वर्ग खुल गया - "जब प्रभु यीशु... स्वर्ग से प्रगट होगा..." (2 थिस्स. 1:7)

अध्याय 4 में कलीसिया को ले लेने के लिये एक दरवाजा खोला गया है, परन्तु क्लेश के अंत में स्वर्ग खोला जाएगा और मसीह स्वर्ग की सेनाओं और "अपने सब पवित्र लोगों" के साथ आएगा (1 थिस्स. 3:13)।

दूसरा आगमन न्याय लाने के लिये है क्योंकि प्रभु "न्याय और लड़ाई" करने के लिये आता है (प्रका. 19:11) और वह...

"धधकती हुई आग में ... जो परमेश्वर को नहीं पहचानते, और हमारे प्रभु यीशु के सुसमाचार को नहीं मानते उनसे पलटा लेगा" (2 थिस्स. 1:8)।

जब मसीह वापस आएगा तो उस समय दया की खोज करने में बहुत देर हो जाएगी। कुछ लोग इस बात की शिक्षा देते हैं कि जब इस्राएल दूसरे आगमन पर यीशु मसीह को देखेगा तो वे प्रभु **पर विश्वास** करेंगे, परन्तु ऐसा होना असम्भव है। जब यहूदी यीशु मसीह को देखेंगे तो शोक मनाएँगे परन्तु जब वे सदियों की अस्वीकृति को याद करेंगे तो यह एक बचाए गए राष्ट्र के रूप में होगा। जब प्रभु वापस आएगा तो न तो यहूदी को बचाया जा सकेगा और न ही गैर-यहूदी को, जैसा कि भजनकार ने लिखा है:

"वह पृथ्वी का न्याय करने को आनेवाला है। वह धर्म से जगत का, और सच्चाई से देश-देश के लोगों का न्याय करेगा" *(भजन 98:9)*।

पुराने और नये नियम में पाए जाने वाले ऐसे कम से कम 23 पवित्रशास्त्र के पद हैं जो विशेष रूप से अपने राज्य की स्थापना के लिये प्रभु के महिमा में होकर पृथ्वी पर आने की बात करते हैं। वे हैं: मत्ती 16:28; 24:29-31; मरकुस 13:24-27; लूका 17:24; 21:25-27; 2 थिस्स. 1:7-10; 2:8; भजन. 96:13; 97:1-6; 98:9; दानि. 2:44-45; 7:13-14; यशा. 24:21-23; 26:21; 59:20; 63:1; 66:15; योएल 3:12-17; जक. 14:1-4; तीतुस 2:13; याकूब 5:7; प्रका. 19:11-21.

मसीह के आने का उद्देश्य स्पष्ट है:

1) वह देशों का न्याय करने आता है (भजन 96:18; 97:1-6; 98:9)।
2) वह मसीह विरोधी और मेम्ने के विरुद्ध युद्ध करने वाले सभी लोगों को नष्ट करने के लिये आता है (प्रका. 19:18-21; यशा. 24:21-23)।
3) वह विश्वासियों के सतानेवालों से प्रतिशोध लेने आता है (प्रका. 6:10-11; यशा. 63:16. इब्रा. 10:30-31)।
"बदला लेने का दिन मेरे मन में था, और मेरी छुड़ाई हुई प्रजा का वर्ष आ पहुँचा है" (यशा. 63:4)।
4) वह अपनी प्रजा इस्राएल को बचाने के लिये आता है (योएल 3:12-17; जक. 14:2-3)।
5) वह विवाह के बाद अपनी दुल्हन को प्रदर्शित करने आता है (लूका 12:26; प्रका. 19:7-8; 2 थिस्स. 1:10)।
6) वह 1,000 वर्षों तक पृथ्वी पर शासन करने के लिये आता है (प्रका. 20:4-6; जक. 14:9; योएल 3:17; दानि. 7:27)।
7) वह शैतान और उसकी दुष्टात्माओं को बाँधने के लिये आता है (प्रका. 20:1-3; यशा. 24:21)।

मसीह की वापसी पर आनन्द और दुःख

इस्राएल के द्वारा मसीह का स्वागत किया जाएगा जैसा यशायाह ने लिखा:
"उस समय यह कहा जाएगा, "देखो, हमारा परमेश्वर यही है; ***हम इसी की बाट जोहते आए हैं, कि वह हमारा उद्धार करे। यहोवा यही है;*** *हम उसकी बाट जोहते आए हैं। हम उससे उद्धार पाकर मगन और आनन्दित होंगे" (यशा. 25:9)।*

हालाँकि, इस्राएल अपने ठुकराए जाने के वर्षों को याद करेगा:
"तब वे मुझे ताकेंगे अर्थात् जिसे उन्होंने बेधा है, और उसके लिये ऐसे रोएँगे जैसे एकलौते पुत्र के लिये रोते-पीटते हैं, और ऐसा भारी शोक करेंगे, जैसा पहलौठे के लिये करते हैं। उस समय यरूशलेम में इतना रोना-पीटना होगा जैसा मगिद्दोन की तराई में हदद्रिम्मोन में हुआ था..." (जक. 12:10-14)।
यह योशिय्याह की मृत्यु के बाद के विलाप की तरह होगा जब उसे मगिद्दो में फिरौन-नको द्वारा मार दिया गया था, जैसा कि 2 इति. 35:24-25 में दर्ज है।
जीवित राष्ट्रों के न्याय के बाद जो लोग "अनन्त आग" में डाल दिये जाएँगे (मत्ती 25:41) वे पश्चाताप से भर जाएँगे।
"जगत (युग) के अन्त में ऐसा ही होगा; स्वर्गदूत आकर दुष्टों को धर्मियों से अलग करेंगे, और उन्हें आग के कुण्ड में डालेंगे। वहाँ रोना और दाँत पीसना होगा" (मत्ती 13:49-50)।
लोग पश्चाताप में विलाप करते हैं और पश्चातापहीन क्रोध में अपने दाँत पीसते हैं। सात बार यीशु ने "इस युग के अंत" में देशों के न्याय के संदर्भ में "रोने और दांत पीसने" की बात की थी (मत्ती 8:12; 13: 42,50; 22:32; 24:51; 25:30; लूका 13:28)।

उस पशु का न्याय

जब मसीह वापस आएगा तो उस पशु ने पृथ्वी के सब राजाओं को मसीह के आगमन पर उसके विरुद्ध लड़ने के लिये इकट्ठा किया होगा - "उस... के और उसकी सेना से लड़ने के लिये" (प्रका. 19:19)। उस पशु को और झूठे भविष्यद्वक्ता दोनों को "ले जाकर" मार दिया जाएगा, और पुनरुत्थान का शरीर देकर आग की झील में जीवित ही फेंक दिया जाएगा। शक्तिशाली स्वर्गदूत उन्हें आग की झील में फेंक देंगे (मत्ती 13:49-50)।

स्वर्गारोहण और 1,44,000 यहूदियों की गवाही के बाद क्लेश के मुद्दे बहुत स्पष्ट हो जाएँगे - इस्राएल का अद्भुत हृदय परिवर्तन, परमेश्वर की सामर्थ्य से रूसी/इस्लामिक शक्तियों का विनाश, और आकाश में उड़ते हुए घोषणा करते हुए स्वर्गदूत की "अनन्त सुसमाचार" की गवाही कि किसी भी व्यक्ति के लिये मसीह विरोधी का अनुसरण करना और शैतान की पूजा करना पवित्र आत्मा के विरुद्ध निन्दा होगी। इनके लिये बड़े श्वेत सिंहासन से न्याय किए जाने की प्रतीक्षा नहीं की जाएगी।

अधोलोक और नरकलोक

अधोलोक (नरक) और आग की झील के बीच अंतर करना महत्वपूर्ण है। अंग्रेजी की के.जे.वी. बाइबल में दो अलग-अलग यूनानी भाषा के शब्दों का अनुवाद "नरक" किया गया है - अधोलोक और नरकलोक। अधोलोक वह स्थान है जहाँ जिन लोगों को बचाया नहीं गया उनकी आत्माएँ मृत्यु के बाद बड़े श्वेत सिंहासन के सामने दण्ड के लिये पुनरुत्थान की प्रतीक्षा करने के लिये जाती हैं (प्रका. 20:11-15)।

नरकलोक वह स्थान है जहाँ जिन लोगों को बचाया नहीं गया ऐसे पुनरुत्थित लोगों को बड़े श्वेत सिंहासन के सामने न्याय प्राप्त करने के बाद डाल दिया जाता है। इसे "आग की झील" या "अनन्त आग" भी कहा जाता है। यूनानी भाषा के शब्द नरकलोक (गेहन्ना) का प्रयोग पवित्रशास्त्र के निम्नलिखित पदों में किया गया है: मत्ती 5:22,29-30; 10:28; 18:9; 23:15,33; मरकुस 9:43,45,47; लूका 12:5 और याकूब 3:6, जहाँ हम देखते हैं कि यीशु ने "शरीर और आत्मा" को नरकलोक (गेहन्ना) में डालने की बात कही थी। यह केवल पुनर्जीवित शरीर को संदर्भित कर सकता है और इसलिये यह आग की झील को संदर्भित करता है। यीशु ने कहा:

"जो शरीर को मार सकते है, पर आत्मा को मार नहीं सकते, उनसे मत डरना; पर उसी से डरो, जो आत्मा और शरीर दोनों को नरक (गेहन्ना) में नाश कर सकता है" (मत्ती 10:28)।

जब मसीह के दूसरे आगमन के बाद पशु, झूठे भविष्यद्वक्ता और पशु की छाप लगे हुए लोगों को आग की झील में डाल दिया जाएगा, तो प्रभु कहेगा,

"हे श्रापित लोगों, मेरे सामने से उस अनन्त आग में चले जाओ, जो शैतान और उसके दूतों के लिये तैयार की गई है" (मत्ती 25:41)।

इस प्रकार क्लेश के काल से जिन लोगों को नहीं बचाया गया उनको बड़े श्वेत सिंहासन के सामने न्याय पाने के लिये सहस्राब्दी राज्य के 1,000 वर्षों के अंत तक प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ेगी, बल्कि तुरन्त आग की झील में जाना होगा जो "शैतान और उसके स्वर्गदूतों के लिये तैयार की गई है" (मत्ती 25:41)

शैतान सहस्राब्दी के दौरान अधोलोक के **अथाह कुण्ड वाले भाग में जाता है**, परन्तु वह सहस्राब्दी के अंत में नरकलोक में जाता है जो उसके लिये उस समय तैयार किया गया था जब उसने परमेश्वर के खिलाफ विद्रोह किया था।

मसीह के दूसरे आगमन पर कुछ न बचाए गए और कुछ बचाए गए लोगों के पुनरुत्थान की भविष्यद्वाणी दानिय्येल द्वारा की गई थी:

"तब ऐसे संकट का समय होगा, जैसा किसी जाति के उत्पन्न होने के समय से लेकर अब तक कभी न हुआ होगा; परन्तु उस समय तेरे लोगों में से जितनों के नाम परमेश्वर की पुस्तक में लिखे हुए हैं, वे बच निकलेंगे। और जो भूमि के नीचे सोए रहेंगे उनमें से बहुत से लोग जाग उठेंगे, कितने तो सदा के जीवन के लिये, और कितने अपनी नामधराई और सदा तक अत्यन्त घिनौने ठहरने के लिये" (दानि. 12:1-2)।

केवल क्लेश के शहीदों को ही जिन्हें पुनर्जीवित किया जाता है बचाया जाता है। इस पुनरुत्थान में न तो पुराने नियम और न ही कलीसियाई युग के पवित्र लोगों की कोई भूमिका है (प्रका. 20:4-5)। यूहन्ना ने लिखा:

"मैंने उनकी आत्माओं को उनकी आत्माओं को भी देखा, जिनके सिर यीशु की गवाही देने और परमेश्वर के वचन के कारण काटे गए थे, और जिन्होंने न उस पशु की... पूजा की थी... वे जीवित होकर मसीह के साथ हजार वर्ष तक राज्य करते रहे। जब तक ये हजार वर्ष पूरे न हुए तब तक शेष मरे हुए न जी उठे। यह तो पहला पुनरुत्थान है।"

"शेष मरे हुओं" को 1,000 वर्ष बाद पुनर्जीवित किया जाता है इसलिये **निश्चित रूप से कोई सामान्य पुनरुत्थान नहीं होता है।**

मसीह के सहस्राब्दी राज्य में जीवन

मसीह आकर पृथ्वी पर राज्य करेगा। जकर्याह ने लिखा:

"तब यहोवा सारी पृथ्वी का राजा होगा; और उस दिन एक ही यहोवा और उसका नाम भी एक ही माना जाएगा" (जक 14:9)।

यशायाह ने लिखा:

"तब चन्द्रमा संकुचित हो जाएगा और सूर्य लज्जित होगा; क्योंकि सेनाओं का यहोवा सिय्योन पर्वत पर और यरूशलेम में अपनी प्रजा के पुरनियों के सामने प्रताप के साथ राज्य करेगा" (यशा. 24:23)।

मीका ने लिखा:

"लंगड़ों को मैं बचा रखूँगा, और दूर किए हुओं को एक सामर्थी जाति कर दूँगा; और यहोवा उन पर सिय्योन पर्वत के ऊपर से सदा राज्य करता रहेगा" (मीका 4:7)

जब मसीह राज्य करेगा उस समय:

i) धर्मी सरकार पृथ्वी को भर देगी (यशा. 11:9)।
ii) प्रत्येक यहूदी देश में लौट आएगा (यहेज. 39:25-29)।
iii) 12 प्रेरित इस्राएल के 12 गोत्रों का न्याय करेंगे (मत्ती 19:28)।
iv) दाऊद समूचे इस्राएल का अधिपति होगा (होशे 3:5)।
v) राजा के रूप में यहूदी लोग मसीह के अधीन शासन करेंगे (यशा. 60:12; यशा. 2:2)।
vi) यहूदियों को राष्ट्रों के द्वारा सम्मानित किया जाएगा (जक. 8:23)।
vii) यहूदी लोग संसार को व्यवस्था सिखाएँगे (यशा. 2:3)।

viii) युद्ध बंद हो जाएँगे (यशा. 2:4)।
ix) पशु-पक्षी शान्ति से रहेंगे (यशा. 11:6-9; 65:25; होशे. 2:18)।
x) निर्जन स्थानों में जीवन आरम्भ होगी (यशा. 35:1) (यहे. 34:26-27)।
xi) एक नया सहस्राब्दी मंदिर बनाया जाएगा और परमेश्वर की महिमा देखी जाएगी (यहेज. 43:2)।
xii) यहूदी पुरोहित मसीह की मृत्यु की स्मृति में सहस्राब्दी मंदिर में बलिदान चढ़ाएँगे (यहेज. 44:15; जक. 14:21)।
xiii) अन्यजाति लोग प्रभु के पर्व मनाएँगे (जक. 14:16)।
"मैं उनके साथ शान्ति की वाचा बाँधूँगा; वह सदा की वाचा ठहरेगी; और मैं उन्हें स्थान देकर गिनती में बढ़ाऊँगा, **और उनके बीच अपना पवित्रस्थान सदा बनाए रखूँगा**। मेरे निवास का तम्बू उनके ऊपर तना रहेगा; और मैं उनका परमेश्वर हूँगा, और वे मेरी प्रजा होंगे। **जब मेरा पवित्रस्थान उनके बीच सदा के लिये रहेगा,** तब सब जातियाँ जान लेंगी कि मैं यहोवा इस्राएल का पवित्र करनेवाला हूँ" (यहेज. 37:26-28)।
xiv) मृत सागर को नया बनाया जाएगा और मछुआरे वहाँ अपना जाल डालेंगे (यहेज. 47:1-10; जक 14:8; योएल 3:18)

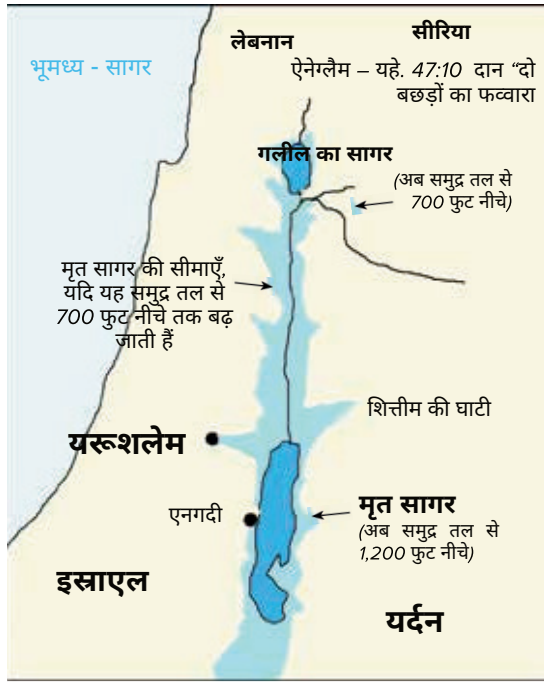
भूमध्य - सागर
लेबनान
सीरिया
ऐनेग्लैम – यहे. 47:10 दान "दो बछड़ों का फव्वारा
गलील का सागर
(अब समुद्र तल से 700 फुट नीचे)
मृत सागर की सीमाएँ, यदि यह समुद्र तल से 700 फुट नीचे तक बढ़ जाती हैं
शित्तीम की घाटी
यरूशलेम
एनगदी
मृत सागर
(अब समुद्र तल से 1,200 फुट नीचे)
इस्राएल
यर्दन

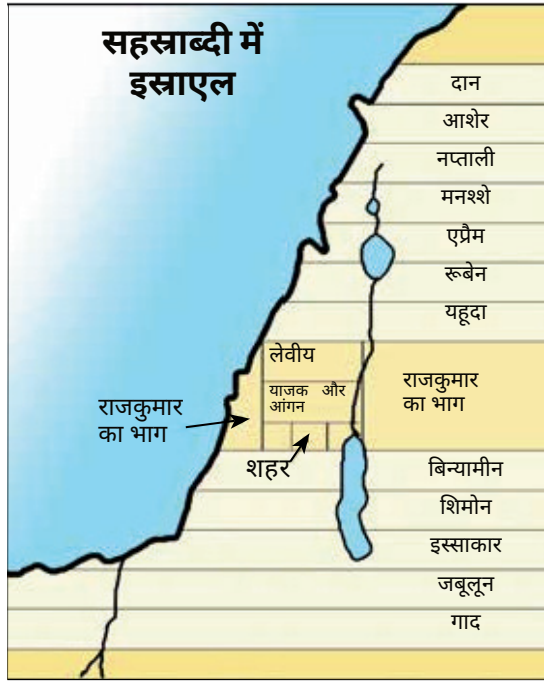
सहस्राब्दी में इस्राएल
दान
आशेर
नप्ताली
मनश्शे
एप्रैम
रूबेन
यहूदा
लेवीय
याजक और आंगन
राजकुमार का भाग
राजकुमार का भाग
शहर
बिन्यामीन
शिमोन
इस्साकार
जबूलून
गाद

यहेजकेल का सहस्त्राब्दी मंदिर- यहे. अध्याय, 40-42

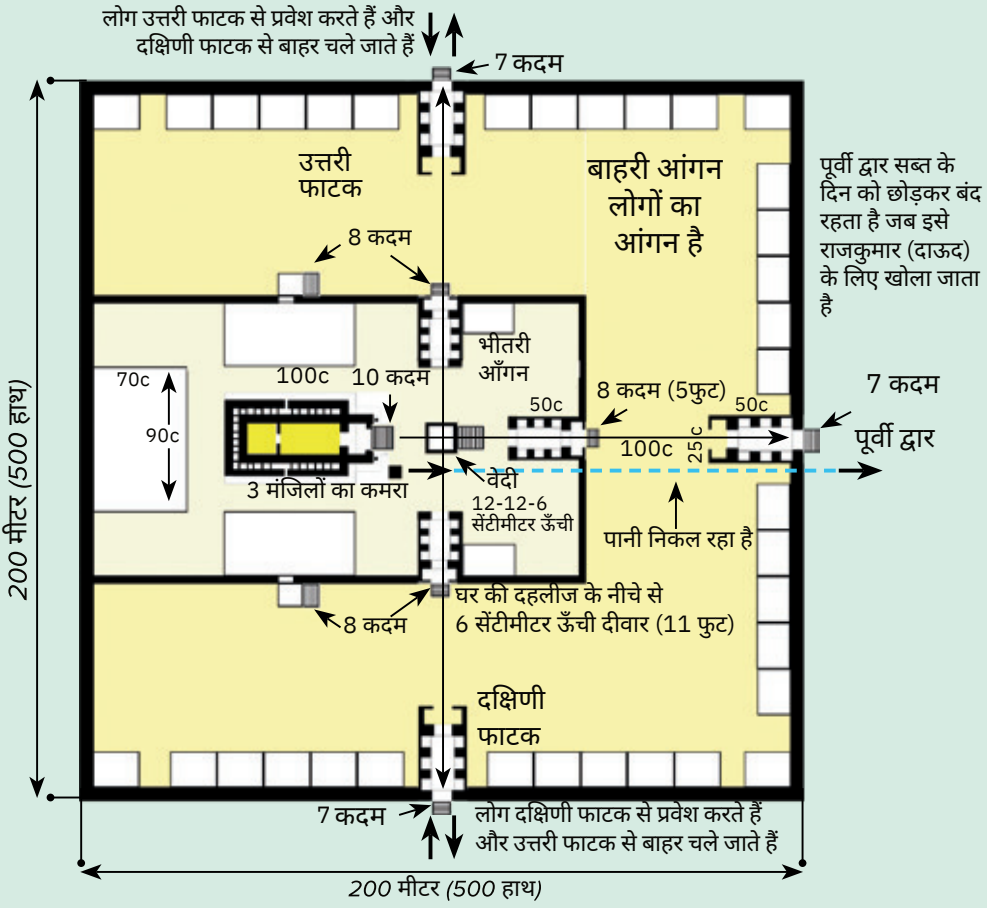

आखिरी विद्रोह

1,000 वर्षों के अंत में शैतान को "थोड़ी देर" के लिये अथाह कुण्ड से मुक्त किया जाएगा और उन देशों का परीक्षण करने की अनुमति दी जाएगी जो 1,000 वर्षों से मसीह के शासन के अधीन हैं। सर्वशक्तिमान परमेश्वर का यह कार्य इस तथ्य को प्रदर्शित करता है कि मनुष्य को स्वतंत्र इच्छा प्रदान की गई है। जिन लोगों से शैतान अपील करेगा वे वे लोगों होंगे जो मसीह के शासन के 1,000 वर्षों के अंत में पृथ्वी पर बचाए नहीं गए होंगे। शैतान को अथाह कुण्ड से मुक्त करके मनुष्यों को अंतिम विकल्प प्रदान कि जाएगा। हम और क्या निष्कर्ष निकाल सकते हैं?

शैतान के पास राष्ट्रों को धोखा देने की स्वतंत्रता कब तक रहेगी? बाइबल कहती है कि यह "थोड़ी देर" के लिये है (प्रका. 20:3)। प्रकाशितवाक्य 12 अध्याय में जब शैतान को स्वर्ग से पृथ्वी पर फेंक दिया जाता है, तो वह जानता है कि "उसका थोड़ा ही समय और बाकी है" (प्रका. 12:12) जो कि 42 महीने है। उस दौरान वह यीशु मसीह के दूसरे आगमन पर उसके विरुद्ध लड़ने के लिये पृथ्वी के राजाओं को संगठित करने में सक्षम होगा।

1,000 वर्षों के सहस्राब्दी राज्य के अंत में, शैतान के पास "प्रिय नगर" में मसीह और इस्राएल देश के खिलाफ विद्रोह में राष्ट्रों को संगठित करने का एक समान कार्य होगा (प्रका. 20:9)। सहस्राब्दी राज्य के अंत में स्थितियाँ काफी भिन्न होंगी। विद्रोह का दायरा बहुत बड़ा प्रतीत होता है, क्योंकि आक्रमणकारी सेना "समुद्र की रेत के बराबर" है और इसमें उनका "सारी पृथ्वी पर फैल जाना" शामिल है। यह परमेश्वर की प्रजा इस्राएल और स्वयं प्रभु के विरुद्ध एक वैश्विक विद्रोह होगा। इस अंतिम विद्रोह का समय सहस्राब्दी राज्य के अंत में होगा। गोग और मागोग फिर से विद्रोह का केंद्र होंगे और इस्राएल पर एक और आक्रण का नेतृत्व करेंगे। हमें इस बात को स्मरण रखना चाहिए कि राजा या अध्यक्ष के समान गोग एक उपाधि है। यह किसी का नाम नहीं है।

गोग के द्वारा दो आक्रमण

कुछ लोग यहेजकेल 38 और 39 अध्याय में वर्णित इस्राएल पर आक्रमण के साथ उस 1,000 वर्ष के अंत में गोग और मागोग के आक्रमण को भ्रमित करते हैं, परन्तु:

i) क्लेश के दौरान गोग की सेना का छठा हिस्सा भाग निकला। उस 1,000 वर्ष के अंत में कोई भी बच नहीं पाया।

ii) यहेजकेल का आक्रमण सीमित संख्या के देशों के द्वारा था, परन्तु अंतिम आक्रमण में **सब देश** शामिल थे।

iii) पहले आक्रमण के बाद रूस जल गया, परन्तु दूसरे आक्रमण के बाद **पूरा स्वर्ग और पृथ्वी** जल गई।

ये 1,000 वर्ष से भी अधिक के अंतराल वाली अलग-अलग घटनाएँ हैं।

पुनरुत्थान से न्याय किये जाने तक - अध्याय 20:11-15

"फिर मैंने एक बड़ा श्वेत सिंहासन और उसको जो उस पर बैठा हुआ है, देखा, जिसके सामने से पृथ्वी और आकाश भाग गए, और उनके लिये जगह न मिली" (प्रका. 20:11)।

प्रभु यीशु के अलावा कोई और सिंहासन पर विराजमान नहीं हो सकता क्योंकि "पिता किसी का न्याय भी नहीं करता, परन्तु न्याय करने का सब काम पुत्र को सौंप दिया है" (यूहन्ना 5:22)।
इस सिंहासन के लिये दया का कोई **मेघधनुष नहीं** है और जो लोग इसके सामने आते हैं वे "मृत्यु और अधोलोक" से आते हैं। मृत्यु शरीर की है। अधोलोक वह स्थान है जहाँ जिन लोगों को बचाया नहीं गया है उनकी आत्मा को शरीर में किए गए कार्यों के लिये अंतिम दण्ड की प्रतीक्षा करने के लिये हिरासत में रखा गया है। **कोई भी बचाया हुआ व्यक्ति कभी भी न्याय के इस सिंहासन के सामने नहीं आएगा।**
प्रत्येक व्यक्ति जो उस बड़े श्वेत सिंहासन के सामने आएगा, उसे आग और गंधक की झील में डाल दिया जाएगा।

"उनमें से हर एक के कामों के अनुसार उनका न्याय किया गया। और मृत्यु और अधोलोक भी आग की झील में डाले गए। यह आग की झील तो दूसरी मृत्यु है। और जिस किसी का नाम जीवन की पुस्तक में लिखा हुआ न मिला, वह आग की झील में डाला गया" (प्रका. 20:13-15)।

दो बातों पर ध्यान दें:

1) न्याय **कार्यों के अनुसार** होता है अर्थात **दण्ड की मात्रा** उनके पाप की मात्रा के अनुरूप होती है (लूका 12:47)।
2) उनका भाग्य इस बात से निर्धारित होता है कि उनका नाम मेम्ने की जीवन की पुस्तक में पाया जाता है या नहीं (प्रका. 20:15)। जब मनुष्य उद्धार पाने से इन्कार करते हैं तो जीवन की पुस्तक से उनके नाम काट दिए जाते हैं (निर्ग. 32:33)।

कोई सामान्य पुनरुत्थान नहीं

दो प्रकार के पुनरुत्थान मौजूद हैं; जीवन के लिये पुनरुत्थान और दण्ड के लिये पुनरुत्थान। जीवन का पुनरुत्थान कई चरणों में होता है: पुराने नियम के पवित्र लोग मसीह के साथ स्वर्ग (शीओल) से उठे (मत्ती 27:52-53); स्वर्गारोहण के समय कलीसिया को उठाया जाएगा और उसका रूपांतरण हो जाएगा (1 थिस्स. 4:13-18); क्लेश के शहीदों को दूसरे आगमन पर पुनर्जीवित किया जाएगा (प्रका. 20:4) और सहस्राब्दी के पवित्र लोगों को 1,000 वर्षों के राज्य के अंत में पुनर्जीवित किया जाएगा (प्रका. 20:5)।
दण्ड का पुनरुत्थान **दो चरणों** में होता है: मसीह विरोधी को मार दिया जाता है और जब मसीह वापस आता है तो उसे पुनरुत्थान वाला शरीर दिया जाता है (दानि. 12:2; मत्ती, 25:41); अन्य सभी लोग जिनको बचाया नहीं गया सहस्राब्दी साम्राज्य के अंत में पुनर्जीवित हो जाते हैं।

नया आकाश और पृथ्वी - 21 और 22 अध्याय

जब बड़े श्वेत सिंहासन का न्याय होता है उसी समय पर, हम पढ़ते हैं कि "पृथ्वी और आकाश भाग गए, और उनके लिये जगह न मिली" (प्रका. 20:11)। इस पवित्रशास्त्र के पद में संदर्भित किया गया आकाश अवश्य ही पृथ्वी के चारों ओर का वायुमंडलीय आकाश होना चाहिए। भजनकार कहता है:
"उसने अपने पवित्रस्थान को बहुत ऊँचा बना दिया, औ**र पृथ्वी के समान स्थिर बनाया, जिसकी नींव उसने सदा के लिये डाली है"** (भजन 78:69; भजन 119:90; भजन 93:1)।
तीन प्रकार के आकाश मौजूद हैं:
पहला आकाश वह वातावरण है जिसमें पक्षी उड़ते हैं। उत्पत्ति 1:20 में हम पढ़ते हैं "पक्षी पृथ्वी के ऊपर आकाश के अन्तर में उड़ें।"

दूसरा आकाश अंतरिक्ष के तारे और तारों की आकाशगंगाएँ हैं।
"तीसरा आकाश" परमेश्वर का निवास स्थान है (2 कुरि. 12:2)।

जब यीशु ने कहा कि "आकाश और पृथ्वी टल जाएँगे, परन्तु मेरी बातें कभी न टलेंगी" (मत्ती 24:35), तो वह यह नहीं कह रहा था कि पृथ्वी का अस्तित्व समाप्त हो जाएगा, बल्कि वह यह कह रहा था कि पृथ्वी पर और पहले आकाश में सब कुछ जला दिया जाएगा और "समुद्र भी नहीं रहेगा।" पतरस इसे स्पष्ट करता है:

"आकाश बड़े शोर के साथ जाता रहेगा, और तत्व बहुत ही तप्त होकर पिघल जाएँगे, और पृथ्वी और उसके कामों का न्याय होगा" (2 पत. 3:10)।

जिस हवा में हम सांस लेते हैं वह आकाश गायब हो जाएगा या "भाग गए (गायब हो गए), और उनके लिये जगह न मिली" (प्रका. 20:11) और वहाँ "समुद्र भी न रहा" (प्रका. 21:1)) अर्थात "पहला आकाश और पहली पृथ्वी नष्ट हो गए।"

नया आकाश और पृथ्वी एक पुनर्निर्मित पृथ्वी और एक पूरी तरह से नया वातावरण होगा। इसके निवासी वे पुनर्जीवित लोग होंगे जिन्होंने परमेश्वर की दया पर भरोसा किया है और मसीह के बहुमूल्य लहू से छुटकारा पाया है। पवित्र लोगों के तीन वर्ग होंगे - बचाए गए यहूदी, अन्यजाति और कलीसिया (गला. 3:28)।
पवित्र लोगों के ये तीन अलग-अलग समूह नये आकाश और नयी पृथ्वी में हमारे प्रभु यीशु मसीह के शाश्वत राज्य में इस प्रकार बने रहेंगे:
कलीसिया नये यरूशलेम पर कब्जा कर लेगी। जब एक स्वर्गदूत ने यूहन्ना को "दुल्हन, अर्थात् मेम्ने की पत्नी" (कलीसिया) दिखाया (प्रका. 21:9) तो उसने "पवित्र नगर यरूशलेम को स्वर्ग से परमेश्वर के पास से उतरते हुए" देखा (प्रका. 21:10)। "नगर की शहरपनाह की बारह नींवें थीं, और उन पर मेम्ने के बारह प्रेरितों के बारह नाम लिखे थे" और पौलुस ने हमें बताया कि कलीसिया को "प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं की नींव" पर बनाया गया है (इफि. 2:20)।

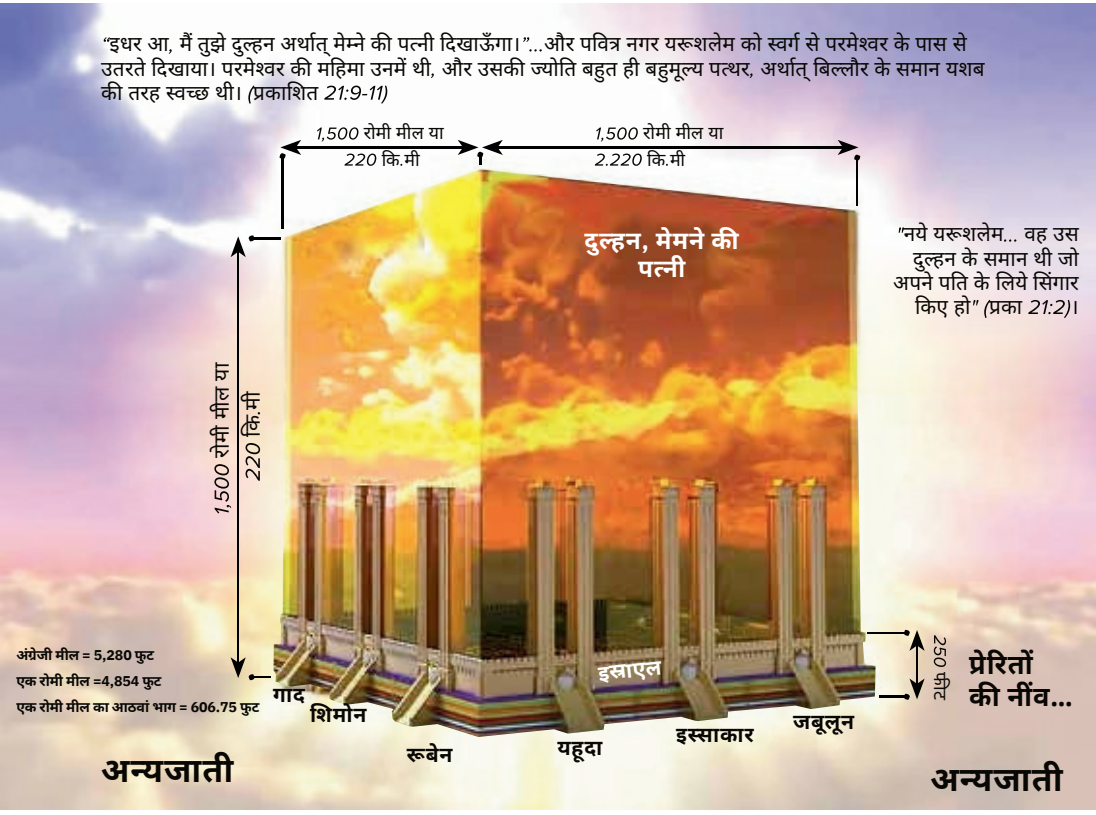

नया यरूशलेम अब स्वर्ग में है जहाँ यीशु अपनी दुल्हन के लिये एक निवास स्थान तैयार कर रहा है। एक पुरुष के लिये यह प्रथा थी कि वह अपनी पत्नी ("सगाई करना" - 2 कुरि. 11:2) से मंगनी कर लेता था, फिर अपनी दुल्हन के लिये रहने की जगह तैयार करने के लिये अपने पिता के घर जाता था। जब भविष्य का घर तैयार हो जाता, तो दूल्हा अपनी दुल्हन के लिये आता और उसे अपने उस घर में ले जाता जिसे उसने तैयार किया था। एक छोटे से समारोह के बाद, दूल्हा और दुल्हन सात दिनों के लिये उस नये घर में चले जाएँगे। सात दिन के बाद वे अपने सभी मित्रों के साथ विवाह भोज के लिये निकलेंगे।

परिवर्तन के समय हम मसीह के साथ "सगाई" में होते हैं और स्वर्गारोहण के समय वह अपनी कलीसिया को अपने पिता के घर में ले जाएगा; जिसे उसने स्वर्ग में तैयार किया है, और हम क्लेश के सात वर्षों तक उसके साथ रहेंगे। तब वह अपनी दुल्हन के साथ "विवाह से" वापस आएगा (लूका 12:36)। **विवाह भोज पृथ्वी पर होगा।**

- इस्राएल नये यरूशलेम के चारों ओर स्थित होगा और बारह द्वारों पर बारह गोत्रों के नाम अंकित किए जाएँगे, अर्थात् प्रत्येक द्वार पर एक गोत्र का नाम होगा। सम्भवतः यह इस बात की ओर संकेत करता है कि इस्राएल से छुड़ाए गए लोग या तो ऊँचे नगर के चारों ओर की दीवार के अंदर होंगे, या चारों ओर की दीवार के बाहर होंगे।

- प्रत्येक द्वार पर एक स्वर्गदूत खड़ा होगा, और वह सम्भवतः प्रवेश करने वाले सब लोगों को यह याद दिलाने के लिये खड़ा होगा कि यह इस्राएल के माध्यम से था कि परमेश्वर तक पहुँच सम्भव हुई क्योंकि यहूदा के गोत्र का सिंह, यीशु मसीह ही प्रतिज्ञा किया गया मसीह और संसार का उद्धारकर्ता था। “”
- अन्यजाति नयी पृथ्वी पर कब्जा कर लेंगे और सहस्राब्दी राज्य से छुड़ाए गए अन्यजाति राष्ट्रों के राजा नयी पुनर्निर्मित पृथ्वी पर कब्जा कर लेंगे और ***“अपने-अपने तेज का सामान उसमें लाने”*** के लिये नगर में आएँगे (प्रका. 21:24)। प्रभु यीशु राजाओं का राजा होगा, कलीसिया उनकी दुल्हन होगी, इस्राएली उसके सेवक होंगे, और अन्यजाति राष्ट्र उसकी प्रजा होंगे।

“परमेश्वर और मेम्ने का सिंहासन” (प्रका. 22:3) नये यरूशलेम में होगा और परमेश्वर छुड़ाए गए मनुष्यों के साथ निवास करेगा “और वे उसके लोग होंगे, और परमेश्वर आप उनके साथ रहेगा” (प्रका. 21:3)।

परमेश्वर के स्वर्गदूत असंख्य हैं फिर भी केवल 12 ही नये यरूशलेम में उपस्थित होते हैं, इसलिये हमें यह मान लेना चाहिए कि वे स्वर्ग पर कब्जा करना जारी रखेंगे। आश्चर्य की बात यह है कि परमेश्वर ने मनुष्यों के साथ रहने का चुनाव किया है (प्रका. 21:3) जिसे उसने अपने ही स्वरूप में बनाया है। जब प्रभु यीशु हमारा उद्धारकर्ता बनने के लिये पृथ्वी पर आया तो परमेश्वर मनुष्य रूप में प्रकट हुआ था, और परमेश्वर का पुत्र ही मेमना है, जो नये यरूशलेम में पिता के साथ सिंहासन साझा करता है।

नया यरूशलेम

अनन्त अवस्था में सब छुड़ाए गए मनुष्यों के पास मसीह के पुनरुत्थान वाले शरीर की तरह पुनरुत्थान वाले शरीर होंगे क्योंकि “पहली बातें जाती रहीं” हैं (प्रका. 21:4)। वहाँ “मृत्यु न रहेगी, और न शोक, न विलाप, न पीड़ा रहेगी” (प्रका. 21:4)।

मसीह के अनन्त राज्य में अतीत का हर अवशेष मिट जाएगा और पाप के प्रभाव का हर निशान समाप्त हो जाएगा। सब आँसू, मृत्यु, शोक, विलाप और पीड़ा केवल एक स्मृति बनकर रह जाएँगे। “फिर श्राप न होगा” (प्रका. 22:3), पाप को और पापियों को बाहर कर दिया जाएगा (प्रका. 21:8) और “उसके दास उसकी सेवा करेंगे: और वे उसका मुँह देखेंगे” (प्रका. 22:3)।

उस स्थान पर कोई भी व्यक्ति निष्क्रिय न रहेगा; नयी पृथ्वी के राजा नये यरूशलेम में आएँगे और “जाति-जाति के तेज और वैभव का सामान उसमें लाएँगे” (प्रका. 21:26)।

वह नगर महिमामय होगा। उस नगर के हर तरफ 1,500 रोमी मील (2,220 कि.मी.) लंबी एक दीवार नये यरूशलेम को घेरे हुए है; यह 250 फुट ऊँची है और इसमें 12 द्वार हैं, जिनमें से प्रत्येक पर इस्राएल के 12 गोत्रों में से एक का नाम अंकित है। प्रत्येक द्वार एक मोती से बना है (प्रका. 21:21) और यह एक निरंतर अनुस्मारक के रूप में है कि पृथ्वी पर **यहूदी, अन्यजाति और कलीसिया** (गला. 3:28; कुलु. 3:11) का भेद अनन्तकाल तक जारी रहेगा, और हम यदि हम इन विभाजनों को नहीं पहचानते हैं तो हम “सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में” नहीं ला सकते (2 तीमु. 2:15)।

अंतिम विनती

“और आत्मा, और दुल्हन दोनों कहती हैं, “आ!” और सुननेवाला भी कहे, “आ!” और जो प्यासा हो, वह आए और जो कोई चाहे वह जीवन का जल सेंत-मेंत ले” (प्रका. 22:17)।

इबल समस्त मानवजाति से **मसीह के पास आने और उद्धार का मुफ्त उपहार प्राप्त करने** की एक भावुक अपील के साथ समाप्त होती है। अनन्त जीवन एक मुफ्त उपहार है। “क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है” (रोमि. 6:23)।

हम अपने पापों के लिये अनन्त दण्ड अर्जित करते हैं और उसके पात्र हैं, परन्तु परमेश्वर ने एक बलिदान द्वारा क्रूस पर मोल लिये गए उद्धार को सदा के लिये एक स्वतंत्र और अनन्त उपहार के रूप में प्रदान किया है। यह चुनाव हमारा है।
हम अच्छे कर्मों से उद्धार प्राप्त नहीं कर सकते क्योंकि परमेश्वर को वह चाहिए जो अतीत में है, और हमारे अच्छे कर्म, कभी भी परमेश्वर के पूर्ण धार्मिक मानक को संतुष्ट नहीं कर सकते हैं। परन्तु यीशु सिद्ध था, और एक आदर्श व्यक्ति के रूप में उसने हमारे विकल्प के रूप में हमारे पापों को अपने ऊपर ले लिया और परमेश्वर के उस क्रोध को सह लिया जिसके उचित हकदार हम थे। अब वह अपनी आत्मा के द्वारा पापियों से पश्चाताप करने **और अनन्त जीवन का उपहार प्राप्त करने के लिये उसके पास आने का अनुरोध कर रहा है।**

इस बात को समझना महत्वपूर्ण है कि जो मुफ्त में अनन्त जीवन प्रदान करता है वह कोई और नहीं बल्कि परमेश्वर का पुत्र है जो पिता और पवित्र आत्मा के साथ एक ही परमेश्वर है। यीशु ने स्वयं को “अल्फा और ओमेगा, आदि और अंत, पहला और अंतिम” की उपाधि दी। उसने ऐसा तब किया जब उसने यूहन्ना से बात करना आरम्भ किया और जब उसने अपना संदेश समाप्त किया (प्रका. 1:8 और 22:13)। यह उद्धारकर्ता ही सर्वशक्तिमान परमेश्वर है जो परमेश्वरत्व में पिता और पवित्र आत्मा के बराबर है (कुलु. 2:9)। इसलिये केवल परमेश्वर ही है जो उद्धार दे सकता है। “परमेश्वर ने मसीह में होकर अपने साथ संसार का मेल मिलाप” करने का विकल्प कोई भी कलीसिया या प्रणाली नहीं हो सकती है।

क्या आपने अभी तक यह प्रस्ताव स्वीकार किया है? यदि नहीं, तो क्यों नहीं? अनन्त काल एक लंबा समय है – जो हमेशा के लिये होता है। तो परमेश्वर के इस प्रस्ताव को केवल इसलिये क्यों ठुकरा दें क्योंकि आप यहाँ कुछ वर्षों के लिये पाप का क्षणभंगुर सुख चाहते हैं। एक मसीही व्यक्ति का जीवन पापी व्यक्ति के जीवन से कहीं अधिक श्रेष्ठ होता है।

“परन्तु जितनों ने उसे ग्रहण किया, उसने उन्हें परमेश्वर के सन्तान होने का अधिकार दिया, अर्थात् उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास रखते हैं। वे न तो लहू से, न शरीर की इच्छा से, न मनुष्य की इच्छा से, परन्तु परमेश्वर से उत्पन्न हुए हैं” (यूहन्ना 1:12-13)।

समय की घड़ी

रॉबर्ट एच. स्मिथ

जीवन की घड़ी घाव है परन्तु एक बार के लिये,
और किसी भी व्यक्ति के पास इतनी शक्ति नहीं है
बस यह बताने के लिये कि इसके हाथ कहाँ रुकेंगे;
देर से या समय से पहले।
किसी व्यक्ति का सम्पत्ति खो देना वास्तव में दु:खद बात है,
तो किसी व्यक्ति का स्वास्थ्य को खो देना उससे अधिक दु:खद है;
किसी व्यक्ति का आत्मा को खो देना एक बहुत बड़ी क्षति है
जिसे कोई भी फिर से बहाल नहीं कर सकता।
केवल वर्तमान ही तो अपना है,
परमेश्वर की इच्छा पूरी करने का प्रयास करने के लिये
"आने वाले कल" पर कोई भरोसा न रखें
क्योंकि उस समय घड़ी रुक सकती है।

***

परन्तु भले ही हमारे दिन लंबे हों
और जीवन आनंद से भरा है
यीशु मसीह किसी भी समय आ सकता है
हमारी दौड़ पूरी होने से पहले।
तो क्या आप इसके डर के मारे पीछे छूट जाएँगे
कि कब क्या होगा
परमेश्वर का न्याय पृथ्वी पर आता है
दुष्ट मनुष्यों को दण्ड देने के लिये।
आप क्या करोगे यदि मसीह आ जाए
और आप पीछे छूट जाओ?
अब समय आ गया है कि प्रभु को खोजो
और उसका उद्धार ढूँढ़ो।
इस क्षण आप प्रार्थना में घुटने टिकाकर
प्रभु को पुकार सकते हो
क्योंकि वह आपको आपके पाप से बचा सकता है
उसका लहू बह गया है।
जॉन इकोब के द्वारा अतिरिक्त पद
यीशु ने कहा:
"मैं तुम से सच-सच कहता हूँ, जो मेरा वचन सुनकर मेरे भेजनेवाले पर विश्वास करता है, **अनन्त जीवन उसका है, और उस पर दण्ड की आज्ञा नहीं होती परन्तु वह मृत्यु से पार होकर जीवन में प्रवेश कर चुका है"**

सात व्यवस्थाएँ (समय का प्रशासन)

अनंत काल अतीत

नया स्वर्ग और नई पृथ्वी (प्रका 21 और 22)

कलीसिया का उत्साह (प्रका 4)

मेम्ने का विवाह भोज मसीह शासन करने के लिए वापस लौटा (प्रका 19)

बीमा सीट

आदम को बाहर कर दिया गया

बाबेल ने न्याय किया

32 ई. इसराइल बिखर गया

ईसाई जगत क्लेश में है

इसराइल पछताता है

1	2	3	4	5	6		7
मासूमियत उत्पत्ति 2-3	अंतरात्मा की आवाज उत्पत्ति 4-8	सरकार उत्पत्ति 9-11	वादा उत्पत्ति 12-50	कानून निर्गमन 1 प्रेरितों 1	कलीसिया प्रेरितों 2 प्रकाशित 3	31/2 वर्ष 31/2 वर्ष महान क्लेश के 7 वर्ष (प्रकाशित. 6 - 18)	पृथ्वी पर 1000 वर्ष का साम्राज्य प्रकाशित. 20:1-9

नूह की बाढ़

इजराइल को गुलाम बनाया

606 ईसा पूर्व

इस्राएल को अस्थायी रूप से अलग रखा गया (रोमियों 11)।

राष्ट्रों का नामीकन

उजाड़ने का निर्णय सुनाया गया

मसीह शासन

न बचाया गया न्याय

अन्यजातियों का समय

यरूशलेम को अन्यजातियों द्वारा रौंदा जाएगा (लूका 21:24)

आग की झील (प्रका 20:10-15)

अध्ययन की एक शृंखला निम्नलिखित विषयों को देखेगी

1. प्रकाशितवाक्य
2. कलीसिया की वापसी
3. सात व्यवस्थाएँ
4. इस्राएल की वाचाएँ और राज्य
5. अन्यजातियों का समय
6. रूस और इस्लाम
7. ब्रिटेन और अमेरिका

www.heraldofhope.org.au

HINDI